विज्ञापन.

श्रीमंतो धर्माचार्य धर्मशील सद्गुरुन्योनमः अहो नव्यलोको नमस्कार करो उस आदि पुरषोत्तम ऋषभ सर्वज्ञकूं की जिसने धर्म अर्थ कांम और मोक्षका रस्ता बतलाया और प्रजा सुखसे निर्वाह करसके इसवास्ते अनेक कलाकौशल पैदा करके प्रजाकूं सिखलाइ जगतमें कुंनार सुथार लुहारादिकोकी कारीगरी देखके निश्चे अनुमांन होताहे के यह विद्यासरूमें उसीने सिखलाईहे वह देहधारी और स्वयंबुद्ध ज्ञानीथा निराकार ईश्वर विद्या उपदेशक नही होसकता इय बात तो न्यायसे और प्रतक्ष प्रमांणासेंही सिद्धहे हां अलबत्तें बुद्धि तो मनुष्योकी उसमें सहाय देणेवाली जरूरहे जेसें विद्यामान अंग्रेजोने एक २ वस्तूका होता हुवा कार्य देखके रेल तार विजली आगवाणे आदि अनेक कल पेदा करली खिचमी पकती हुइ हंमीकी बाफसे ढकणी उछलतीकूं देख अग्नि और पाणी और वायूके योगसे एसी कुदरत होतीहे इतनी बातकूं विचारते बाफकूं रोकणेका ज्यादा प्रयत्न बढाया तो अनेक किस्मके कार्य इत्यानु योगसें करते चले जातेहे अगर इस बातकूं

ज्यादा सुक्ष्मबुद्धिसें विचारोगे तो इह कार्यजी उस आदि पुरपकी बनाइ शिल्पकलाउमेंहीहै जो कोइ कहेगा की तुमारे आर्यावर्त्तमें यह विद्या कब थी जूठी बातकूं हम केसें माने उत्तर हे महाशय हमारा देश सर्व विद्याका उर धनका भंडारथा देखो हमारा कोणिक असोक चंद्रराजाका चरित्र उसने उव खंडका चक्रवर्त्ति बणणेकुं दिग्विजय करणेकूं सातरत्न लोहमइ बणायेथे सो चक्र तो आकासमें स्वत चलताथा इत्यादि इस कलसे काम लेणेकी कारीगरी उस वखत कायमथी जिसकों अढाइ हजार वर्षही नयाहै गजसिंह कुमार चरित्रमे एक सुथारने एसा मोर बणायाथा कलका उसपर बेठणेसे सइकडो योजन गजसिंह कुमार फिराथा देखो वसुदेव हिंड उसमें वसुदेवजीकूं बुलाणे राजाने कलमइ हाथी बणाके भेजाथा देखणेमें हाथीकी तरे उसके पेटमें आदमी लोक बेठेथे इत्यादिक कलकी कारीगरी आर्यावर्त्तमेंथी विमानभी आकाशमे चलतेथे पद्मचरित्रमे साबितहै जबसे विद्याका पठन पाठन कमपणा सबसें बुद्धिभी मंद होते गई लडाइ दंगोमे बहोत कामिल शास्त्रभी नष्ट भ्रष्ट होगये और विद्यापमोयाडेनी

लेगये इसवांस्ते यह ग्रंथको जो मेने संग्रह क-
राहे सो च्यारोही वर्णके मनुष्योके लिये हित-
कारीहे कारण हरकिसमका काम जो ज्ञानयुक्त
बुद्धिसें विचारके करणेमें आताहे तो अंतमे उ-
सका परमार्थनी ठीक हासिल होताहे इसमे
नोकरी राज्य सेवा गुरू मातापिता आदिकोसें
वर्त्तावा रुजगार सात प्रकारकी आजिविका
व्याज वगेरे सव करके पूरा नफा करके शंसा-
रमे धनवान इज्जतदार र्डर बमा चतुर वजकर
अंतमें जीव परमपद साध सक्ताहे एसा ग्रंथ
किसीने नहीं छापाहे ज्यादा क्यातारीफ लिखूं
इस ग्रंथकूं पढके जो अमल करेगा तो निश्चे
वह मनुष्य वतोर वालरटरोके माना जायगा
यह ग्रंथ साक्षातकानून धर्मशास्त्रहे इस अर्थोके
प्रकाशक अर्हद् परमेश्वरहे जैनधर्मके कायदा
कानून कइएक नमुनेकी वानगी लोकहितार्थ
जाहिराकीहे अवलसें लेकर आखरीतक पढे
विगर तृप्तिनी न होगी गृहस्थके धर्म कायदेके
श्राद्धदिनकर आचारदिनकर विवेक विलास
श्राद्धप्रज्ञप्ती श्राद्धकौमुदी आदि अनेक ग्रंथ बमे
विस्तारके संस्कृत प्राकृत जाषामें घणे हुयेहे
लेकिन् जाषाजिलाषी पुरषोके लियेही मेरा प-

रिश्रमहे जैनधर्ममें सर्व तरेके ग्रंथ मोजूद ज्योतिषवैद्यकादिक परंतु जैनलोक उसकी खोज नही करतेहे उर जो कोइ खोज करे तो उसकूं मदत नही मिलतीहे मेने यह ग्रंथ मंबईमें उपाणे गया तव श्रीमान् सावणसुखा वीकानेर वास्तव्य सेठ जुहारमलजी समेर मलजीके मुनीम पारख माणकचंदजीने मुझे कुछ एक आश्रय दियाहे जिसके सहायसें यह मेरा परिश्रम सफल नयाहे इस ग्रंथकी किमत बहोत खरचा लगणेपरजी बहोत थोमी रख्कीहें १॥ रुपा देढ जिल्द बंधी समेत ॥ मिलणेका ठिकाणा वीकानेर राजपूताणा बमा उपासरा उपाध्याय युक्तिवारिधिः श्रीरामलालजी गणिः के शिष्य पांडेमचंद पेमचंद अमरचंद प्रकाशक विद्याशाला ॥

॥ श्री श्रावक व्यवहारालंकारः ॥

॥ श्रीऋषभजादिचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्योनमः ॥ श्रीब्राह्मण्यायैनमः ॥ अथश्रावकव्यवहारालंकार ग्रंथोयंलोकभाषयालिख्यते ॥ सर्वसंपत्करीयासा वाणीकलुषनाशिनी ऋद्धिसिद्धिप्रदानित्यं वंदेजि नमुखोद्भवं ॥ १ ॥ धर्मशीलात्मयालब्धा भवाब्ध्यो च्छेदकारणीं लोकलोकोत्तरोशुद्धिं नौमिनित्यं स- सद्गुरुं ॥२॥ व्यवहारअलंकारं श्रावकस्यसुखायवै क्रीयते ऋद्धिसारेण श्राद्धग्रंथानुसारतः ॥ ३ ॥

अब-पहले गृहस्थ श्रावक च्यार घड़ी पि- छली रात रहनेसें उठके मनमें नवकार मंत्रका जाप करता हुवा जिधरका स्वर नाकका चलता होय वोही पांव अपणे बिछोनेसें नीचे जमीनपर रखके फेर जतनके साथ निर्जीव शुद्ध जमीनपर काय चिंतासे निवृत्त होकर शुद्ध वस्त्र पहनकर सारे बदनपर हाथ फेरकर आठ पांखमीका कमल अपने नाभिचक्रमें मनसे विचारकर एक- सो आठ वेर अथवा ज्यादा मनमेंही नवकार मंत्रका जाप करे जिसमें संसार संबंधी कार्य-

सिद्धिके वास्ते ॐ ऱ्हीं एसा वीज लगाकर पांचोही परमेष्टीका जाप जपे मुक्तिके वास्ते एसाही जापजपे फेर सामायकादिक छ आवस्यक करे जिन मंदिरमें जाके विधीके साथ चैत्यवंदनादि करे इसका विस्तार चैत्यवंदनजाप्य श्राद्धदिनकरादिक ग्रंथसें जाणना फेर जतनके साथ जिनमूर्त्तिकी पूजा स्नान तिलकादिक करके द्रव्यजाव संयुक्त करे पूजाका विस्तार श्राद्धविधी पूजापंचाशकादि ग्रंथोसें जाणना फेर उपाश्रय जाके गुरुवंदन करके व्याख्यान सुणे पच्चस्काण करे गुरुवंदनकीविधि गुरुवंदनजाप्यसें जाणना पच्चस्काणका निर्णय आगारोका अर्थ पच्चखाण जाप्यसे जाणना गृहस्थकूं चाहीये पंक्ति जतीसें हमेसां धर्म सुणे उरसीखे क्यूं के विद्या एसी अमोलख कामधेनुहे सो सवतरेके मनवंछित पूरणे समर्थ हे ऊपर कहे मुजव धर्मक्रिया किया पीछे राजा अपणे राज्यसजामें जावे मंत्री अपणे सुप्रत न्यायसजाका काम देखे व्यापारीवणिक अपणे २ उद्यमका प्रयास करे धर्मकूं विरोध नही आवे इस मुजव धन पैदा करे जेसें राजा धनवानका उर गरीवका अपने खातरीवाले मान्य पुरुषका उर सामान्य प्रजा-

का उत्तमका ओर नीचका पूर्वापर जुवानकूं विचारकर कसूरदारका कसूर जाणकर मध्यस्थ नावसें इनसाफ करें ज्यादे खातरी न्यायपक्षमें नही करे इसपर एसा दृष्टांतहे कल्याण कटकपुर नगरमें बमा न्यायवान एसा यशोवर्मानामे राजा राज्य करताथा उस राजानें राज मेहेलके नीचे गरीब लोकोंकी फरियाद सुननेको न्याय घंटा बंधवाई एक समय राजाकी कुलदेवी राजाके न्यायकी परिक्षा करणेकूं तुरत जणी हुई गायका रूप धारण कर बचे समेत राज रास्तेमें बेठ गई इतनेमें राजाका लमका पूरे जोरसें घोमा दोमाता हुवा आतेके फेटमें आणेसें वछमा मारा गया तब वो गाय बमे शब्दसें पुकार करती हुई रोती २ आंसू बरसाणे लगी तब किसी आदमीने गायसें कहा इहांतो जो होणहारथा सो होगया अगर इनसाफ कराये चाहतीहे तो राजाकी न्यायघंटा बजाकर फरीयाद कर तब वह गाय उसी मुजब जायकर सींगोंसें घंटा बजाणे लगी राजा उस वखत जोजन करताथा घंटाकी अवाज सुणकर पूछा ये फरीयादी कोण हे नोकरोंने देखकर कहा एक गइया बजातीहे राजा जोजन छोमके

बाहिर आया तब गझ्यासें पूछणे लगा तुझें किसीने सतायाहे क्या वो सताणेवाला कहांहे मुझे बतला तब गऊ आगे चली राजा उनके पिछाडी चला गऊनें मराहुवा बछडा दिखलाया राजा तब लोकोंसें पूछणे लगा ये बछडेकूं जिसनें माराहे वो हमारे सामने आवे जब कोइभी आदमी हाजर नहीं भया तब राजाने नियम कीया जब कसूरवार जाहिर होगा तभी अन्न जल लूंगा राजाकूं लंघन भया तब राजाका लडका हाथ जोड हाजर हुवा कहणे लगा हे स्वामी गुनहगार में हुं इसवास्तेही चाणक्य नीतिमें लिखाहे यतः विनयं राजपुत्रेभ्यः पंडितेभ्यः सुभाषितं ॥ अनृतं द्यूतकारेभ्यः स्त्रीभ्यःशिक्षेतकैतवं ॥ १ ॥ अर्थ—विनय याने अदबका कुरब कायदा सीखणा होय तो राजोंके कुमरोंसें सीखणा वो लक्ष्मीपूत्र छोटे और बडे सबोके संग वरतावेकी नीतीसें चलतेहे कुलहीन आदमी हुकमत और पेसेके नसेमें किसीकूं कुछ नही समझतेहे काग जो सिंहासणपरभी बेठ जाय तो क्या हंसके गुण जो क्षीरनीर जुदे करणेके हे वो कब आसकताहे और सभामें बोलणेके सुभाषित सीखणा होय तो

पंमितोंसें सीखणा अनृत याने झूठ चोरी हरी-
फाइ सीखणा होय तो जुवारीसें सीखणा उस-
में ये सब अपलक्षण होते हे उर कैतव याने
कपटाइ सीखणा होय तो उरतोसें सीखणा
स्त्रीका जन्महीं मायावरूहे उस कुमरनें राजासें
सब हकीगत कह सुणाई हे पिताजी जेसा
मेरा कसूरहे वेसीही मुझे सजा होणी चाहिये
तब राजा कानूनके जांणकार स्मृतियोंके पढे
ब्राह्मणोसें राजाने पूछा तब उन ब्राह्मणोनें कहा
हे राजन् राजके योग्य तेरे ये एकही लमकाहे
इसके वास्ते क्या सजा बतलावें तब राजा
बोला हे ब्राह्मणो किसका राज किसका लमका
मेंतो सबसें ज्यादा न्यायनीतिकूं समजताहुं
उर राजाउंका यही श्रेष्ठधर्महे सोही लिखाहे
छुर्जन जो बद आदमी प्रजाकूं कष्ट देणेवाला
उसकूं दंम करणा १ सत्‌जन याने गुणवंत उर
अछी चालचलणेवाले पुरषोंकी पूजा सत्कार
करणा २ न्यायसें खजानेका धन जमाकरणा ३
पक्षपात याने तरफदारी न करणा ४ शत्रु जो
राज्यके छुसमन हे उनकूं जीतके प्रजाकी
हमेसां रक्षा करणी ५ ये राजा लोकोंकूं नित्य
करणे योग्य पंचमहायज्ञ जांणना सोमनीतिमेंनी

कहाहे राजाउंको चाहिये अपणे लस्केने कोइ कसूर कीया होय तो अपराध माफक दंम करणा इसवास्ते राजपुत्रकी कोइ खातरी नही राखकर शास्त्रोक्त दंम होय सो कहो तबजी पंमतोनें कुछनी नही वतलाया तव राजा विचारणे लगा जो जीव डुसरे जीवकूं हकनाहक डुख देवे तो जिस मुजव उस जीवने डुसरे जीवकूं कष्ट पोहचाया होवे वेसाही कष्ट उस गरीव फरीयादीके वदलेमें कसूरदारकूं देणा यही राजाउंका न्यायहे ओर किसीने उपगार कीया होय तो उसका गुण नही नूलकर उसका वदला उतारणा ये सब सत्पुरषोंका धर्म हे ओर राजाउंकों चाहीये अनाथ दीन डुखी अवोलकी ज्यादा रक्षा करे क्षत्रीलोकोकी एसी नीतिहे की जो डुसमन शस्त्र नाखके नग्न होजावे उसकूं मारे नही जो शत्रु संग्राममें नाग जावे उस नागतेकूं मारे नही जो शत्रु मूंमे घास तिणखा माल लेवे एसे पशुसंज्ञक शत्रुकूं मारे नही जिसने किसीकानी विगाम नहि कियाहे एसे निरपराधीकूंनी मारे नही जेसें राजाकी प्रजा मनुष्यहे उससें अधिक राजाकी प्रजा डुपगे ओर चोपगे वगेरह जिनावरहे इस

जांणवरोंसें प्रजाकूं अनेक तरेके फायदे उस जांनवरोंके जीवणेसे हे अपणी मोतसें मरे बादभी उनके चमडा वगेरह अनेक तरेका काम आताहे मनुष्य तो मरे बाद कुछभी काम नही आसकताहे एसें जानवर निरपराधीयोंको जो राजपुत्र अपणे स्वारथकेवास्ते मांस खाने-का लालची होकर मारे वो राजपुत्र न्याइ नही महा अन्याईहे क्योंके आदमी तो आपणा अहवाल कहकर सुणाताहे ये जांनवरोंका दुख जब राजाही नही सुणेगे ओर दया न लावेगे तो फेर इन गरीबोकों तो सब अनार्य म्लेच्छ मारतेही हे फेर इनकूं तो सरणागत जो राजा सबका रक्षक वोही मारताहे तब तो न्याय पातालमें गया पहले लिखाहे नग्न शस्त्ररहित शत्रूकूं राजा मारे नही तो सब पशु नग्न ओर शस्त्ररहितहे श्वापद सिंहादि बलीहे लेकिन शस्त्रधारी तो नहीहे लेकिन् ओर पशुओंकों मनु-ष्योंको मारताहे इसवास्ते उसका यत्न करे लेकी-न अन्यपशु निरपराधी शस्त्ररहित हे घास मूंमें झाल लेवे एसें शत्रूकूंभी राजपूत पशुजांण मारे नही तो प्रत्यक्ष घास करके पेट भरणेवाले एसे निरापराधी पशूकूं केसें मारे भागते पशुभी

मारणे योग्य नहीं कारण भागते शत्रूकूं राजपूत मारे नहीं तो भागते हुये जांनवरकूं केसें मारे केइ एक मांसाहारी अपणे स्वारथके वास्ते एसा कहतेहे पशुउंमें अविनासी आत्मा नहीं एसें कहणेवाले महामुर्ख निर्दइ ठर मांसके लालचीहे ज्यांनवरका मायना सोचेतो एसा अर्थ जाहिरा मालम देताहे ज्यांन कहते जीव वर मायने प्रधान याने अच्छा जीव तो फेर अविनासी आत्मा पशुउंकी नहीं इसबातमें क्या प्रमाणहे खून मनुष्योकेभी शस्त्र लगणेसें निकलताहे ठर खून पशुउंकेभी निकलताहे शस्त्रकी चोट लगणेसे आदमी पुकार करताहे वेसा ही जांनवर करताहे मारके भरसें मनुष्य भागताहे वेसेंही मारके भरसें पशूभी भागताहे अपणे शंतानकी रक्षा मनुष्यभी करताहे वेसेही पशुभी करतेहे मरणेपर मनुष्यभी पुत्रादिकके वियोगसें रोतेहे एसेंही पशुभी रोतेहें इत्यादिक अनेक प्रत्यक्ष प्रमाणसें मनुष्य जेसीही आत्मा पशुउंमेंहे अपणे २ कर्मोंके वश चोराशी लक्षयोनीमें जीव भटकताहे मरणा कोइभी नहीं चाहता सर्व मतोंमें वही धर्म श्रेष्टहे की जिसमें सब जीवोंकी दयाहे देखो गीता अहिंसा

परमोधर्मः फेर कृष्ण द्वैपायन व्यासने अठारोंही पुराणोका एसा सार निकालकर कहाहै यत अष्टादशपुराणेषु व्यासस्यवचनद्वयं परोपकाराय पुण्याय पापायपरपीडनं ॥ १ ॥ अर्थ–तो प्रगटहीहै तुलसीदास भक्तिमार्गवालेने कहाहै ॥

दुहा–दयाधर्मकोमूलहै नरकमूलअभिमांन॥
तुलसीदयानछोडिये जबलगघटमेंप्राण ॥१॥
तुलसीहायगरीबकी कबीननिरफलजाय ॥
मरे ढागकेचामसें लोहनसहोजाय ॥ २ ॥

मनुस्मृतिमेंभी आठ कसाइ लिखेहै जीवोंकों मारणेवाला वताणेवाला मांस लाणेवाला मांस वेचणेवाला मांस खरीदणेवाला रांधणेवाला पुरसणेवाला ओर खाणेवाला मांसका अर्थभी मनुने एसाही कीयाहै मांस अर्थात् जिसको में खाताहुं सो कहता वो जीव मुझें खायगा मांस खाणेवाला कठोर ओर क्रूर मिजाजवाला होजाताहै प्रतक्ष्य प्रमाणसें सावितहै मांस खाणेवाले जितने जांनवरहै सो सबोको देखा जावे तो सबके सब घने निर्घृण ओर कठोरहैं वेसे घास ओर नाज फल फूल खानेवाले जांनवर शुभस्वभाववाले नही ओर बने सीधे भोले होतेहै

एसाही मनुष्योंका अहवाल जांणना एसेंइ शेख सइयदनेजी फारसी जापाकी करीमा कि-ताबमें लिखाहे की ज्यांनके मारणेवालोकों खुदा गुनाह माफ नहीं करेगा इत्यादिक अनेक ग्रंथोसें साबितहे के मांस तो विगर ज्यांनवर मारे होता नही और मारणेवाला गुनहगारहे जो श्रुति स्मृती पुरान कुरानके वचन सचेहें तब तो जो हाल इन ग्रंथोमें लिखाहे सो जांनवर मारणेवालोंकों मांस नक्षीयोकों गुना-हकी सजा मिलेहीगी और ये शास्त्र वगैरह नही मांनते और एसा कहतेहे इसानर मीरा परनर किस दीठा इन लोकोंनें परभव मानने-का एक प्रत्यक्ष प्रमाण देखणा जो पापपुन्यका फल नहीहै तो आंधा लूला लंगडा कोढी निर्धन मांगेकू न मिलणा इत्यादि किस कारणसेंहै और राजा सेठ साहुकार ऐशआरामी वगैरह अनेक सुखी जीव किस कारणसें देखणेमें आते है ये प्रत्यक्ष प्रमाणसें पापपुन्यका फल जाणकर इसलिये पापस्थानक छोडनेका उद्यम करणा चा-हिये। और पराधीनतासें करणा पडे सोभी पापहै शास्त्र पापमसलता देवी धर्मही जबसे हिंदुस्थान पुर्वे एसा कहतेहै जबसें राजाओंनें दया

धर्मधार लीया तवसें सत्रुउसें संग्राम करणेकी शक्ति नही रहणेसें राज्य खो बेठतेहे ये कहणा मूर्ख मांसाहारीयोका हे राजा जरत ऋपज देवके पूत्रसें लेकर विक्रमसंवत् वारेसे तक कुमारपाल सिद्धपुरपाटण प्रमुख अगारे देशके राजातक अनेक दयाधर्मी राजा असंख्यकालसें सूर्यवंसी चंद्रवंसी इस आर्यावर्त्तादि क्षेत्रोमें राज्य कर्त्ते जये थे शत्रुउके दलके तोमणेवाले हुये परिशिष्टपर्वादिक ग्रंथोका इतिहास देखणेसें मालम होगा परम जैनदयाधर्मी चेटक राजा विशाला नगरीका शरणागत पिंजर विरुद धारणेवाला जिसका नाती अशोकचंद्र इन दोनोके लमाइमे एक क्रोम अस्सीलाख मनुष्य मारे गये राज्यनीति जवही प्रमांणहे सो अपराधीका निग्रह निरपराधीकी रक्षा करे मांस नही खाणेसें राज्य जाता हे उर खाणेसें रहताहे ये वात जूट हे मुसलमीन दिल्लीके वादस्याह राज्य क्यों खो वेठे टीपू सूलतान आदि तो मांसाहारीही थे ये तो निश्चे जांणना पृथ्वी सदा कुमारीहे अनेक पति हुये अनेक होंयगें वीरजोज्या वसूंधरा इति वचनात् फेर एसानीहे के एकसमय एसीनी आजातीहे सो सूरवी-

रोसें कुळवण, नहीं आता एकसमे कायरभी राजा वनबैठतेहे जेसें अकबरके बालपणेमे हेमचंद अग्रवाला बणिया बादस्याह दिल्लीका वनगयाथा ओर एकसमेका वो हालथा अर्जुनने महाभारत कीया एकसमे वोही अर्जुनसें कुछ नही बणपमा ॥

दुहा–समेंवमीबलवानहे पुरपनहीबलवान ॥
कावांलूंटीगोपिका वहअर्जुनवहवाण ॥ १ ॥

हमारी समजसें तो राज्य जाणेका एसा वरतावा मालम देताहे राजा प्रमादी विषयलंपट होकर अन्यायसें धन जमा करे भिक्षा मांगणेवालोंसें कर लेवे दुष्ट ओर विद्यारहित मूर्खोंकों राजकाजका अधिकार सोंपें विद्यावान अक्कलवंत बुजरक पुरषोकी सल्लाह लेकर कांम नही करणेसें ओर किसीका विश्वास करणेसें साम दाम दंड भेदसें च्यार प्रकारकी राजनीति नही जांणनेसें खजानेमें धन नहीं रहणेसें अपणे नोकरोकी कदरदानी नहि करणेसें देव गुरु धर्मकी अपमांनता करणेसें गरीबोकों सताणेमें बहोत मदिरा आदि नसेके पीणेसें इत्यादि कारण राज्य जाणेकेहें इत्यादि कारणोकों विचारकर राजानें अपने अपराधी लम्केकूं

एसा हुकम दीया तूं इस राजरस्तेमें सोजा आप वो घोमा मंगाकर अपणे चाकरोंकों हुकम दीया तुम इस घोमेपर सवार होकर दोमाता हुवा इस लमकेके ऊपरसें लेजाओ रा जाका लमका विनयवानथा रस्तेमें सोगया लेकिन् नोकरोने एसा करणा मंजूर नही करा तव राजा घोमेपर आप असवार हुवा सर्व लोकोने वहोत मना कीया तोभी राजा उस गायका इनसाफ करणे घोमेकी वाग उठाइ घोमा उठा इतनेमें राज्यकी अधिष्टाइका देवी लगामपकम फूलोंकी वरसात राजापर करी उर कहा हे राजन् में तुह्मारी न्यायबुद्धिकी परीक्षा करी प्राणसेंभी प्यारा एसे लमकेकी खातरी नही करते हुये तेनें गरीवकी फरीयादी सुणके सच्चा न्याय कीया तूं धर्मराजा हे तूं वहोत कालतक निर्विघ्नपणे राज्यकर एसें न्यायकी युक्तिपर दृष्टांत कह्या अव जो राज्यके अधिकारी कामदार वो केसा होणा चाहिये जेसें अभय-कुमार चाणाक्य प्रधानकी तरे महाबुद्धिशाली राजाका उर प्रजाका दोनोंका हित चाहणे-वाला एसा राज काज करे रुसपतखाके सचेकूं छूवा न करे जिस काममें धर्मकूं विरोध नही

वालाही मंत्री करणा ये सूरता तथा व्यवहारी शंक्षाशास्त्रकी निपुणता ऊर अन्य लोकोमें प्रायें थोमे मिलेंगें वणिक जातिकी इतनी चपलता हम मरुधर गुर्जर कच्छ पंजाबादि देशवालोकी देखीहे एक हिसाब अंग्रेजी पढे पुरुषकों करणा बतलावे वोही हिसाब एक पारसी पढेकूं करणा बतलावे ऊर वोही हिसाब माहाराष्ट्र बंगालादि देशवालोंकों करणा बतलावे वही उक्त वणिक तथा अश्वपतिसें करणा एक वख-तही बतलावे तो सबसें पहिले अश्वपतादिक महेश्वरी अग्रवाल कहेगा कुछ देरसें अंग्रेजी-वाला कहेगा बाद महाराष्ट्र बंगाल कहेगा सबके पीछेनी केवल फारसी पढा कहेगा शंका होय तो पातवाण देखें वणिक तथा अश्वपतादिकके साथही असि १ मसी २ कृषी ३ कर्म संसारमें चलताहे व्यापारी वगेर अन्य वर्णका निर्वाह ऊर संसारधर्म चलणा डुसवारहे व्यापारीतो ऊर वर्णके सारे प्रायें नही रह सकतेहे बाकी तो अपणे २ कर्मकर्त्ता नही होवे तो प्रलयका-लकी मर्यादा हो जातीहे जैनशास्त्रमें मुख्यप-णेकर च्यार संज्ञा करके प्रजाकी स्थिती बांधी हे राज्यकाजके दंमपासकोपा उग्रकुल संज्ञाहे १

आवे कहाहे के फकत राजाके घरमें फायदा करणेवाला कामदार प्रजाका दुस्मन होताहे ओर फकत प्रजाके घरमें फायदा करणेवाले मुत्सद्दीकूं राजा निकाल देताहे इसवास्ते दोनोकों फायदेवंद प्रधान मिलणा मुसकिलहे वणिकप्रधान अथवा अश्वपतिकूं मंत्री पदमें स्थापन करणा कारण अश्वपति जातीवालोकूं राजन्यवंशता होणेसें सूरवीरता प्रमुख राज्यधर्म अभ्याससें तुरत आताहे कारण बीजकी तासीर ओर सोवतका असर प्रायें रहताही हे दुसरे असपति लोकोमें वर्त्तमान समयमें प्रायें व्यापारी होणेसें व्यापारमें नफे नुकसानकूं पहलेहीसें विशेषकरके देश क्षेत्र काल भावका पूर्वापर विचारके कारण बमे विचक्षण होतेहे व्यवहारमें कोमीकानी मुलायजा नहीं करतेहे किसी कविने कहाहे वाण्यो त्रिणजन ओमसी जो स्वर्गापुर जाय लेखा करता रांमसें टक्का पेसा खाय १ इसवास्ते जिसकूं नफे नुकसानका खयाल हो मृदुभाषी शत्रुओसें सूरवीर संग्राममें नहिं हटनेवाला सर्वकला कुशल अभिमानरहित राजाका भक्त प्रजारक्षक दया धर्म सर्वज्ञ वचनकी आस्तावाला राजाके अश्वपती जाती

वालाही मंत्री करणा ये सूरता तथा व्यवहारी शंक्षाशास्त्रकी निपुणता ओर अन्य लोकोमें प्रायें थोमे मिलेंगें वणिक जातिकी इतनी चपलता हम मरुधर गुर्जर कच्छ पंजाबादि देशवालोकी देखीहे एक हिसाव अंग्रेजी पढे पुरुषकों करणा वतलावे वोही हिसाव एक पारसी पढेकूं करणा वतलावे ओर वोही हिसाव माहाराष्ट्र बंगालादि देशवालोंकों करणा वतलावे वही उक्त वणिक तथा अश्वपतिसें करणा एक वख-तही वतलावे तो सवसें पहिले अश्वपतादिक महेश्वरी अग्रवाल कहेगा कुछ देरसें अंग्रेजी-वाला कहेगा वाद महाराष्ट्र बंगाल कहेगा सवके पीछेनी केवल फारसी पढा कहेगा शंका होय तो पातवाए देखें वणिक तथा अश्वपतादिक्के साथही असि १ मसी २ कृषी ३ कर्म संसारमें चलताहे व्यापारी वगेर अन्य वर्णका निर्वाह ओर संसारधर्म चलणा इसवारहे व्यापारीतो ओर वर्णके सारे प्रायें नही रह सकतेहे वाकी तो अपणे २ कर्मकर्त्ता नही होवे तो प्रलयका-लकी मर्यादा हो जातीहे जैनशास्त्रमें मुख्यप-णेकर च्यार संज्ञा करके प्रजाकी स्थिती वांधी हे राज्यकाजके दंम्पासकोका उग्रकुल संज्ञाहे१

संसारी गृहस्थियोंके पोसस संस्कार करी गृहस्थी गुरुकी जोग कुलसंज्ञाहे २ राज्यकर्त्ता-के परवारवालोकों राजन्य कुल संज्ञाहे ३ शेष सर्व प्रजा व्यवहार शिल्प कर्मादिकर्त्ताउंकों क्षत्रिय संज्ञाहे ४ इन च्यारोंही वर्ण व्यवस्थासें वर्जित सर्व मोह कंचनकामनीके त्यागी जिक्षा जोजी वो जती साधू इन च्यारोही वर्णवालो-का संसारसे उद्धार करणेवाला गुरूहे वणिक व्यापारी लोकोकों चाहीये अच्छा शुद्ध व्यापार करणा जिससें धर्मकूं विरोध नही आसके इस बातपर श्राद्धविधीमें एसी गाथा लिखीहे ॥ गाथा ॥ ववहारसुद्धिदेसाइ विरूद्धचाय उ-चियचरणेंहिं तोकुणइ अत्थचिंतं निवाहिंतो निअं धम्मं ॥ अर्थ—याने गृहस्थ श्रावक धन पैदा करणेसंबंधी विचार करे उसमें तीन बात-पर जरूर ध्यान रखना चाहीये एक तो धन वगेरह जमा करणेका साधन जो व्यवहार उसकी निर्दोषता रखणी रूजगार करते वखत मन वचन काया सीधा रखणा कपट नही क-रणा जिस देसमे रहता होय उस देसमें गांमे लोकविरूद्ध कृत्य नही करणा तीसरे उचित जरूर करणा इन तीन बातोंका विस्तार

हम आगे करेंगे इन तीन वातोंकों दिलमें रखता हुवा धनकी चिंता करणी चोथी ये वात है अपने जो पहले अंगीकार कीयाहे व्रत नियम सो लोजके वस उनकी खंम्ना न करणी नुकसेनी हरकत नही लगणे देणा संसारमें एसी चीज थोमी होगी सो धनसें न मिल सकती होय इसवास्ते बुद्धिवान पुरुषोनें सव तरेके यतनके साथ धन जमा करणा धन चिंता करणेका हुकम आगम देता नही कारण मनुष्य-मात्रोंकि अनादि कालकी परिग्रह संज्ञासें अपने कर्मोंके प्रेरणासें जीव करताहे केवली कथित आगम एसे सावद्य व्यापारमें जीवोंकी प्रवृत्ति किसवास्ते करवावे पूर्वपरचित अनादि संज्ञासें करते हुयेकूं धर्ममें वाधा नही आवे एसी आज्ञा जिनागम देताहे लोक जितना लाखों उद्यमों सें रातदिन संसारी काम साधताहे उसके लाखमें हिस्से जो उद्यम धर्ममें करे तो तोक्या मिलणा वाकी रहे मनुष्यकी आजीविका १ व्यापार २ विद्या ३ खेती ४ गाय वकरा वगेरे पशुओंका पालणा ५ कलाकोशल ६ सेवा ७ और भिक्षा ये सात उपायसें होतीहे उसमें वणिक लोक व्यापारसें वैद्य ज्योतषी व्याक-

रणी वेदपाठी प्रमुख अपणी विद्यासें आजी-
विका करतेहें जाट कुणबी प्रमुख खेतीसें गो-
वाल धनगर राईके राठलोक गाय वगेरेके रक्ष-
णसें चितारे सुनार सुथारकूं आदि लेकर
होत लोक अपनी कारीगरीसें नोकर चाकर
वगेरह सेवासें ओर भिक्षारी लोक भिक्षासें
अपणी २ आजीविका करतेहें उसमें घी तेल
धांन कपास सूत कपडा तांबा पीतल वगेरह
धातू मोती जवाराहित रुपीया पैसा मोहर
वगेरह किरियाणेके भेदसें अनेक तरेके व्या-
पारहे तीनसे साठ भेद किरियाणेकेहे ओर
अंग्रेजी राज्यकी चीजोंभी व्यापारमें अनेक
किस्महे इसीवास्ते श्राद्धविधीकी टीकामें लिखा
है पेटेके भेद गिणना चाहे तब तो व्यापारकी
संख्याका पार नही आताहे व्याजवट्टाभी व्या-
पारमेंही गिणा जाताहे ओषध रस रसायण
चूर्ण अंजन वास्तु शकुन निमित्त सामुद्रिक
धर्म अर्थ काम ज्योतिष तर्क प्रमुख भेदसें ना-
नाप्रकारकी विद्याउंहे इनोंमे एक तो वैद्यक
[illegible] अत्तार पसारीपणा ये दोय रुजगार
होणेके कारण विशेष गुणकारी पणेके
[illegible]नवान बेमार पडे अथवा एसानी

दुसरें प्रसंगमें पसारीकूं वैद्यकूं वहोत लाभ ओर मान मिलताहे सोही बात वैद्यकमेंभी लिखताहे—रोगकाले पिता वैद्य—अर्थात् बेमारी होणेपर वैद्यबापसेंभी ज्यादा मालम देताहे रोगीका मित्र कोण वैद्य राजाका मित्र कोण हांजीहां हजूर सच फरमातेहे एसा कहणेवाले संसारके दुखसें भरे हुयेका मित्र कोण मुनिराज ओर धन खोवेठे हुये आदमीका मित्र कोण ज्योतषी व्यापारमे व्यापार गांधी याने पसारीकाही सरसहे कारण टकेमें खरीदी हुई चीज वखत पडनेपर सोटकेमें वेचताहे वैद्यकूं पसारीकूं लाभ ओर मांन वहोत मिलताहे इसवास्ते एसा कारण पाया जाताहे जिसकूं जिस रुजगारमें ज्यादे लाभ मिलताहे तो वो जीव वेसा कारण हमेसां चाहताहे सोही बात नीतीमें लिखीहे योद्धार सिपाही रणसंग्रामकी चाह रखताहे वैद्य धनवानके विमारीके आरामीकी चाह रखताहे ब्राह्मणलोक अपणे जजमानकी मरणेकी चाह रखताहे ॥

दुहा—भोजगपूछेव्याहविरतकूं नाइपूछेसूत ॥
जैनमुनिसुखशांतापूछे ब्राह्मणपूछेमुंठ ॥ १ ॥
मनमें धन जमाका जोनि केवल इच्छावाला

करतेहे दुसरे मासिक पगार राज्यसें मिलताहे उपधी वणाणी नही पन्ती पैसाभी रईसका लगताहे जो बुलावे फी देवे देसी वैद्योंको तो मूर्ख लोग बदनामीभी देदेतेहे डाक्तरोके सांमने चूं नही करते वैद्यक क्रियाके संपूर्ण शास्त्र-का जांणकार होय सो वैद्य संसारमें उत्तम गिणा जाताहे सोही लिखाहे ॥ व्याधेः तत्व परिज्ञानं वेदनायाश्चनिग्रह ॥ एतद्वैद्यस्यवैद्यत्वं नवैद्यप्रभुरायुषः ॥ १ ॥ रोगकूं जाणणा उस रोगकूं मिटाणेवाली उपधीका देणा वैद्यपणेकी इतनीही खूबीहे लेकिन् वैद्य आयु देणे समर्थ नही रोगी जबही आराम होताहे जब च्या-रोंही पायें पूरेही मिलतेहे जेसें रोगकी परि-क्षाकारक वैद्य वेसीही दवाई जो कभी पुराणी दवा चाहीये उर नई मिले नई चाहीये उर पुराणी मिले अथवा वणाणेमें कसर रहजावे तो दवा अमृतरूपभी जहिर होजाती हे तीसरा रोगीका परचारक निगेंदास्तीवाला पूरा चा-हिये कहे मुजब हिफाजत रखे चोथा रोगी वैद्यके कहे मुजब दवा लेवे उर पथ्य करे तभी दुरस्त होजाताहे इन च्यारोंमेंसे एकमेंभी क-सर होगी तो आरामी नही होगी असाध्य जब

जाणा जावे तो उपचार वैद्यकूं करणा अंगीकार-
ही न करणा कदास रोगीके स्वजन बहोत आ-
ग्रह करे तब असाध्य दशा कहणेवाला दवा
देवे तो वैद्यकूं दोष नही रोग तीन तरेसे हो-
ताहे पूर्वकृत पापके उदयसें वो दवाइसें मिट-
नेवाला नही उसका इलाज ध्यांन जप पुन्य
सुपात्रकी भक्ति प्रमुख धर्महे १ दुसरें मावापके जो
रोग होताहे सो संतानके होताहै अथवा कुष्ट आं-
ख दुखणा खाज सीतला बोदरी सुजाक फिरं-
गादिक संसर्गी होताहे इसवास्ते नलशली संस-
र्गज कहलाताहे २ इसका इलाज संसर्गजकाहे
नलशली मिटणा मुसकिलहे ३ तीसरा कायक
तथा मानसक रोगहे मिथ्या आहार मिथ्या
विहारसे वात पित्त कफादिकसें होणेवाले तेसे
काम शोक भयसे होणेवाले जिसमें साध्यका
इलाज सहज हे कष्ट साध्यका इलाज दुखें हो-
ताहे असाध्य रोग त्याज्यहे देश क्षेत्र काल
अवस्था उर अग्निबलकूं विचारे फेर अधर्मकूं
नही प्राप्त होणेवाला इलाज करे ज्योतष निम-
त्तादिक शास्त्रसें आजीविका करणेवाले पुरषकूं
यथार्थ फलही कहणा चाहीये जो फलित शा-
स्त्रमें लिखा होवे नास्तिकादिकोने अपणे क-

ढिपन शास्त्रोंमें फलादेश ग्रहोंका नही मानाहै अनेक कुयुक्तियां लगाकर फला देशकी नास्तिता सिद्ध करीहै हमने प्रत्यक्ष प्रमाणसें वेइयक ज्योतषी देखेहै सो बिगर प्रश्न कीये उन आगे पुरुषकी मनचिंता बात कहतेहै हैद्राबादमें पंचपारीका पढाहुवा ज्योतषी अलीमियांनहै इस विद्याका पठन पाठन कम होनेसें ज्योतषीयोंकी बात कमजियादहै ये जैन शास्त्रोंका नही पढा हुवा होवे तो सत्य कहना मिलताहै सूर्यप्रज्ञप्ति चंद्रप्रज्ञप्ति ज्योतिष करंडक गणित शास्त्र अंगविद्या चूडामणि प्रमुख शास्त्रोंके [illegible] भगवान महावीर सर्वज्ञ [illegible] ग्रहोंके शुभ अशुभ फल [illegible] [illegible] ग्रहोंसें [illegible] शुभाशुभ फल [illegible] [illegible] ॥ [illegible]

प्रत्ययोत्थानकारणे निदानमातृपर्य्याये प्राग्रूपं-येनलक्ष्यते ॥ १ ॥ निमित्त १ हेतु २ आयतन ३ प्रत्यय ४ उत्थान ५ कारण ६ निदान ७ ये सब पर्यायवाचक नांमहे जिसकरके होनेवाले अहवाल पहले मालम होवे उस निमित्तके इतने नांम एकार्थका कहणेवालाहे इन ग्रहोकी क्रूर दशा जब आवे तब अशुन कर्मका उदय आया एसा समझके अगारे दोसरहित तीर्थ-करकी नक्ति पूजा सुसाधूकी सेवा शील व्रत तप शुननावनायुक्त जप करे जेसा नऊवाहू स्वामीनि नवग्रह शांतिस्तोत्रमें लिखाहे उनके वर्ण जेमाही अनाथ दीन दुःखीयोकों दान करे ग्रहोके आम्नीये वणके जो पोरपन्नी निक्षा-की उगाड़ करे उनोंसें सावचेत रहे उरनी जो संसारी कार्य साधनके अनेक शास्त्रहे उसकूं सुणता उर पढता हुवा हंश जेसी तत्वबुद्धि हेय ज्ञेयपणा करे उपादेयतो सर्वथा प्रकारे आप्तका वचनरूप शास्त्रहे सोही करे नंदी सू-त्रमें लिखाहे मिथ्याश्रुत सम्यक दृष्टि वांचे तो सम्यक शास्त्र होके परिणमे उर सम्यक शास्त्र मिथ्या दृष्टी वांचे तो ॥ मिथ्यात्वमइपरणमें यदुक्तं नीती ॥ उपदेशोहिमूर्खाणां प्रकोपायन

शांतये ॥ पयपानभुजंगानां केवलंविषवर्द्धनं ॥१॥ मूर्खकूं उपदेशनिश्चे करके क्रोधकेवास्ते होय शांतिकेवास्ते नही जेसें अमृतरूप दूध सांपकूं पिलाणेसे निकेवल जहरकूंहीवधावे एसा जांणना जेनोक्त शास्त्र आचार्योंके रचे सब तरेके मोजुदहे वणे जहांतक उनकाही परिचय करे तो मिथ्यात्व नही वधे सब पुरषोंकी बुद्धि हंस जेसी नही जेसे कहाहे ॥ कुसंगासंगदोषेण काष्टवंटा विटंबना ॥ अगर सम्यकतत्व जिसकूं पहली प्राप्त होगयाहे एसोकी बुद्धि कुसंगसें अस्तव्यस्त नही होती हे जेसे कहाहे ॥ हीयोहोवेहाथ कुशंगीकेतामिलो चंदनभुजंगासाथ कालोना होयकिसनीया ॥ १ ॥ सुसाधू पंडित चतुरों की संगतही श्रेष्ट हे ॥ कहानहोयसत्संगसे देखोतिलउरतेल जातिवर्णसवमिटगयो पाशो नाम फुलेल ॥ १ ॥ अब खेती तीन तरेंकी होती हे एक तो वरसाद के जलसें होणेवाली दूसरी कूवा नदी तलाव वगेरांके जलसें तीसरी दोनोंके जलसें होणेवाली गाय भेंस ऊंट घोडा वकरी वलद हाथी वगेरे जानवरोंके पालणेसें जो आजीविकाकरणी सो पशुरक्षा वृत्ति कहलातीहे वो जानवर वहोत

तरेके होतेहे खेती उर पशुरक्षा वृत्तिसें आजीविका करणा विवेकी पुरुषोंके लायक नहीं कहाहे हाथीयोंके दांतोमें घोमोके खुरोमें राज्य लक्ष्मीहे बलदोके खंधोपर खेमूतोकी लक्ष्मीहे तरवारकी धारपर सुभटोकी लक्ष्मीहे सङ्गे उर शिणगारे हुये स्तनोंपर वैश्यायोकी लक्ष्मी रहती हे कदाम कोइ डुसरी आजिविका नहीं होय उर खेतीही करणी पमे तो वोणेका समय बराबर ध्यानमे रखणा तेसेंही पशुरक्षा वृत्ति करणी पमे तो मनमें बहोत दया रखणी कहाहे जो करषणी बीज वोणेका समय जमीनका नाग विचार किसमें केसा पाक आवे एसा विचार जाणे रस्तेके ऊपर खेत होय सो ठोम देवे तब लाभ होताहे धनके वास्ते जो पशुरक्षण करता होय तो दयाके परिणाम ठोमणा नहीं खसी करणा नाक बींधना आप जाग्रतपणे करके उविच्छेद वर्जना अब शिल्पकला सो जातकीहे कुंनार सुतार लुहार चित्रकार उर वस्त्रकार इन कारीगरोके एकेक पेटेके बीस २ नेद गिणणेसें सो होतेहे उर न्यारे २ कारीगरोकी गिणतीसें शिल्पके अनेक नेदहे आचार्यके उपदेशसें होणेवाली शिल्प कहलातीहे

मुख्य पांच शिल्प ऋषभ देवके हुकमसें चलता आयाहे आचार्यके उपदेश विगर लोक परंपरासे चलता आया खेती व्यापार सो कर्म कहलाता हे खेती व्यापार पशुरक्षावृत्ति कर्ममे गिणे गये वाकी सव कर्मादिक शिल्पमें आजातेहें पुरषोंकी स्त्रियोंकी कलाउं कितनी एक तो विद्यामें कितनी एक शिल्पमें आजातीहे कर्मोका सामान्यसें चार प्रकारहे वुद्धिसें काम करणेवाले उत्तम हाथसें काम करणेवाले मध्यम पगसे करणेवाले अधम उर सिरसें वोजा उठाके काम करणेवाले अधमसें अधम जाणना वुद्धिसें काम करणेवाले पर दृष्टांत लिखतेहें चंपा नगरीमें मदननांमे धनसेठका लमकाथा उसने वुद्धिवान आदमीसें पांचसों रुपे देकर एक वुद्धिली दोजणे लमते होय वहां खमा रहणा नही जव मित्रोने ये वात सुणी तो मस्करी करणे लगे वापनेभी उलंभा दीया तव मदन पीछा रुपे लेणेकूं शिक्षा पीछी देणेकूं गया तव वुद्धिवानने कहा तूं जो एसा कवूल करे जहां दोजणे लमते होय वहां खमा रहूंगा तो रुपे पीछा देदेताहूं उसने कवूल करी रुपे पीछे दिये एकदिन रस्तेमें दो सिपाइ आपसमे लमतेथे मदन वहां खमा रहा आ-

खिर उन दोनोनें मदनकूं गवाह बनाया उंर कहा जो मेरी गवाइ नही भरेगा तो तेरी खबर लूंगा दोनोंनें एकांतमे धमकाया मदनने वापसें कही इतनेमें तो दोनोंने फरियादकी पोलिसके अंदर मदनकूं गवा लिखाया बापने देखा छोकरेकूं ये दुष्ट मार भालेंगें घबराकर उसही बुद्धिवानके पास गये उसने कहा लाख रुपे लूंगा बचादूंगा तब सचहै मरता क्या नही करता तब वेसाही दिया उस बुद्धिवानने उसकों सिखाया तूं पागलपणा पहलेहीसे करणे लगजा एसेंही कीया करणेंसें बचगया एसाही हाल इस वखतमें बडे २ अंग्रेजी पढे हुये वाल्स्टरोका देखणे उंर सुणणेमे आताहै इसकों बुद्धिका कमाणा कहतेहै इसवजे बुद्धिवानीके मुझे अनेक दृष्टांत यादहै लिखनेसें ग्रंथ वढजायगा ज्यादे देखणा होय तो अभयकुमार रोहिक वगेरोके चरित्रसें जाणना जिसमें मति ज्ञानसंबंधी च्यार बुद्धि होतीहै सो उत्पातकी १ वैनेयकी २ कार्म्मणकी ३ पारिणामकी ४ वो आदमी वखत पड्नेपर प्रत्युत्पन्न मति होताहै आगूंके तो नालिक वचन एसें सुणनेंमें आतेहै अग्रिम बुद्धिवणिकजन पिछल बुद्धिविप्र सदा

मुख्य पांच शिल्प ऋषभ देवके हुक्मसें चलता आयाहै आचार्यके उपदेश विगर लोक परंपरासे चलता आया खेती व्यापार सो कर्म कहलाता है खेती व्यापार पशुरक्षावृत्ति कर्ममे गिणे गये वाकी सब कर्मादिक शिल्पमें आजातेहैं पुरषोंकी स्त्रियोंकी कलाउं कितनी एक तो विद्यामें कितनी एक शिल्पमें आजातीहै कर्मोका सामान्यसें चार प्रकारहै बुद्धिसें काम करणेवाले उत्तम हाथसें काम करणेवाले मध्यम पगसे करणेवाले अधम उंर सिरसें बोझा उठाके काम करणेवाले अधमसें अधम जाणना बुद्धिसें काम करणेवाले पर दृष्टांत लिखतेहैं चंपा नगरीमें मदननांमे धनसेठका लडकाथा उसने बुद्धिवान आदमीसें पांचसो रुपे देकर एक बुद्धिली दोजणे लडते होय वहां खडा रहणा नही जब मित्रोने ये वात सुणी तो मस्करी करणे लगे वापनेभी उलंभा दीया तब मदन पीछा रुपे लेणेकूं शिक्षा दीनी देणेकूं गया तब बुद्धिवानने कहा तूं जो एसा कबूल करे जहां दोजणे लडते होय वहां खडा रहूंगा तो रुपे पीछा देदेताहूं उसने कबूल करी रुपे पीछे दिये एकदिन रस्तेमें दो सिपाइ आपसमें लडतेथे मदन वहां खडा रहा आ-

जांणना बोझा उठानेवाले वगेरे लोक
कमाके खातेहे अव नोकरीनी च्यार
होतीहे १ राजाकी २ राजोंके अमलदार
ी ३ श्रेष्ठ साहुकारोंकी ४ चोथे सब
ालोकी राजाकी नोकरी रातदिनपर
भोगणी पमणेके कारण हरकिसीसे बण
मुसकिलहे सोही वतलातेहे अगर नोकर
नही तब तो गुंगा कहलाताहे जो खुल्ला
ाव देता हुवा बोलेतो बकवादी कहलावे जो
जीक वेठा रहे तो धीठा कहलाताहे जो दूर
ठा रहे तो बुद्धिहीन कहलाताहे मालक कहे
सो सब सहन करे तो कायर कहलाताहे जो
नही सहे तो कमजात कहलाताहे इसवास्ते
योगी लोकनी जिसकूं नही जाणसके एसा
वाधर्म परम गहनहे जो अपनी वढोवरीके
ते सिर नीचे झुकावे अपणी आजीविका-
प्राणनी देणे तइयार होय सुखकेवास्ते
होय नोकरी करणेवाले आदमी
ोगा पराइ नोकरी करणी सो
एसा केइयक लोक यहतेहे
कुतेकी वृत्तिसेंनी
पूंछसें खुसामंद करताहे

सुबुद्धिसे बना तुरतबुद्धि तुर्क १ लेकिन् कोइ
अपेक्षा आश्री कोइ इनोंमे किसी क्षेत्रमें होवे
ताजबनही इस वखत तो बुद्धि उर उद्यम
संप उर लक्ष्मी साहस उर धैर्य उर शौर्य
अंग्रेजोकी जितनी तारीफ करें
थोमीहे एसाहे तभी तो भारतके
वादस्याह बणे हुये विजय डंका
रहेहें अगले जमानेकें इतिहास वांचणेसें
निश्चय मालम देताहे इस आर्यावर्त्तवालोंमें
उरनें पाये जातीथी अगर फेरभी वि-
अधमसें अधमाधनकी वृद्धि होजाय तो उपर
पर दृष्टांत लिखत होणी मुसकिल नही अंगरे-
सब वोरका लरुकाथा हासिल कीयाहे सो वि-
का पठन पे रुपे देकर एक याहे पारलामिन्ट सभा
खी सब वात रहणा नेस देशमे लंदन राज-
ने जोजो काम हे मसकरी कन्या श्रेणकके राज-
बुद्धिके उद्यमसेही पीदन पीआ रुपी कौशलसना
तो आज विद्यमानमें इंगलि बुद्धिवानने नंदानामकी
मानीमेंहे येवात नइ नहीहे रा णी लगते हेन्ही बु-
से प्रधानोके गुहं उसने ६ तेसें
पुत्र नहे दो सिपाा
जात प्यारो आ-
कुमार

णेवाले जांणना वोझ उठानेवाले वगेरे लोक सिरसे कमाके खातेहे अव नोकरीनी च्यार तरेकी होतीहे १ राजाकी २ राजोंके अमलदार लोकोंकी ३ श्रेष्ठ साहुकारोंकी ४ चोथे सव जातिवालोकी राजाकी नोकरी रातदिनपर वसता जोगणी पड़णेके कारण हरकिसीसे वण आणी मुसकिलहे सोही वतलातेहे अगर नोकर वोले नहीं तव तो गुंगा कहलाताहे जो खुल्ला जवाव देता हुवा वोलेतो वकवादी कहलावे जो नजीक वेठा रहे तो धीठा कहलाताहे जो दूर वेठा रहे तो वुद्धिहीन कहलाताहे मालक कहे सो सव सहन करे तो कायर कहलाताहे जो नहीं सहे तो कमजात कहलाताहे इसवास्ते योगी लोकनी जिसकूं नहीं जाणसके एसा सेवाधर्म परम गहनहे जो अपनी वढोवरीके वास्ते सिर नीचे झुकावे अपणी आजीविका-वास्ते प्राणनी देणे तइयार होय सुखकेवास्ते दुखी होय एसे नोकरी करणेवाले आदमी जेसा कोण मूर्ख होगा पराइ नोकरी करणी सो श्वानवृत्ति जेसीहे एसा केइयक लोक कहतेहे लेकिन हम तो जाणतेहे कुत्तेकी वृत्तिसेंनी नोकरी वुरी कुत्ता तो पूंछसें खुसामंद करताहे

सुबुद्धिसे वर्गा तुरतबुद्धि तुर्क १ लेकिन कोड अपेक्षा आश्री कोड इनोंमे किसी क्षेत्रमें होवे तो ताजवनही इस वखत तो बुद्धि उर उद्यम उर संप उर लक्ष्मी साहस उर धैर्य उर शौर्य सर्व आश्री अंग्रेजोकी जितनी तारीफ करें तितनीही थोमीहे एसाहे तनी तो जारतके तीन ... खंमके वादस्याह वणे हुये विजय नंका वजा ... रहेहें अगले जमानेकें इतिहास वांचणेसें खूब ... निश्चय मालम देताहे इस आर्यावर्त्तवालोंमें ये सब वा... नें पाये जातीथी अगर फेरजी वि-द्याका पठन पा... ठनकी वृद्धि होजाय तो ऊपर लिखी सब बात ... होणी मुसकिल नही अंगरे-जोंने जोजो काम ... हासिल कीयाहे सो वि-द्याबुद्धिके उद्यमसेही पा... याहे पारलामिन्ट सना जो आज विद्यमानमे इंगलि... श देशमे लंदन राज-धानीमेहे येवात नइ नहीहे रा... जा श्रेणकके राज-गृही नगरीमेंनी पांचसे प्रधानोंकी कौशलसना जिसमें मुख्य मंत्री राजाका पुत्र ... दानामकी वैश्य जानकी राणीका अंगजात ज्यारी ... ही बु-द्धिका धरणेवाला अनय कुमारथा व्यापार. तेमें शिल्पवाले लोक हाथमें कमाणेवाले जोण... हरतरे चपगासी कामीद दोगेह पांगेस कमा...

णेवाले जांणना वोझ उठानेवाले वगेरे लोक सिरसे कमाके खातेहे अब नोकरीनी च्यार तरेकी होतीहे १ राजाकी २ राजांके अमलदार लोकोंकी ३ श्रेष्ठ साहूकारोंकी ४ चोथे सब जातिवालोकी राजाकी नोकरी रातदिनपर वसता नोगणी पमणेके कारण दूरकिसीसे वण आणी मुसकिलहे मोहो वतलातेहे अगर नोकर वोले नही तव तो गुंगा कहलाताहे जो खुल्ला जवाव देना हुवा वोलेतो वकवादी कहलावे जो नजीक वेठा रहे तो धीठा कहलाताहे जो दूर वेठा रहे तो बुद्धिहीन कहलाताहे मालक कहे सो सव सहन करे तो कायर कहलाताहे जो नही सहे तो कमजात कहलाताहे इसवास्ते योगी लोकनी जिसकूं नही जाणसके एसा सेवाधर्म परम गहनहे जो अपनी बढोवरीके वास्ते सिर नीचे झुकावे अपणी आजीविका-वास्ते प्राणनी देणे तइयार होय सुखकेवास्ते दुखी होय एसे नोकरी करणेवाले आदमी जेसा कोण मूर्ख होगा पराइ नोकरी करणी सो श्वानवृत्ति जेसीहे एसा केइयक लोक कहतेहे लेकिन हम तो जाणतेहे कुत्तेकी वृत्तिसेंनी नोकरी वुरी कुत्ता तो पूंछसें खुसामंद करताहे

और नौकर को मगर क्षमा ? कर खुसामद
करनाहै जब किसीकी [illegible] प्रगट होता
नहीं [illegible] निर्वाह तो
[illegible] श्रीमन्त तो
व्यवहार करना चाहिये [illegible] मेरी
[illegible] ॥ जब
[illegible]
[illegible] किसीकी
[illegible] सबकी
[illegible]
[illegible] आनक
[illegible]
[illegible] और नर
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
दूहा–नहीं नीच मूर्ख धन [illegible]
बलिहारी नृपकी [illegible] गुणविन [illegible]
कानकी [illegible] निपातमेंकी [illegible]
[illegible] पुरुषकी [illegible]

राजा सत्पुरषोंके माननें योग्य होताहे खराब चाल चलणके लोक कभी बुरे काम करणेकी सल्लाहभी देवे तोभी राजा मांने नही इसी-वास्ते लोकोंमें ये वातकी कहणा वटहे रावणके पास साहूकार प्रधान सल्लाह गीर नहीथा तबही तो लंकाका राज्य ठर ज्यांन खो वेठा हमारी समजसें तो इसपर इतनाही कहणा वटहे अन्याईकी जय नही होती मालककूं चाहीये नोकरके गुणके माफक उसका आदर-सत्कार करणा क्योंके अछे ठर बुरे सबोंकों एक जेसे गिणणेसें जो उद्यमी साहसीकहे उन नोकरोंका दिल खट्टा होजाताहे सुणतेहेकी महेश्वर राजाका दिवान टीपू सुलताण नोक-रोंका वडाही कदरदानथा इसवास्ते दक्षिण प्रांत देशोंका मंभ्लीक राजा वणगयाथा नोक-रोंकों चाहीये सो भक्ति ठर चतुराइमें सावचेत रहे भक्तिवान होय लेकिन् वुद्धिहीन ठर का-यर होय तो कोण कामकाहे ठर वुद्धिवान सूर-वीर नोकर होय ठर भक्त मालकका नही होय तो मालकके क्या कामका इसवास्ते ये तीनोंही गुण नोकरमें चाहीये तव राजाके संपत्कालमें ठर विपत्कालमें वो नोकरका मदद हे तीन

नहि करे उसीमोकेकी बात होय उर नही अरज करणेसें आगे विगाड होणेका कांम होय तब बहोत आजीजीसाथ बात वाकव कर देवे जेसें गुमानसिंहवेद प्रधान सुगनकुवर पारवतीजी पम्हायतकी लडकीका देहांत होणेसें बीकानेरके नृपति राठोड सिरदारसिंहजी जब दसराहेकी सवारी तथा जोजन कीया नही तब बडे शोकानुरोंको हेतुयुक्तियोसें समझाकर राज्यकार्य करवाया पीछे राजा साहिवनें उस प्रधानकी बहोत तारीफ करी अगर मुझें नही समझाता तो उर राजपूतोमें मेरी लघुताइ मालम पडती के बीकानेर महाराज पम्हायतकी संतानवास्ते दसराहा नहीं कीया कारण रामचंद्रकी दिग्विजय लोकीकमें दसराहेकी मांनतेहे तवहीसे राजालोक दसराहा करणा सरू करहे राजालोक इस दिनकूं वडा मंगलीक गिणतेहे इसीतरे अपणे मालककूं समझणा चाहीये इसीतरे राजाकी माता पाटराणी कुमर मुख्य मंत्री राजाका गुरु उर द्वारपाल इनोंके संगभी राजाकी तरेही वर्त्तावा रखणा जेसे कोइ अकलहीण एसा विचारे इस अंगारकूं मेने सिलगाइहे अथवा मेंही लायाहुं सो

मुझे ये बालेगी नही एसा समझके अग्निसे आ संगतपणा करे तो क्या अग्नि बालेविना छोडे तेसेंही विचारे मेनें इनको हिकमतसें राजदिलायाहे एसा समझके जो राजाकी अवज्ञा हुकम अदूली करेगा अंगली राजाके लगावेगा तो राजा विगर सजा दीये नही रहता इसवास्ते जेसें वो प्रसन्न रहे रूठे नही एसा चलणा किसी अदमीको राजा वहोत मानता होय तो दिलमें गर्व नही करणा कारण वहोत अहंकार विनासकर देनाहे इसपर एसा दृष्टांतहे दिल्लीके बादशाहका बडा वजीर मनमें एसा समझणे लगाके ये रासत मेरेही आधारसें चलतीहे ये गर्वकी वात उस वजीरनें किसी उमरावके सामने करी वो वात बादशाहतक पहुची बादशाहनें उसकी वजीरायत उतारकर एक मोचीके सुप्रतकरदी वो सही करणेकी जगे लोहकी बींधणी जो मोचीयोके जूते सीनेकी होतीहे उसकी करता मतलब राजा जिधर नजर करे उससेंही काम लेकर उसकूं वधा देताहे केयोकों वधाया उर वधातेहे राजाके प्रसन्न होणेसें एश्वर्य वधना कोण बडी वातहे सांढोका खेत दरियाव अपने कुटंबका

भरण पोषण जीवोंकी प्रतिपालणा ओर राजाकी महरवानी इतनी चीजें तुरत दरिद्र दूर कर देतीहे विक्रम संवत उगणीससें चोदेकी गदरमें जिनोने बमे २ अंग्रेजोंकी ज्यांन बचाइ वो अभी दलद्र त्यागके बमे २ ऋद्धिवंत वियमांनहे सुखकी चाह करणेवाले एसे अभिमानी लोक राजा वगेरोकी नोकरीकी वेलासक निंदा करो लेकिन् राजाकी नोकरी विगर स्वजनका उद्धार ओर शत्रुओंका संहार होनाही नही कुमारपाल राजा नागाथा तब वो सिर ब्राह्मणने सहाय दीयाथा जब वखत पाके पीछा राजा हुवा तब उसी वखत उस ब्राह्मणकूं लाट देशका राजा बनायाथा जित शत्रु राजाका पोलिया एक वखत राजाके सांपका उपद्रव दूर कराथा उस राजाके लमका नहीथा अंतमें उस देवराज द्वारपालकूं राज्य देकर राजाने जैन दीक्षा लेकर सिद्धिपदपाया मंत्रवी नगरसेठ सेनापती वगेरोका सब काम राजाकी नोकरीमें समा जाताहे मंत्री प्रधान वजीर प्रमुखका कांम बहोत पापमईहे ओर फलनी कम्ताहे वणे जहांतक श्रावककूं वर्जना चाहीये कह्याहे जिस अदमीके जो अधिकार सुप्रत कीया जावे ठ-

वालोंके फाके पमतेहे इसपर कबीरजुलाहेका दृष्टांतहे जेसें कबीर जुलाहा प्रायें विवहारीक झुठ कम बोलताथा पगमीवणाके बाजारमेवेचणेगया असलीदांम पांचरुपेकहे सबदिन फिरा किसीने तीन किसीनेसाढेतीन च्यारसें आगे नहीवढा पूंजीमेंनी घाटा पमे जांण वेचा नही जब मकानपर आया कबीर संग्रह नही रखताथा लाता तो खाता पूंजी काय मरखताथा दूसरे दिन उस पूंजीकाही सूतलाके वेजावणता रातकूं भूखा रहा तब किसी पमोसणीने ये बात जांण के शिक्षादी उर कहा कबीर तेने एनमोल क्यों बताया सात रुपे कहनेसें दुनियांमें मफेके संग पघमी विक जाती कबीर दुसरे दिन वेसाही कीया तब वोही पघमी उव रुपेमें दुसरे दिन विकगइ तब कबीरने घर आके एक दुहा कहा॥

दुहा–साचेजगपतियायनही झुठेजगपतीयाय॥
पांचरुपेकीपाघमी उवरुपयेविकजाय ॥१॥

इस वजेका झुठ बरतावा हमारे देसवालोनें अपणी पत गमाणे उर ये भव उर परभव बिगाम्नेकों कर रखवाहे सच्चा बोलणेका विवहार सबसें उत्तम उर बरकत करताहे इस भवमें पेठ परभवमें गुनाहसें बचणा वाजे महर

उचितहै क्योंके ज्ञांन दर्शनवाला एसा किसी जैन श्रावगका दासती रहणा श्रेष्टहै तर मिथ्यात्वपणेकरके सुर्घ एसा राजा चक्रवर्तिकीती नोकरी करणी अच्छी नही किसीती तरे निर्वाह नही होता दीखे तव सम्यक्त्वके पच्चखाणमें ॥ वित्तीकंतारेणं एसा आगार राख्याहै जिसमें वेसोकीती नोकरी करनां अपनी शक्ति तरे युक्तीसें स्वधर्मका कष्ट दूर करणा जैसे विजयपुरनगरमें विजयशेन राजा बसा मिथ्यात्वीथा उस राजाके चंद्रदत्तनांमे मंत्री बसा तिसतथा सत् गुरुके संयोगसें सर्वज्ञ कथित धर्मकी वाकब कारी होणेमें एसा जिनधर्मपर दृढ श्रद्धा होगइ सो अन्यकु देवोके वंदन पूजनका नियम कर लीया एकदिन राजासें कहा नहु ब्राह्मणनें ये बात कही तब राजा इस बातकी परिक्षा करणेंकु हुकम [illegible] दिया हे मंत्री [illegible]
नो॰ जग्गनदोच्चर [illegible] हि [illegible]
करणेंकु तुमकु [illegible]
मान उनस इच्य तु [illegible]
गजरदम सेवर हा [illegible]
, बदा तथाम्तु [illegible]
इत्यादिक [illegible]

जव करचूका तव राजाके हुकम मुजव अव उननोकरोके संग चला विष्णु गृहपर पहुंचा ठहां जाकर अंदर प्रवेश करतेही अपणेपास जो डुप्पट्टाथा सो जहां विष्णु ठर लक्ष्मी विराजमांनथे उनोंके दरवाजेपर परूदाकरके एक पहरेदारकों वाहिर वेठला दिया ठर उसको कहा अंदर कीसीको जाणे मत देणा उहांसें पूजापा योंकायों संग लेकर देवी अष्टादस भुजीके गृहपर पहुंचा वहां अंदर जाके देखतेही दरवाजे दोनो वंध करके एक पहरा नंगी तलवारका उहां बेठा दिया ठर कह्या किसीकूं अंदर मत जाणे देणा उहांसें निकलकर विनायक गजाननके गृह पहुंचा अंदर जाके देखकर सांढोकी कम्व मंगाकर मंदिरमे ढिगकर दीया उहांसे निकलकर रुद्र गृहपर पहुंचा अंदर जाके देखकर एसी स्तुतिका काव्य पढा ॥ यतः ॥ अकंठस्यकंठेकथंपुष्पमालां ॥ विनानासिकायांकथंगंधधूपं अकर्णस्यकर्णेकथंगीतनादं ॥ अपादस्य पादेकथंमेप्रणामं ॥ १ ॥ एसा स्तुति पढके आगे जैन मंदिर गया जिन मंदिरमें प्रवेश करके अंदर देखतेही पंचागप्रणामकर एसी स्तुति पढणे लगा यतः ॥ प्रशमरसनिमग्नं

निशानजी नहि मूर्तिमें मालमदीया उंर नही उनअर्हंत परमेश्वरकूं कनी किसीनें नग्न देखाथा जव राजत्यागके योग लिया तव गहनावस्त्रादिक सबका मोहत्याग दीयाथा उंर नग्न नहीं दीखतेथे उनके जीवनचरित्र सुनोगे तव हे राजेंद्र सव अज्ञानके पट खुलकर आप्त इश्वरकूं जाणोगे जिसके पास ननो राग मोहकाचिन्ह स्त्री हे उंर नद्वेषकाचिन्ह शस्त्र हे उत्कृष्ट समतारसमे मग्न प्रसन्न हे दोनुद्दष्टीजिनोंकी ध्यान धारे हुये चोरासीयोगके आसनमें मुख्य जो पद्मासनधारे हुये गर्भपुरपहीं शंशारसमुद्रके उद्धार करणेकूं नौका समान हे क्योंके जो देव आप ही कामरूप अग्निकुंडमें जलरहाहे वो अपने सेवकोकूं शांतिपद क्यादेसकताहे जो पत्थरकी नाव आपहीडुबजानीहे वोदुसरेकूं केसेंतारके पार पोहचावेगी। में आपके हुक्मसें पूजाका सामान लेकर विष्णुके घरगया आगे देखातो विष्णु अपणीस्त्रीकूं बगलमेंलियेहुवे शंशारके विषयवासनामें प्राप्तथा तव मेंने देखा कोइनी अदमी अपनी स्त्रीसें एसीकुचेष्टाकरताहोय कदाम अकस्मात किसीकी नजरपडजावेतो अदमी आंखमूंचकर पीछाजोटजाताहे क्योंकी

नीतिमें लिखाहै नलाआदमी वोहीहै जोपरा यापरूदा टके इसवास्ते हेराजेंद्र पूजनीकपुरप होके एसी कुचेष्टा कर्मोंके वसकरनेलगजावे तब मेंने परूदा टकदीया पहरा इसवास्तेविठ लाया सो डर कोइ भूलके चलाजावेगा तो इनोकी लज्या जावेगी उहांसे देवीकेगृहमें गया तो उहां एसादेखनेमें आया वोचंमी किसी अदमीका खूनकीयाथा सो उसकामस्तक खून झरता हुवा हाथमें लेरखखाथा इसवास्ते स्मृती योमेंलिखाहैकी खूनीको गिरफ्तारकरना फेरएसा हालदेखनेमेंआया एकआदमीकूं नीचापटक रक्खाथा उसआदमीका लिंग उसदेवीके नगमें लगारखखाथा उसलिंगकी जोरसे देवीकी जीन बाहिर निकलपमीथी सबहाथोमें नंगे शस्त्र लेर- खाहै चाणक्य नीतिशास्त्रमें लिखाहैकी ॥श्लोक॥

नदीनां च नखीनां च श्रृंगीणां शस्त्रपाणिनां
विश्वासो नैवकर्त्तव्य स्त्रीषु राजकुलेषु च ॥ १ ॥

इसवास्ते क्यानरोसा खुनीका उरजी किसीकूं मारराले इसवास्ते राज्यनीतिके कायदेके माफक केदकर नंगीतलवारका पहरा लगवादिया अब हजूरके दिलमें आवे सोकरे मेंतो कायदेकी कारवाइ करणेवालाहूं उहांसे आगे गजाननके

गृहमें गया तों हाथी देखा देखा मेंने विचारा इनोके लायक पूजा चरणेकेवास्ते सांठोकी करु बसे ज्यादे क्यानेटधरुं कारण लोकीककहना बटनीहे के देवजेसीही पूजा. लेकिन एकबडीही ताजबकीबाततो येदेखी के इतनामोटाहाथी जिसकेचढणेको चूहा येविचारा केसेंउठासकता होगा कोइकहेगाकी येचूहाती बलवानथा तो क्या विनायकसेंती ज्यादे बलवानथा या कम कारण प्रत्यक्षमें देखतेहे मनुष्यकूं उठानेवाले जानवर मनुष्यमें बलवानहोतेहें जब गजानन मे बलवानथा तबतो उंदरसेंती निर्बल गजानन ठहरा दूसरे हेराजेंद्र आपने कतीगणेशपुरा णती सुना होगा जिसमें विनायककी उत्पत्ति इसतरेसें लिखीहे पार्वती उमा एकदिन पीठी करके अंगउपरसें उतारकर एक मैलका पुतलावना कर उसमें ज्यांन डालदी तबवो हाथजोडकहने लगा हे माता क्या हुकमहे तबपार्वतीबोली में स्नानकरतीहुं तू पहरापरहे किसीकूं अंदरमतआने देना पार्वती नग्नहोके स्नानकरनेलगी इतनेमें सांबसदाशिव मद्यमें मस्त एसा महेश्वरआया उस-विनायकनें उसकूं रोका तब दोनोके आप समें युद्ध हुवा तब रुद्रनें त्रिशूलसें उसका सिर काट

नाला ठर अंदर चलागया पार्वती लज्जितहोकर वस्त्रसे अंग ढककर क्रोधमें आके भटककर बोली तुम एसें अचानक एकाएक केसें आगये मेने पहरा बिठलायाथा उसके रहते आप केसें आये महेश्वर बोला में उसकूं मार आया सुणतें ही पार्वती हाय २ कर रोणे लगी ठर रुद्रकूं कहा तूं मुझे मुं मत दिखला तब लाचार रुद्र हाथ जोडके बहोत अरजी ओर आजीजीसें कहणे लगा हे सुंदरी तेरा वियोग दुःखसे में महादुःखित तेरे दासके तरफ जरा कृपाकटाक्ष-कर जो अज्ञानपणेसें अपराध हुवा सो माफ कर मेंने नही जाणा के ये तेरा पुत्रहे एसा कहकर पार्वतीकूं प्रसन्न करणेकूं नाचणे लगा तब भवानी बोली मेरे पुत्रकों जीता कर नही तो तेरेसें मेरे कांम नही तब महादेव तीन लोक ढूंढ लीया लेकिन् उसके सिरका पता नही मिला तब देवीके कहणेसें किसी हाथीका कटा हुवा मस्तक लगाकर जीता कीया इति गणेशोत्पत्ति। खेर हे राजेंद्र टुक जरासी बातपर उक्त देवोके चरित्रसें आप तो बुद्धिवांनहे क्या अद्भुत कहानी पूजनीक गणेश ठर महेश्वरकीहे बग ताजव एक ठर सुणो जब पार्वतीका विवाह

हुवा धर्मकी प्राप्ति राजाकूं करदी इसी तरे जो कनी अपणा निर्वाह किसी सम्यक् दृष्टिवंत समकितीके घर थोमेमें होता दीखे तो वणे जहांतक धर्ममें हरजाणा पोहचाणेवाला मिथ्या त्वीकी नोकरी नहि करे अब भिक्षासें आजीविका किसतरे जीव करतेहें सो कहतेहें भिक्षा मांगणा गृहस्थीकूं किसीनी तरे योग्य नही लेकिन् आफत् काल वहोत बुरा होताहे सोही कवीरके लम्केने कहाहे ॥ नूखसें कामनी काम तज देतहे नूखसें पुरप तज देत नारी नूखसें व्याव ठंर यज्ञ रहजातहे नूखसे रहे कन्याकुमारी नूखसें पुरपका तेज घटजातहे नूखसे दंमीकी वुफहारी कहतकवीर कमालका बालका वेदवेदांगसे नूख न्यारी ॥ १ ॥ इसवास्ते इसके ग्म लाचारीसें भीख मांगणी किसी कारणसे लीया हे प्रथम तो इस कांमकूं श्रावक आदरेही तव ये भिक्षा सोना धातू वगेरह अनाज वस्त्र मस्यादिक चीजोकी अनेक तरेकीहे वो भिक्षुक तीन तरेकेहें उसमें सर्वसंग परिग्रहके त्यागी मुनिराजकी जो भिक्षाहे सो धर्मकेवास्ते काया रक्षणार्थहे आहार १ वस्त्र २ काष्टपात्र ३ उंपधी ४ आदि भिक्षा उचितहे मुनिराजकूं ये नि-

क्षा कल्पलतासमान संसार समुद्रसें तारणे-
वालीहे इस भिक्षुककूं देव ओर नरेंद्रभी नम-
स्कार करतेहें वाकी सब तरेकी भिक्षा लघुता
उत्पन्न करणेवालीहे सोही बतलातेहे ॥ श्लोक ॥
देहीतिवाक्यं वचनेपुनिष्टं नास्तीतिवाक्यं ततः
कनिष्टं ॥ गृहाणवाक्यं वचनेपुराजा नेच्छामि
वाक्यं राजाधिराजः ॥ १ ॥ दे एसी जुवान
वभी हलकीहे लेकिन नही एसी जुवानसें कहणा
उससेंभी हलकाहे लीजीये एसा जो कहणाहे
सो राजा वचनहे नही चाहीये एसा जो क-
हणाहे सो राजाधिराज वचनहे १ जहांतक
संसारी मनुष्य दो एसा कहे नही वहांतक
रूप लज्या गुण ओर सत्यता कुलवंतपणा ओर
मान रहा हुवाहे दुसरी चीजोमें तृण हलकाहे
रुई उस तृणसेंभी हलकीहे लेकिन याचक तो
रुईसेंभी हलकाहे तब किसीनें शंका करी के
रुईसेंभी हलकाहे तो याचककूं हवा क्यों नही
उडा लेजाती तब कहते हेमित्र पवनके दिलमें
इसवास्ते शंका पेदा भई के जोमें इसकूं ले
जाउंगा तो स्यात् मेरे पाससेंही कुछ मांगन
बेठे ओर शास्त्रोमें एसाभी लिखाहे वहोत दि-
नोतक विदेश रहणेवाला नित्त पराया अन्न

खाणेवाला नित्त परघर सोणेवाला इन तीनोका जीवनव्य वृथाहे मांगके खाणेवाले आदमीमें इतने अवगुण प्राप्त हो जातेहे याने बेफिकर हीया शून्य वहुत खाणेवाला आलसु ओर वहोत निद्रालू तेसें इ निक्षावृत्तिवालेके प्राये तो धन होताइ नही जो कदास कुछ होजाय तो वो निक्षुक उस द्रव्यका उपनोग नही ले स-कता न निक्षाके धनसें वरकतहे विद्यमांनका-लमें निक्षासें द्रव्यपात्र श्रीमाल व्राह्मन दृष्टिमें केइयक आतेहे लेकिन् ये लोक सव जन्म अपणा मांगणेमेही गमातेहे सांझतक जीमणके नोहतेकी वाट देखा करतेहे कनी नाग्ययोग निहुंता नही आवे तो व्राह्मणी नवन्यामतव-णाके पुरसें तो कहताहे आजे तो अमे विप खाधूं छे एकदिन एक श्रीमालीव्राह्मण ओर व्राह्म-णी आनंद प्रमोदमें वाते २ करते २ व्राह्मणी पूछणे लगी जोतमे नगरीना राजा थइ जाओ तो सूं सूं करो व्राह्मन बोला अमे राजा थइ जइये तो नूंतरो जमी २ ने वलि जमीये परंतु तमे नानानी मा राजानी राणी थइ जाओ तो सूं सूं करो व्राह्मणी बोली अमे राजानी राणी थइ जइये तो गोवर थापी २ ने वलि थापीये एसाही

हाल हमारे विद्यमान समयमें हुवा हे सो लिखतेहे जोधपुराधीस तखतसिंहजीके पास हरकरण नाजर जातिका श्रीमाल ब्राह्मणथा वहोत राजाके माननीय था उसने चाहाकी मेरे नायोंकी इज्जत वधाऊं हजूरसें अरज करणेपर राजा साहिबने उसके नाईकूं बुलाके सिरपाव देकर हुकम दीया जालोरगढकी हाकमीका फुरमांण पत्र लिख दीया जावे लिखदीया नीचे गढसें उतरकर जव फुरमांण पढा तव तो वडा-ही उदास होकर पीछाही हजूरमें गया अर हाथ जोरू कहणेलगा आहजूरे सूं कीधूं अमा-रो मांन तेम्यूं राख्यूं हजूर बोले क्या हुवा ब्रा-ह्मण बोला गजवनीवात अमारो पेटीयो या फुरमांणमें केम नही लख्यो राजा वगेरे सव सभासद हसणे लगे हरकरणकूं राजा साहवने कहा तेरा नाइ निर्लोभ्यहे तव अश्वपती दिवान विजेसिंघजी बोले गरीवपरवर सिंहणीका दूध जोमुलककी हाकमीये राज्यपदस्थ कोइ अश्वपति राजन्यवंसी सांभणेका पात्र होताहे ये भिक्षुक भिक्षा सिवाय इसवातकूं क्या जाणे तव हजूरने च्यार पेटीये सरू करवा दिये इस दृष्टांतकूं देखके समझ लेणाकी निकेवल पोरपद्धी भिक्षा

मांगणेवालोंकी बुद्धि केसी होतीहे श्रीहरिनद्राचार्य पांचमें अष्टकमें तीन प्रकारकी निक्षा लिखीहे सर्व शंपत्करी १ पौरपघ्नी २ उर वृत्तिनिक्षा ३ इसतरे तीन प्रकारकी निक्षा लिखीहे गुरुकी आज्ञामें रहे हुयें धर्म ध्यांन वगेरे शुन आचरणमें प्रवृत्तमांन याने जावज्जीव सर्व आरंनसें निवृत्ती प्राप्त हुये एसे यती साधूकी निक्षा सर्व शंपत्करी कहलातीहे १ अब दुसरी पोरपघ्नी निक्षा कहलातीहे सो ज्ञांन उर व्रत शुनक्रियारहित नांममात्र जती जिनोके पास शुद्ध जतीपनी नही धर्मकूं कलंक लगे एसी चाल चलणेवाले जो श्रावकका कोईनी कांम साधने लायक नही ऐसों पुरपोकी निक्षा पुरपार्थकूं नाश करणेवाली पौरपघ्नी कहलातीहे इनके नेद उरनी एसेंइ खटदर्शनी दस नांमके सामी दंमी गुसांइ योगी कवीरी दादू नानकके उदासी निर्मले गरीबदासी रूखड़ सूखड़ अनेक किस्मके नेपधारी सत्‌ज्ञांन उर क्रिया करकेहीन विपयलंपट गांजा चिलम चरस फूंकणेवाले व्यर्थ घूमणेवाले भूणीमें लाखों जीवोका घमसाण करके तपसी बजणेवाले जो लष्ट पुष्टपणे नीख मांगके खातेहे वोनी पौरपघ्नी निक्षा कह-

दुहा-रुजगारकरेतोटोटालागे गांठखायतोबीते॥
राघोचेतनयोंकहे मांगखायसोजीते ॥ १ ॥
कालकुसम्मेनांमरे बांनणवकरीऊंठ ॥
वो मांगेसवजातने वेचरजावेवूंठ ॥ २ ॥
जती २ क्या नांमगुण मतीनसोचेकोय ॥
पांचो इंद्रीवसकरे सद्याजतीसोहोय ॥३॥
सद्याजतीसोहोय विपयरतपामेपटीया ॥
करेपांनसिणगार रखेभोगणकूलटियां॥४॥
कहेरामऋद्धिसार ज्ञांनविनविगमीमत्ती ॥
खायहरामीमाल नहीवेसद्याजती ॥ ५ ॥

जंगम अरु योगी सरस रस भोगी सन्यासी समाजीवण लोकनकूं ठगेहे सिरकूं मुंमवाय मारे किसीकोनकाजसारे पेट निजभरणकाज द्वार २ भगेहे भस्मी केइयक धरे मट्टीकेइतिलककरे भूंठेकदाग्रही मिथ्यामत लगेहे ऋद्धिसारत्या-गधार सुद्धजतीगुरुसंभार एसे भेखभगतमे कुमतिपंथजगेहे ॥ १ ॥

इसवास्ते जो जो मूर्ख साधूनांम धराके साधूपणाकी क्रिया करके रहित शरीरमें पुष्ट होकर दीन होकर भीख मांग पेट भरतेहे उ-नोका पुरपार्थ नासकूं प्राप्त होजाताहे उन एसें भेखधारीयांकों चाहीये सो अपणे कुलकूं लंछन

नही लगे एसी लिखत पढत निमित्तादिक कला कौशलतांइसे अपणा निर्वाह गृहस्थके स्वारथ पोहचाके करे दरिद्री अंधा पांगला जो किसीभी तरे धंधा करणे समर्थ नही एसे जो लोक अपणे गुजरान करणेकूं भीख मांगतेहे वो वृत्तीभिक्षा कहलातीहे वृत्ति भिक्षामें बहोत दोष नहीहे कारण वो मंगत दरिद्री लोक धर्मकी हलकाई नही पैदा करतेहे मनमें दया लाकर लोक उनोकों भिक्षा देतेहे इसवास्ते धर्मी श्रावक मांगे नही भिक्षा मांगणेवाला गृहस्थ जिनाभी धर्मानुष्ठान करे लेकिन जेसें पुर्तनमें होती इणोमें लोकीकमें अवज्ञा और निंदा होतीहे एसा समजणा और जो जीव धर्मकी निंदा कराणेवाला होय उसकूं सम्यक्तपाणाभी मुसकिल होताहे जैवनिर्युक्ती सूत्रमें साधुओंका लिखाहे सर्व आपके जीवोंपर दया रखणेवाला साधूभी अगर आहार नीहार करते तथा गउचरी करते भिक्षा लेते जो जगतमी धर्मकी निंदा पैदा करे तो उसकूं बोध बीजकी प्राप्ति होणी मुसकिल होय तो भीका एसा कहणाहे विवहार नयसें के भिक्षा मांगणेसें कोइकूं लक्ष्मी तथा गुण होणा मालूम नही पडता ॥ श्लोक ॥ व्यापारैर्वर्धते लक्ष्मीः

कथंचित् सातुकर्षणे आयव्ययेनभृमेहे भिक्षायां तु कदाचन ॥ १ ॥ पूरी लक्ष्मी व्यापारमेंहें वो लक्ष्मी थोमी कर्षणमेंहे राजद्वारमें आवंद ठंर खरच दोनोंहे ठंर फेर भीखसेंती कभी लक्ष्मी होतीही नही निकेवल पेट भराइ होतीहे इसवास्ते मनुस्मृतीके चोथे अध्यायमें इसवजे आजिविका करणी लिखीहे ऋत १ अमृत २ मृत ३ प्रमृत ४ ठंर सत्यानृत ५ इतनी तरे आजिविका करणी लेकिन् नीचकी सेवा करके पेट भराइ नही करणी बजारमे विखरे हुये दाणे चुगणा सो ऋत कहलाताहे ठंर विगर मांगे जो मिले सो अमृत कहलाताहे ये अमृत भिक्षा मनूकी लिखी हुइ प्रायें जैन जतीयोंमें दिखतीहे कारण जती लोग गृहस्थके घर जातेहे तब याचना नही करतेहे गृहस्थ पात्रमें अपनी इच्छा माफक अर्पण करतेहे सचहे परमहंसवृत्तिवालेभी मांगते नहीहे सची ठंर पूरी परमहंसगतितो तीर्थंकर जिन कल्पवालोंकेंही छद्मस्थ भावमें होतीहे ठंर मांगणेसे मिले सो मृत कहलाताहे खेतीसें जो मिलताहे सो अमृत कहलाताहे ठंर व्यापारसे जो प्राप्त होवे सो सत्यानृत कहलाताहे लक्ष्मी नही तो विष्णु-

मालम कर देतीहे व्यापारके अंदर विवहारकी शुद्धि द्रव्य १ क्षेत्र २ काल ३ और भाव इन भेदोसें च्यार प्रकारकीहे जिसमें द्रव्यसें तो पनरे कर्मादानका कारण एसा किरियाणा सब तरेसें श्रावककूं छोरुणा चाहीये धर्मकूं पीरा करणेवाला और लोकमें अपयस पैदा करणेवाला एसा जो किरियाणा वहोत मुनाफा मिलता होय तोभी पुन्यार्थी पुरषोकूं गृहण नहीं करणा चाहीये तयार कीया हुवा सूत वस्त्र नगदी सोना रत्न धातू वगैरे जो निर्दोष किरियाणाहे सो विवेकी आचरे जितना व्यापारमें आरंभ पाप कम होय तेसा हमेसां चलणा कभी काल-कुसमयमें दुसरी तरे निर्वाह नहि होता दीखे तो वहोत आरंभ एसा व्यापार तेसेंही कठोर कर्मभी करे तोभी कठोर कर्म करणेकी मनमें इच्छा नहीं रखणी एसाही प्रसंग आ परे तो करणा परे तव आत्माकी साक्षी तथा गीतार्थ गुरुके सांमने उस वातकी निंदा करणी तेसेंही मनमें लज्जा रखकरकेही एसा काम करणा सिद्धांतमें भाव श्रावकके लक्षणमें कहाहे सु-श्रावक तीव्र आरंभ वर्जे उस विगर निर्वाह नही होता होय तो मनमे तीव्र आरंभकी

वो शास्त्रोमें लिखे हुये छोमणा नावसें व्यापारके वहोत भेदहे क्षत्री जातिके व्यापारी तथा राजा इनोसें थोमाली कीया व्यापारमें नफा पाणा मुसकिलहे अपणे हाथसें दीया हुवा पीछे मांगणा मुसकिल होताहे मर रखणा पमताहे जो देणेका व्यापार ममजते इनहीहे लेकिन् सरकार अंग्रेज जो कुछ साहूकारोसें लेणदेण करतेहें उसमें हरजाणा नही करतेहे अदालत व्याजकी मिगरी रुपे सइकमेसें ज्यादे नही देसकतीहे इमानदार क्षत्री तथा रइससें लेणेदेणेका विवहार उनोकी पेठप्रतिति जांणके करणा शस्त्रधारी वेश्यांनोकूं कदापि उधार नही देणा जंगल जाटन ठेमीये चोरस्तेमे साह रांघमकदिय न ठेमिये ठेमयां होय कुराह १ श्रेष्टवणिये व्यापारीकूं चाहिये सो क्षत्रिय व्यापारी तथा ब्राह्मण व्यापारी शस्त्रधारी दिवालखोरोसें उधार लेनदेन न करे फेर मांगणेसें जो वैर विरोध पीछेसें करे एसेकूं उधार नहि देणा उधार देणेसें माल खरीदकर रखनेसें वखत आणेसे निश्चे तो मुनाफाही मिलताहे कदास असली रकम वसूलायतमें तोटा जांण पमे तो तुरत वस्तु वेचदेणा चाहिये. कदास व्यापारमें

वो शास्त्रोमें लिखे हुये छोमणा नावर्से व्यापारके बहोत भेदहे क्षत्री जातिके व्यापारी तथा राजा इनोसें थोमाली कीया व्यापारमें नफा पाणा मुसकिलहे अपणे हाथसें दीया हुवा पीछे मांगणा मुसकिल होताहे मर रखणा पमताहे जो देणेका व्यापार समझते इनहीहे लेकिन् सरकार अंग्रेज जो कुछ साहूकारोसें लेणदेण करतेहें उसमें हरजाणा नही करतेहे अदालत व्याजकी भिगरी रुपे सइकमेसें ज्यादे नही देसकतीहे इमानदार क्षत्री तथा रइससें लेणदेणेका विवहार उनोकी पेठप्रतिति जांणके करणा शस्त्रधारी वेइमांनोकूं कदापि उधार नही देणा जंगल जाटन लेमीये चोरस्तेमे साह रांघमकदिय न लेम्ये लेमयां होय कुराह १ श्रेष्टवणिये व्यापारीकूं चाहिये सो क्षत्रिय व्यापारी तथा ब्राह्मण व्यापारी शस्त्रधारी दिवालखोरोसें उधार लेनदेन न करे फेर मांगणेसें जो वैर विरोध पीछेसें करे एसेकूं उधार नहि देणा उधार देणेसें माल खरीदकर रखनेसें वखत आणेसे निश्चे तो मुनाफाही मिलताहे कदास असली रकम वसूलायतमें तोटा जांण पमे तो तुरत वस्तु वेचदेणा चाहिये. कदास व्यापारमें

वो शास्त्रोमें लिखे हुये छोमणा नावसें व्यापारके वहोत नेदहे क्षत्री जातिके व्यापारी तथा राजा इनोसें थोमात्री कीया व्यापारमें नफा पाणा मुसकिलहे अपणे हाथसें दीया हुवा पीछे मांगणा मुसकिल होताहे मर रखणा पमताहे जो देणेका व्यापार समझते इनहीहे लेकिन् सरकार अंग्रेज जो कुछ साहूकारोसें लेणदेण करतेहें उसमें हरजाणा नही करतेहे अदालत व्याजकी मिगरी रुपे सइकमेसें ज्यादे नही देसकतीहे इमानदार क्षत्री तथा रइससें लेणेदेणेका विवहार उनोकी पेठप्रतिति जांणके करणा शस्त्रधारी वेइमांनोकूं कदापि उधार नही देणा जंगल जाटन छेमीये चोरस्तेमे साह रांघमकदिय न छेमिये छेम्यां होय कुराह १ श्रेष्टवणिये व्यापारीकूं चाहिये सो क्षत्रिय व्यापारी तथा ब्राह्मण व्यापारी शस्त्रधारी दिवालखोरोसें उधार लेनदेन न करे फेर मांगणेसें जो वैर विरोध पीछेसें करे एसेकूं उधार नहि देणा उधार देणेसें माल खरीदकर रखनेसें वखत आणेसे निश्चे तो मुनाफाही मिलताहे कदास असली रकम वसूलायतमें तोटा जांण पमे सो तुरत वस्तु वेचदेणा चाहिये. कदास व्यापारमें

फूसका अंत अपार गिरवीपर व्याजके रुपे ज्यादे होगये होय तो उस ऋणीकूं नोटिस देकर जताकर मुद्दत जो नोटसमें लिखे वो वीतनेपर च्यार मोतवर गवाह रखकर वेच देणा चाहीये नोटिसकी नकल पास रखणी चाहिये उधारमें जो नुकसाणी पोहचतीहै उसपर दृष्टांत कहतेहै जिन दत्तनामें एक सेठ जिसके एक वे समझ लडकाथा मुग्धयाने भोलाथा वापके प्रताप लीलालहिर करताथा अच्छे कुलकी कन्यासें उस मुग्धकी सादी करदी सेठ उस मुग्ध लडकेकूं इस तरेकी सीखदी हेबेटा सबजगे जीनकूं दांतोका पडदा रखणा १ किसीकूं व्याजवास्ते रुपे उधार देणा तो पीछी उघराइ नही करणी २ बंधनमें पडी हुइ औरतकूंही त्रास देणा ३ मीठाही भोजन करणा ४ सुखसें नींद लेणी ६ मुलक २ मे घर करणा ७ वेस्याके जाणा तो प्रभात समय जाणा ८ जुआ खेलणा तो अपणे श्रृंगारित चित्रशालीमे खेलणा ९ बासी नही खाणा ताजाही खाणा १० गायामेंही जाणा गायामेंही पीछा आणा ११ मिठाइ खाणेका व्यसन पडजाय तो हलवाइके घरपर जाके खाणा १२ दरिद्र अवस्था आ जाय तो खाड़ु और मकराणे

जहां प्रीति ओर आदर दीखे वहांही जीमणा जहां प्रीति ओर आदरहे निश्चे समझणा वोही भोजन मीठाहे ॥

दुहा—वारिवोलावणवेसणो वीनोअरुवहुमांन ॥
जीणघरपांचववानही सोघरजांणमसान॥१॥
आवनहीआदरनही नहीनयणामेनेह ॥
जिणघरकदीयनजाइये जोकंचनवरसेमेह॥२॥
आवकेरेआदरकरे दिलमेधरेसनेह ॥
तिणसज्जनघरजाइये जोपत्थरवरसेमेह ॥३॥

अथवा जव भूख लगे तव भोजन करणा सो मीठा लगताहे विगर पचे खाणेंसे रोगोत्पत्ति वैद्यक वचनहे सुखसें सोणा मतलव जिस जगे किसीनीतरे कष्टपडवकी शंका नही होय वहांही रहणा सो सुखसें नींद्रा आवे लोकीकमेंभी सात सुख कहतेहे पहली सुख निरोगी काया दुजा सुख घरमे हुय माया तीजासुख सुथानवासा चोथा सुख राजमे हूयपासा पांचमा सुख कूलवंती नारी छट्ठा सुखपुत्र आज्ञाकारी सातमा सुख धर्ममे मति शास्त्र सुक्न गुरुपंमित यती इतना मिले स्वर्गमे वास ये सातोंही पुण्यप्रकास १ अथवा जव

निद्राका समय होय तवही लेणा दिनकूं नही सोणा खासी जुखामादिक दिनके सोणेसें नींद्रा करणेमें होताहे भोजन करके भावी करवट अन्नपाचन करणेकूं विगर नींद सयन करणा ताकत वधाणेकूं चित्त सोणा ५ गांम २ में घर करणा मतलव सव देसके वसणेवाले मोतबरोसें दोस्ती करणा सो जहां कार्यविशेषे जाणा पडे तो घरकी तरे हिफाजत सव कामोंकी वणसके अथवा घर वेठेही चीजवस्तु चहींये सो आप्तद्वारा आसके ६ वेस्याके प्रभातसमय जाणा मतलव रात्रिके कीये हुवे शृंगार सो जारपुरषोके मर्द्दनसें विभंगकूं प्राप्त हुये हुये मद्यादिकके नसे उतरे हुये महाभयानक विद्रूप देखणेमें आतीहे सो पुरषका चित्त किसी प्रकार वेस्यागमन नही चाहता वलके एसा स्वरुपकूं देख एसाभी अनुभव प्राप्त होताहे अनेक जार चोर नट विट नीच पुरषोंकी संरे वित वेस्याकूं कोण कुलवंत पुरषके संग नार्यांच संसर्गज कर सकताहे निकेवल एक पेसेह कीयारीहे जिसके इण वेस्यायोनें चारुदत्त व यवन्ने सेठ जेसोकें वारे क्रोमसोनइये खाक अंतमें निकाल दिया तो फेर एसी मुतलवगार

वेस्याउके फंदेमे कोन बुद्धिमांन जाताहे ७ जुआ खेलणा तो अपणी चित्रशालीमे खेलणा मतलब जब जुआरीलोक उहां जमा होतेहें तब वो मकानकी सजा वट देख एसआरामी देख बखे अपसोस बंद होजातेहे तब नीसासे नाखणे लगजातेहे जब उनसें दुखका कारण पूछोगे तब तो एसा कहतेहें क्या कहे हमारे घरमें इससें दूनी सजा वटथी उर पांच लाख रुपेथे सब इस जुअेमें बरबाद हुवा कोइ चोगुणी उर कोइ अठगुणी कहकर अंतमें जूआ उर फाटकाही फकीर होणा साबित करेंगे तब तो एसा प्रत्यक्ष प्रमांण पाकर फेर कोन बुद्धिमांन जूआ उर फाटका करेगा इस धंदेवालेके निश्चे जद तद नुकशानहे एसे धंदेवालेकी हूंमीनी साहूकार विचारके लेतेहे एसे आदम्योंकी पतगये बाद मालसट्टे रुपे मिलणा मुसकिल होताहे सात विसनोका राजा जुआहे नल उर पांन्डव जेसें इसके प्रताप दुख पाये तो आजकलके पुरषोमें कष्ट जुअे फाट केसें परणा क्या बनी बातहे हजारों बिगडे उर एकवणे एसा धंदा बुद्धिवांन नही करे धंदा हाजर माल श्रेष्टहे फाटका इकुतका जूआहे जो करेगा फाटका

धन् जायगा गांठका थालीविके अरुवाटका घरकारहेन घाटका ए वासी नही खाणा ता- जाखाना मतलव अपने वमेरोने कुछ धनमाल जमाकर गयेहे अथवा आपकी मूलपूंजी खा- जाणा सो वासी खाणा कहलाताहे अथवा वासी अन्न रोगोत्पत्ति करताहे लालीया जीव गीले जोजो पाणीके संयोजी पकाये जाताहे उन चीजोके खाणेसें अनेक जीवोके संसर्गी हिंसासे परजवमें हिंसाके फल बुरेहे इसवास्ते धर्मशास्त्र विरुध्हे ताजा खाणा सो कमाके खाणा अथवा ऋतुपथ्य धर्मपथ्य खाणा कमाके खाणेपर चार टकेमें राजा जोजका दृष्टांत जेसें राजा जोज एकदिन किसी कारण जंगलमें गया आगे रस्ता नुलगया प्याससें व्याकूल हुवा तब वृक्षकी छांहमें घोमा बांधके बेठकर प्याससें व्याकुल पाणीकी चिंतामें लगा इतनें एक धणगर जेम बकरीयां चराणेवाला अपण एवम्लेके चला आया राजाने पाणीकी जा पूछी उसने जलका स्थांन बतलाया राजा तृप मिटाकर स्वस्थ हुवा तब राजा उसकूं अपण प्राणदाता समजके उस एवालकूं कहणेलगा मेरे पास अछी चीजहोय सो मांग उसने कह

में क्या मांगूं में भिक्षुक नहीं मेरे पुरषार्थसें कमाणेसें में च्यार टकेमें राजा नोज हूं राजा वरे आश्चर्यमें आकर एवालसें पूछणे लगा च्यार टकेमें तूं राजा नोज किस तरेसेहे सो मुझे वतला एवाल कहणेलगा देख च्यार रुपे महीना कमाता हूं रुपयाकूं किसी २ देसमें टका कहतेहे सो एक रुपयाको नाज एकमण आताहे जिससें मेरी स्त्री शंतानादिका उदर-पोषण करताहूं दूध उर घी वलीता उर केवल विछानेकी टटी ये सव एवरूसे मिलताहे एक रुपया स्त्री पुत्र पूत्री उर मेरे वस्त्र सींवाइ रंगाइ धोती वरतण खरचमें लगाताहूं पाव रुपया ति-वारवार पाव रुपया व्याह खरचका न्यारा रख-ताहूं पावरुपयामें पाहुणा मिजमांन स्वजन संवंधीयोका अलायदा रखताहूं पाव रुपया शरीरमें रोगादिकके इलाज वैद्यके वास्ते जुदा धरताहूं दो आने कुलधर्मके गुरुउंके दांन नि-मित्त अलायदे धरताहूं दो आने देव तथा मं-दिर धर्मशाला दीनदुखीयोके दांन देनेवास्ते रखताहूं वारे आणा खजानेमें जमा करताहूं इसवास्ते मेरे किसी वातकी कमी नही में क्या वातपर तेरेपाससें व्यर्थ दांन लूं तव राजा

सो देजायगा राजा आगे शहरके तरफ आया
लेकिन् वो वात राजा दममें २ याद करताहे
प्रभात होतेही आम दरवार भरके अपणे मु-
साहिव प्रधान हिसाव माल सायरके तमाम
बडे २ यहुदेदारोसें कहणेलगा च्यार टकेमें
राजा भोज लाओ सब सभा कहणेलगी क्षमा २
गरीव परवर अमोल्य रत्न जो राजा भोज
सो च्यार टकेमें केसें आवे राजा वोला इस
हक नाहक स्तुतिसें मं प्रसन्न नही होता मोलत
देताहुं सात दिनोंकी च्यार टकोंमे राजा भोज
दाखल करो नही तो सर्वस्व छीनकर सवोकों
विना कुटंव शहरसे निकालदूंगा दरवार वर-
खास्त करदिया अव वे राजाके सव मुसद्दी वडे
उदास होकर अपणी अक्कलसें सोचा सब
पंन्ति स्याणे ज्योतषीयोकूं पूछा लेकिन् ये वात
किसीनेभी नही वताई आखिरकों सात दिन
पूरे होगये राजा अपणे वादे मुजव धोती
लोटादे देकर इकेलोकूं शहरसें निकाल दीया
उर कहा जिस दिन इसी वातकूं हासिल कर
आउगे उसीदिन शहरमें आके मुझें मूं दिख-
लाणा लाचार वो फिकरवंद उसी जंगलमें जा
पहूंचे उहां सब लोक खाणा पीणा कीया

इतनेमे वो जंगली अपणी वखतपर उसी जगे
आया इनोंको देख पूछणेलगा तुम सबके सब
बडे दिलगीर उर अच्छे घराणेके दिखतेहो तब
उनोनें कहा कोइ कहणेकी वात नहीहै हमारा
संकट कोइ काटणेवाला नही दिखता तब
इसने कहा कहो तो सही काटणे जेसा होगा
तो मनाण कार सकताहै तब ये कहणेलगे
क्या तूं ये वात बडे २ अकलवंत उर पंडि-
तोंकी समझमें नही आई तो तुं जंगली क्या
हमारा दुख काटसकताहै जंगलीनें कहा मेरे
लायक होगा तो तो म कहसकताहुं इसमें
पंडित उर जंगलीकी क्या बातहै जाजे काम
एसेहै सो जंगली जाणताहै नागरिक नही
जाणते एक केवली टाल सर्वज्ञ कोणहै सबगुणके
उर सबहि बुधिवान होतेहै तब उनामेसें किसी-
ने कहा भाइ अपणां तो जो मिले उनाहीसें पूछो
कोइनकोइ बताही देगा तब बुधिमें जट बुधि
वाले कामोंमें अधिक निकलतीहै जब ठीक
देखा होताहै तब सबके सम्मुख देखणा
पडताहै तब उनोंने कहा हम सब राजा भोजके
दरबारीहै इसनें राजाने हमसें कहा क्या
टेरसें राजा बोलताहै हमने तो बहोत सयाण

करी लेकिन् किसीनेजी नही बतलाया तब राजानें निकाल दीया सो मारे आपदाके इहां आयेहे नूं कुछ जांणताहे तो बतला इतना सुनतेही जंगली बोला इस बातका क्या में बनासकताहूं उन मुत्सद्दीयोनें खूब निश्चयसें पूछा सच बतादेगा जंगली बोला सच बताउंगा निलनरका फरक नही जंगली मनमें विचारणे लगा वो सवार निश्चे राजा जोजथा लेकिन् अब राजाका जो हुकमहे वोही करणा चाही-ये तब मुत्सद्दीयभी आजीजसें पूछणेलगे बतला च्यार टकेमें राजा जोज कोणहे जंगली बोला कोठि सोइनये देउ तो राजाकूं तुमारी कही बात समझा देताहूं जब तुमारा राजा कहदेवे तब ले लेऊंगा तुम वणिक हो मुतलवी जातहो किसी कविने कहाहे ॥

दुहा–वमोपकमोवाणीयो तातोखीजेतोम ॥
जोधीरजसूंकांमले लेवेकंचमरोम ॥ १ ॥
वाण्यांथारीवांण कोइजीनरजाणेनही ॥
पांणीपीवेछाण सेंवूंधागटकाकरे ॥ २ ॥

इसवास्ते प्रतिज्ञा करो तो राजाके सांमने द्रव्य धराके फेर राजा जोज च्यार टकेमें पेस करूंगा सचहे ॥ मुतलवरी मनुहारने तजी मावे

जाणा मतलब पहले पहरमे धर्मकृत्य करके व्याख्यान सुणके दांन देकर फेर भोजनकर दुकानपर जाणा गुमास्तोके कांमकी तदारक करणी खरच आवंदका आंकडा साफकरखवाणा उधार किसी साहूकारमें होय तो वादे मुजब मंगा लेणा नोकरोको नोकरी मुजब इनाम इकराम आंकडा वधणेपर देणा फेर दाया ढले जब घरपर आणा जो मालक अपणे घरका अव नहीं देखता सिरप गुमास्तोके नरोसे ये सब मुत्सद्दीवर्गका घर विगड जाताहे केइ च्यार टकेमें राजहे ११ मीठाई खानेका विसन कोटि सोइनये हेलवाईके घरपर जाके खाणा वात समझा देतवाईके घरपर प्रांणी जाताहे तब ले लेउंगा तुं उसकी मिठाइ खाणेकूं जी किसी कविने कहसीमें तो हजारों मखीयां मरी दुहा–वमोपकाकोमे उर चिमटीयां मरी हुइ जोनर गिलेरी आदि अनेक जीवोके नणवूणके मिठाइ वणाताहे न पाणीकूं ताहे नवरतणोकी शुद्धिहे पोंठणें उर गा-.के वस्त्रनी महाअशुद्ध उर मलीन रहतेहे उर ते ठोकरोके दिसा फराकतके हाथजी ज्यों ज्यों योंही लगा देतीहे ठोकरे योंही मृततेहे

उसी रात्रमें जल पीलेनेहे उसीसें मिठाइ काम देतीहे तो उस अपणी आंखोंसे देखता हुवा [illegible] धर्मी वो मिठाइ बजारु केसें खास-करताहे जिसके घरमें ये सब शुद्धियां होय [illegible] धर्मवाले हलवाई होय तो निजरसे तपा-[illegible] आणमें फोड हरजाना नही [illegible] रात्रमें साये हलवाईका काम क-[illegible] ब्राह्मनादिकनी मांस नखीहे इसवास्ते [illegible] इच्छा होय तो विवेकीके हाथसें [illegible] अपणे घरमेंही रावणा अनुपथ्य ओर [illegible] पहचानकर इहां जो मिठाइ [illegible] जाके खाणा कहाहे सो सिरप [illegible] देखणेकाही सूचना करताहे विवेकी पुर-षोंकों [illegible] साधर्मीवाल ओर स्वजन मित्र-[illegible] दूसरेके घर विनाकारण [illegible] नहि करे १२ दरिद्र अवस्था आ जाय तो स्वादु ओर मकराणेके चीनकी [illegible] अनमें गुलकों बनाताहूं देखके चलणा इस सिखाके माफक चलणा तेरे घरमें [illegible] स्वादुका पथर ओर मकराणेका प-थरका [illegible] दुगतकारी [illegible] नहीहे सो निकाल लेकर [illegible]

कारण नर्हर राजा लिखताहे ॥ श्लोक ॥ यस्यास्तिवित्तं सनरःकुलीनः सपंन्दितः सश्रुतः वान्गुणज्ञः सएववक्तासचदर्शनीयः सर्वेगुणाःकांचनमाश्रयंते १ मायकहे मेरापूतसपूता बहन कहेमेराजड्या घरकीजोरूलेतवलइया सबसे बमारुपइया १ श्लोकका अर्थ जिसकेपास धन हे वो अदमी कुलवान कहलाताहे वोही पंन्दित हे वोही गुणोका जांणनेवालाहे वही कहणेवाला वही देखणे योग्यहे इसवास्ते सब गुण कांचनके आश्रयमें रहतेहे १

दुहा–धंताजोऊनराखीये जाकोनांमगरत्थ ॥

जिणदेख्यांनूपतिमिगे तरुणीपसारेहत्थ १

इसवास्ते हे विवेकी गृहस्थ धर्ममें धनकीही प्रधानताहे ये जन्मका सुधारणा तो प्रत्यक्षही दिखताहे लेकिन् विवेकी इस लक्ष्मीसें परजन्मी सुधार सकताहे जेसें सुपात्रोकी भक्ति अन्न वस्त्र पात्र उपधि विद्याशाला दांनशाला पुस्तकालय पिंजरापोल जिन मंदिर पूजा साधर्मी वात्सल्य रथयात्रा तीर्थयात्रादि अनेक सुकृतार्थ धनसें संचकर चक्रवर्ति स्वर्ग तीर्थकरादिक पदका आयु बांधताहे एसी शिक्षा देकर विदा किया उस शिक्षामें चलता हुवा वो मुग्ध सब

विचारमेंही रहे आखिरकों निन्नायही दिया पुरषोंकों चाहीये अपणी करी प्रतिज्ञा एसी निनावे किसी राजपूतके घरके अंदर नींमका दरख तथा उसके नीचे वो राजपूत जब वेठता तब एक कउआ उसपर बींटकर देता वो धनुषबांण मंगाता वो काग देखतेही उडजाता एक दिन उसने अपणी कन्यासें कहा में जब समसेरलाकहूं तब तीरकबांण लादेणा इसीवजे कउअेनें बींटकी संकेत मुजब राजपूत वोला समसेरला कउअेने विचारा समसेरसें तो में मरता नहीं निंचित वेठरहा जो बांणलगा त्योंही राजपूत वोला अरे दुष्ट अब तो मरा तब पम्ने २ कउआ वोला ॥

दुहा–वचनपलट्टासोमरा कागामरामजाण ॥
नांमलियासमसेरका लाईतीरकबांण॥१॥

सो जुवान कहके पलटणेवाला मराहुआही है जब अपणेसे पार नहीं पमे तो एसा वोझ उठाणाही नहीं कदास कोइ कारण योगसें रुपे वादेपर नहीं पोहचसके तो किस्त करकेभी करजा उतार देणा एसा नही करे तो फेर पत जाते रहवीहै जहांतक वणे करजदार होणाही नहीं कारण सुणणा आवाज देणा

व्याज फेर नुकना अंर नमाज नीतिमें लिखाहे धर्मका काम १ करजा उतारणा २ कन्यादान ३ धन जमा करणा ४ अंर डुस्मनका उच्छेद ५ अग्निका उपद्रव ६ अंर रोग ७ इतने काम वणे जहांतक जलदी करणा तेलका मालिस १ वेटीका मरण अंर ऋणका उतारणा ये वात पहली डुख देकर पीछे सुखदाई होतीहे जो अपणी पेट नराईजी नही वणसकती होय जिस्सें करज नही चुकासके तो साहूकारकी नोकरी कर अदाकर देणा चाहीये जो एसा नही करसकेगा तो आवते नवमें ऊंठ वलद पाना गधा खच्चर घोमा वगेरह होकर वोजं उठाके २ नी करजा तो देणाही होगा जो देणे समर्थ नही होय एसोसें करज मांगणानी नहि चाहीये नाहक संक्लेस पर जीवकूं पीमारूप पापकी वढोतरी होतीहे नादारकूं कहणा तूं नही देसकताहे उसवास्ते ये मेरा द्रव्य धर्मखाते मेंनें कीया देशकेगा तो जरूर धर्मादिकार्यमें लगादूंगा जो धन होये वादनी करजदारकूं नही चुकाताहे तो वो जीव आगले जन्ममें उसके संग वेर विरोध युद्धादिकमें हारतेइ रहताहे इस नवमें लमाइ वैर विरोधकीनी वढो-

तरीही होतीहै व्यापार करतां धननही उधारमें आवे तो अपणें मनमें धर्मखाते करणा इसवास्ते विवेकीकूं चाहीये सो साधर्मीके साथही व्यापार करणा म्लेच्छ अनार्योंकी उधार नही आवे तो धर्मखाते गिणनेका रस्ता जैनागममें नहीहै इसवास्ते उसपरसें ममता उतारकर निकेवल मनसें त्यागही करणा उर त्याग कीया पीछे कदास देदेवे तो धर्मवास्ते श्रीसंघकूं सोंप देणा तैसेंइ द्रव्य अथवा शस्त्र आयुध वगेरे कोइ चीज खोइ जाय तो उर पीछा आणेका संभव नही होवे तो उसकानी त्याग करणा वो सिराय देणा कदास जो नवो सरावे उर चुराणेवाला चोर अथवा दुसरा जिसकूं मिले सो उस चीजसें पापकर्म करे तो गृहस्थभी पापका भागी होय त्यागसे न होय इतना लाभहै विवेकी पुरष पापके अनुबंधकारी अनादिरूप शरीर घर कुटंब द्रव्य शस्त्र वगेरे चीजोंका अंतमें त्याग करणा नही करे तो उन चीजोंसें होती हुई पापक्रियासें भवोभव बुरे फल भोगणे पमे इस बातकी साक्षी श्रीभगवती सूत्रमेंहै पांचमें शतक छट्टे उद्देशेमें सिकारीने हिरण मारा तब जिस धनुषसें १ बांणसे २ धनुषकी

सेठके व्याजमें चूना पीसताहूं लेकिन् रुपया उतरणा मुसकिल होगया तब वेलने पूछा कोइ उपायनीहे तेंमा बोला अगर हजार रुपेकी सग्न लगाकर राजाके हाथीसें मुझे लमावे तो जरूर मेरे सामने हाथी नाग जायगा में तो सेठकूं समझा नहीं सकता जो कोइ सेठकूं समझा देवे तो में ऋणमुक्त होकर मरजाउंगा ये बात राजपुत्र सकुनरुत शास्त्रका जाणका था सो सब समझगया के इन दोनो जीवोंको जातीस्मरण ज्ञान होगयाहे उसने सुनारसें कही मित्र देणा सो परभवमेंभी छूटना नहीं जिसपर बोला उसके परभव किसनेंदेखाहे इस लोकका हालहे सुनारने ये बात मानी नहीं इन-मेंसे मित्र आया तब बोला होनाहुवे सो काम आगे होवे आगे करो तब राजपुत्र मित्रका पणेसें सब बात कह सुणाइ कारण राजपुत्र आपे तो ख्यानदानी होतेहे सो आर्य होतेहे किसीकी संगत और सोबतसें बेवाराक करोर दुर क्रूर कर्म कर सकते नहीं तो जैनधर्ममें राजपुत्र कहते सबमें उत्तम लिखाहे सबका फल देख-कर ऐसा अज्ञानी नीच लिखा होगा जो इ-मानदारी और मित्र इस बातकी परिक्षा करोंहे

तीन दिन विताया कहे मुजब वैल मरगया तब सेठ उस राजपूतकूं संग लेकर राजाकेपास जाकर नजर नोछावरकर राजाके हुकम मुजब वैठगया राजाने कुशल क्षेमकी बात पूछीउर बोला सेठ बहोत दिनोंसें आये कुछ कार्य होय सो कहो तब सेठ बोला गरीब परवर नोकरी करके मालककी वंदगी वजाकर हक्क खाणेवाला मेरा चूना पीसणेवाला जेसा भेसा ताकतदारहे जेसा हजुरका माल मलीदा चरणेवाला वृथा पुष्ट पाट हाथीमें ताकत नही अगर लस्तके मुकाबलेमें दोनोंकों दंगलमें भिडाये जाय तो आपका हस्ती भाग छूटे राजा हसकर बोला क्या सेठ भंग खाईहे ये वात किसीके समझमें कब आसकतीहे सेठ बोला न मांने तो हाथोतालीका परचा देख लीजीये तब राजा बोला कुछ सरत करोगे सेठ बोला हजार रुपेकी मुकरर ठहराकर दोनोकों लाये भेसेंकूं देखतेही हाथी भाग गया तीन वखत लाये लेकिन हाथी तो तीनही वेर भागगया सेठकूं हजार रुपे दियेगये उर पाडा मरगया राजा बोला हाथीसें धेसत खाके भेंसा मरगया तब सेठने उस राजपूतसें सब वात राजासें कहलाइ राजा

बोला सचहे में इस मोदीके हजार रुपे मोदी
खाणेके देणाथा देणा किसीतरे नही छूटता
इस दृष्टांतमें तेल पाकेकी जो वात करणी लि-
खीहे सो पंचाख्यान शास्त्र मुजबही दृष्टांत
जाणना उपदेशरूपहे वात करणी सर्वथा अ-
संभवहे मुसलमीनोके धर्मकायदेमें व्याज खा-
णा मनालिखाहे लेकिन् हमारी समझ मुजब
तो हम प्रतक्ष प्रमांण देकर कहतेहे व्याज वि-
गर संसारका विवहार और राज्यधर्म दोनोंना-
स होजाताहे जिस [illegible] उसीमें ताकतेशरते
दृष्टांत लिखताहुं [illegible] मुसलमीनी [illegible]ोंकों दंगलमें
शूरवीर जयसिंह राजाके परनव नि[illegible] नाग छूटे राजा
पुत्र वडे हुसियार रहने ये वात मा. खाईहे ये अ-
दुसरेका नाम भोकलसिंह लोनाड हे सेठ वोकों
दो पंडिताकों पढनेका [illegible] राज[illegible] देख मुल्ली
पढे मोलवीयांकों और दुसरेको शास्त्री पढे पं-
डितोंकों दोनों पढके इसनिवान नाम हुये राम-
सिंहकी बुद्धि हमेश धर्मपर रहर। भोकलकी
कुरानपर रहरी। जव राजाने विचार कीया न-
वके कोर घरमें अगर तेल खाला जावे तो तेल
निकलती जावे तो ठीकर। निकलाग नहीं। तो-
स्तीहे घी खावनेमें घीका तो इस भोकलसिं-

हकें दिलमें जो कुरान मजहबका धर्मकायदा वैठगयाहे सो इह व्यापारनीति तथा राजनीतिकूं वाधा पोहचाकर सिरफ इतना जालमपणा जरूर यह जांनताहे जो हजरत महम्मदका हुकम नही माने उसकुफरकूं कतल करणा इसवास्ते एसी अक्कलवाला अपणी प्रजाकूं अपणी हितकारणी केसें वणाकर केसें वादस्याही करसकताहे कारण इस भरतक्षेत्रमें तरे २ के फिरकेहे उनोमें अपणी २ मताध्यक्षकी वात सव मांनतेहे सिद्धांत मत तो एकहे मे धोंकलसिंह जाणता नही एकदिन राजा राजा।सिंहकों वुलाके कहा तुमारे हाथ खरचवास्ते में ७ हजार रुपेका आवंदका खरचा नेकालदेताहूं ये लाख रुपे तुमलो इसके आव आनीके व्याजसें ७ब हजार सालीयाना होगा तव मनमें तो कसमसाया लेकिन् वापकी वे अदवी नहि करणी तव वोला हजूर कल हजूरकी खिदमतमें उस्ताद मौलवीसाहवकूं नेजताहूं जो फरमावे सो उनहीसें फरमां देवे राजा समझ गया लेकिन् वोला अच्छा दुसरे दिन मोल वीसाहव आकर कहणेलगे गरीव परवर आपने ये वडे आजावकी वात माहाराज

कुमारकों क्या फरमाई सूतका खाणा हरामहे एसाही हेनो हजूर दश हजार सालीआनेका गांम माहाराज कुमारकों देदिये जावे तब हजूरनें विचारा इस मोलवी तथा धोंकलसिंहकूं अक्कल आजावे एसा विचारके राजा बोला मोलवीसाहब में दोनों लडकोंकों मुलक वगेरे आधा २ देकर तीर्थोंकूं जाताहूं देखताहूं च्यार वरसमे रासतका कांम केसें चलानेहे एसा कहकर स चीजे आधो आध बांटदिया उर कहा दे अपणे २ पंम्ति उर पढे हुये शास्त्रोंसें केसी रासत चलानेहो रासत सोंपके राजा तीर्थ गया अब दोनुं नाई अपणे २ पंम्तिोंद्वारा अपणे २ राज्यका काम चलाया उस वखत लवीसाहबके कहनेमें एसा हुवा निंकों धोंकलसिंहने फिरवाया कोइ जो ...मारसी यगा सो सजा पायगा तब साहूकारोंने पं- कीया इस रासतमें रहकर अब अपणे म- करसकनेहें एसा विचार सब एकठे होकरकी कलकर रामसिंहके राजमें जा बसे रामसिं बहोत म्यानर करके बसाये साहूकारोनें हकीगत कह सुणाइ तब रामसिंहने अपणे सिपाहीयोंसें कहदीया जो कोइ आदमी इस

रासतसें आवे उसकूं अपणे राज्यमे खातरकरके वसाउं पहलेही वर्षमें जव रुपे उधार देणेवाले साहूकार नही मिले तव तो कर्षाण लोक जमीन नही वोयसके तव तो सरकारमें हासल वहोत कम वेला दशलाखकी आवंद साहूकारोंके माल ताल जगात वगेरेके वेलतेथे जिसमेंसें कुलम पैदास आठ लाखकी हुइ खरच सिपाइयोंकी तनखा घोमे हाथी वगे रोका सव लगणेपर उधार कोइ देणेवाला नही रहणेसें असवाव जो विका सो सव रामसिंहने लीया यूंकरते चोथे वर्षमें सव शस्त्र हाथी घोमे विकणेपर सव रइयत नागके रामसिंहके तावे हुइ लाचार मोलवीसाहव उर धोंकलसिंह अपणी जमीन वेची सोनी रामसिंहने खरीद रली मोलवीसाहव मक्काकूं तसरीफ लेगये दपीछे धोंकलसीहकूं अपणेपास रखा राजा र्थांसें पीछे आकर देखा तो रामसिंह चोगुणी मृद्धिसें राज्यकर रहाहे धोकलसिंह लजरवा-ा हुआ तव राजाने कहा वेटा ये क्या हुवा व धोकलसिंह वोला हे पूज्य मोलवीसाहिबके कहणेमाफक कुरानसरीफके कायदेपर चला तोनी खुदाने मेरे तरफ कुछनी खयाल नही

शहरमें कुतवदीन वादशाह राज करताथा-
उसकेपास कुरान पढे हुये वहोतसे मोलवीथे
उसके वाइस लाख फोजका दलथा एकदिन
सब मोलवीयोका आम दरवारथा तब मोल-
वीयोने वयान किया आपना हकनाहक इतना
खरच फजूल क्यों रख छोमाहे कुरानसरीफमें
खुदाका हुकमहे जो आदमी आप अपणा
इमान छोमके पराये चीज लेणेका दिल कर-
ताहे तो उसकीभी चीज लेणेको दुसराभी
इमान छोमके कोसीस करताहे सो हजूरसें हम
पूछतेहे क्या आपभी अपणा इमान छोम कि-
सीकी रासत छीननेका विचार रखतेहो वादशा-
ह वोला तोवा २ में कुरानसरीफके वरखिलाफ
कभी अपणा इमान छोम कभी किसीकी रासत
लेणेका विचार नही रखता तब मोलवी वोले
यकीन रखिये आपकीभी रासितकों कोइभी नही
छीनेगा वादशाहकूं यकीनथा कुरान उर मोल-
वीयोका तब वोला आपलोग सच कहतेहे मुझे
पक्का भरोसाहे कोइ नही मेरी रयासत छीनेगा
तो मोलवी वोले रीतके पांचसो सातसो सिपाह
रहणे दीजीये वाकीकों रुकसत कीजीये वादशाह
वोला वजीरकों कहदूंगा फेर दरबार वरखास्त

नया वजीर जव मुजरे आया तव वजीरकूं सव वात कह सुणाई तव वजीर श्रीमाल सामतसिंह उसवालनें विचारा वादशाहकी अक्कल मोलवीयोनें निकाल माली है इनोकूं समझाणा चाहीये सो एसें कहूंगा तो मानेगें नही वलके गुस्सेंमे आकर कहेगें काफिर कुरान मौलवी उर मेरा हुकम अदूली करता है एसा विचारके वोला जो हुकम धीरे २ सवको रुकसत करडुंगा अपणे मकानपर आके एक खतरूमके वादशाहकों लिखाके इहां दिल्लीके वादशाहने सव फोज निकालदी है आप सुरताणहो वादशाहत लेणेकी दरकार होय तो जलदी फोज लेकर दिल्लीपर चढआइये नहीं तो एसी नाताकतरासतकों कोइनी छीनलेगा उस खतमें अपणा नाम पता नही लिखकर एक वेपारी रूमका जोकी व्यापार करणे देहली आयाथा उसका लिखदिया वादशाह रूमखत पढतेही चढाईकी वजीरने सव फोजोके अपसरोकों वुलाकर हुकम दिया अपणे २ शस्त्र लगाइके कामल तयार रखो चंददिनमें काम पडेगा अब रूमका वादशाह मजलोंमजल हनदुस्थानके सीमपर आया सांढिये सवारोने वादशाहकों

खबरदी रूमके वादशाहकी फोज आरहीहे तव वादशाह सव मोलवियोसें कही मोलवी वोले हजूर आप क्यों मरतेहे मके सरीफको जाताहोगा वह वात वजीरने सुणी तव अपणी सव फोजको हुकम दिया तुम सव चुपचाप इहांसे जाकर आठ कोसके फासलेपर जाव सो जव वुलाउं तवी हाजर होणा वजीरने वादशाहसें अरजकी गरीवपर हुकमकी तामील वजाइ गइ वादशाह वोला अच्छा कीया रूमका वादशाह पंजावमें आ पहुंचा सवारोने खवरदी वादशाह मोलवीयोसें पूछा मोलवीयोने कहा खाजेकी जारत जाताहोगा आखिरकों दिल्लीके एक मजलपर मेरा दिया उर दिल्लीके वादशाहकूं कहला भेजा तीन दिनमें किल्ला खाली करो या मोरचे मजवूत करो ये सुणतेही वादशाहके छक्के छूटगये उर घवराकर मोलवीयोसें कहा जूलम हुवा अव क्या करणा तव मोलवी वोले गरीव परवर क्यों घवरातेहें हम अभी समझा देतेहे एसा कहकर वमे खलीनो में कुरान सरीफको माल रूम सुरत्राणपास पहुंचे वादशाह सुख कायदेसें विठलाये कुसल क्षेमकी वात चीत पूछकर पूछा हजूरका आणा केसें

हुवा वादशाहने कहाके दिल्लीमें अमल दखल करणेकूं मोलवी कुरानका सिपारा दिखलाके बोले इस किताबमें अगर आपका इकीनहै तब तो वसलोट जाइये नही तो फरमावे आ किस कायदेसें आये वादशाह चुपरहा जव उन मोलवीयोने दो तीन वखत वोले वताइये आप किम कायदेमें आये तव वादशाह म्यान मेंसें खांडा निकालकर दिखलायाके हम इस कायदेसें आये तव तो मोलवीयोकूं कुछभी ज-वाव नही आया कुरान खलीतेमें डालके अपणे वादशाहपास पहुंचे वादशाहकूं कहा वस दि-ल्लीका किल्ला खाली करदीजीये जो काफर कुरानके वचनपर यकीन नही रखता उसका इमानगया आपकी रियासत गई दोगेटी उर सल्तनत आप जहां देंगे वहां खुदा देही देगा सुणतेही वादशाहके छक्के छूटगये खाणा उर पीणा भूलगया फिकरमें आकर फेर पूछा आप लोक फिर क्या करेंगें जो अव चैन करतेहै मोलवी वोले हम लोक इनके पास रहजायगें जो नही रखेगा तो आप क्या नही जांणतेहै मुसलमीनोके कायदाहीहै धन होणेसें अमीर हुवे फकीर मरे तो पीर जेसी आ यीनेगी

खुदाकों जो करणा होगा सो करेगा इस वजे राजाने जब बात कही तब धोकलसिंहने पूछा फेर हजूर रियासत गई या रही राजा बोला तब मोलवीयोकी बात सुणके बादस्याह बडा फिकर बंध होकर वजीरकूं बुलाया ओर आंखो-सें पाणी टपकाता हुवा मोलवीयोकी हकीगत कह सुणाई तब वजीर बोला हजूर जापनाह कुरान सरीफका कायदा राजकाजमें क्या दखल करसकताहे ये राजनीति शास्त्रकी जुदाहे जिसमें साम दाम दंड भेदादिक अनेक छल बल ओर बहादुरीहे खेर इन पढत मूर्खोकी बातपर फेर ज्यादे अमल मत-करणा बादस्याहने तोबा खाइ तब वजीर बादस्याहकूं दिलासा देकर कहा हजूर दिलमें धीरज रखीये जो कुछ सिपाहहे उसहीसे लडेंगे क्या आपने नही सुणाहे रणजीतसिंह सिख पांच घोडेका सूबेदारथा सो अपणी ब-हादुरीसें पंजाब हस्थेका बादस्याह होगयाथा उसीवखत रूम सुलतानकूं लिखभेजा आप तीनदिन ठहरें फेर मुकाबला करेंगे एक सवार फोजके तरफ भेजा आठ पहरमें फोज आकर रूमकों घेर लिया एसा हाल देख रूमनें पहला

भेजा में कुछ लमणें नही आयाहुं जब मेनें एसी खबर पाई तो तुमकों नसियत देणें आयाहुं वजीरनें दोनों बादशाहोंकी मुलाखात यानें संधि कराई दिल्लीके बादशाहसें आणेजाणेका खर्च दिलाकर रूमकों रवाणें कीया इतनी बात सुणकर धोंकलसिंह जैन पंम्तिोसें धर्मशास्त्र राज्यनीति दोनों सीखके इस लोकमें ओर परलोकमें सुखी हुवा विवेकी आदमीवे अगर जो नुकशांन धनका होजाय तो उदास नही होणा चाहीये उद्यममें मजबूत रहणा कारणके निश्चय सत रखणेवाला ओर चतुर परिश्रम करणेमे तकलीप सहणेवाला दावसे उद्यमकरणेवाले पुरषके लक्ष्मी कहांतक भागके जायगी जेसें आजदिन अंगेरेजोके प्रत्यक्ष प्रमाणमे लंदन राजधानी तथा अमेरीका साक्षात् सोने किसी लंका बणरहीहे जहांसे बहोत धनकी आवंद होय उस जगे थोमाबहोत नुकशांननी होय तो सहणाही पमताहे बीज जाट करबणी बोता हे अनाज मणो बंध होताहे लेकिन् वो बोया हुवा दाणा तो असली कनी नही मिलताहे संपदा ओर तकलीप दोनोंमें सम परिणाम रखवे वो गृहस्थ धन्यहे

संपदा स्थिर नही रहे तो विपदा क्या थिर रहतीहे जो लक्ष्मीकूं श्रीकृष्ण प्रेमसें गोदीमें बेठाताथा एसी जो लक्ष्मी समुद्रके ओर कृष्णके ही जब नही रही तो उम्राउ वेकूवोके पास कब रहसकतीहे पूर्वजन्मके पापके उदयसें जो कभी आगे जेसी भाग्यवानी नहि आवे तोभी मनमें धीरज रखवणी क्योंके आपदारूप समुद्रमें डूबतेकूं धीरज हेसो जिहाजहे सब दिन एक सरीखे नहि रहते इस जगतमें सदा सुखी कोणहे लक्ष्मी जब जगतसेठजीकेही स्थिर नही रही तो ओर किसके रहेगी प्रेमभी स्थिर कब रहताहे मोतके वश कोण नहीहे ओर विषयाशक्त कोण नहीहे इसवास्ते विपदमे संतोष रखना जो कभी ज्यादा फिकर करे तो इस भवमें रोगोत्पत्ती परभवमें बुरीगती होतीहे तरे २ के उपाय करणेसेंभी जब अपणी तकदीर नही खुले तो किसी श्रीमंत भाग्यवानका सहारा लेणा कारणके लक्कडके सहारेसें लोहभी पाणीमें तिरणे लगताहे एक भाग्यवानके सधर मुनीमथा वो जब मरगया तो उसका बेटा निर्धन होगया तब सेठ उसकूं नोकरी रक्खे नही लेकिन् कभी २ छुटकर काम करणा सोंपे

पुरप सो आपदा आणेसें दीन नही होय लक्ष्मी संपदासे गर्व न करे पराया दुख देख दुखी होवे आपमें संकट पडे तो सीदावे नही उस पुरपकूं नमस्कारहै समर्थावान होकर पराया पुरपोंका कीया हुवा उपद्रवसहै धनवान होकर गर्व नही करे पंडित होकर विनयवान होय यह तीनों पुरष पृथ्वीमें अलंकार समानहै विवेकी वहीहै जो कोइके संग क्लेश नही करे तथापि बडे अदम्योसें तो भूलचूकके भी कभी क्लेश नही करणा कहाहै जिसकूं खासीका विकार होय उसकूं चोरी नही करणा जिसकूं बहोत नींद आती होय वो जारी नही करणा जिसकूं रोगहै वो मीठे आदि रसऊपर आसक्त नही होणा जुवान वसरखणा पथ्यमें रहणेसें रोग मिटही जाताहै धनवान होकर किसीसें वैरविरोध नही करणा नेमारी राजा गुरु तपस्वी पक्षपाती तावतवर क्रूर डर नीच इनोके संग वाद विवाद नही करणा कभी किसी बडे आदमीसें धन जमीनादिकवास्ते असरचा पडगया होय तो विनय बुद्धिसें वात निकाल लेणा चाहीये चाणाक्यनीति तथा पंचाख्यानमे लिखाहै उत्तम पुरुषकूं आजीवीमे

वस करणा सूरवीरकूं बलसें वस करणा नीच
पुरपकूं अल्प द्रव्यादिक देणेसें वस करणा ओर
अपणे बराबरीवालेकों अपणी ताकत देखाकर
वस करणा धनके गरजीकूं तथा धनवानकूं
विशेषकर गम रखणा चाहीये क्योंके क्षमा
रखणेमें धनकी वढोतरी ओर रक्षा होतीहै
ब्राह्मणका बल होम मंत्र राजाका बल नीतिशास्त्र
अनाथ गरीब प्रजाका बल राजा ओर वणिक्
पुत्रका बल क्षमाहै मीठा वचन ओर क्षमा ये
दोनोंही धनका मूलहै धन शरीर योवनअवस्था
ये तीन कामनाका कारणहै दान दया ओर इंद्री-
योंका जीतणा ये तीन धर्मका कारणहै ओर
सर्वसंग परित्याग करणा मोक्षका कारणहै
तुरानका क्लेश सब मिटाणे वर्जणा दारिद्र
संवाद ग्रंथमें कहाहै लक्ष्मीजी इंद्रकूं कहतीहै
हे इंद्र जिस जगे गुणवान बडे आदमीकी
पूजा होतीहै न्यायसें धन पेदा करतेहैं ओर
जगतकी वचनसें क्लेश नही करता उस जगे मैं
रहतीहूं तब दारिद्र कहताहै हे इंद्र जो हमेशा
जुआ खेलतेहैं स्वजनकेसाथ द्वेष रखतेहैं कि-
सीकी चाकरीमें धनकी चाह रखतेहैं सदा आलसू
तथा वैराग सदा रखतेहीं मास खाते

रखणेवाले एसे आदम्योके पास में हमेसां रह-
ताहुं विवेकी आदमी उधारकी उगराइ पण
कोमलता राखकर करणा दुनियामें निंदा नही
होय जेसे करणा एसा नही करे तो देणदार-
की चतुराइ लाज वगेरेका लोप होय उस्सें
अपणा धर्म तथा धनकी प्रतिष्ठाकी नुकसाणी
होणा संभवहे इसवास्ते लंघन वगेरे न करणा
नही कराणा लंघन करणे ओर कराणेवाला अं
गरेजी राज्यके कायदेसें सजावार हे जो कि-
सीकों भोजनादिकमे अंतराय देगा वो जीव
कृष्णके कुमर ढंढण ऋषिकी तरे भोजनकी
अंतराय पावे सर्व पुरषोकूं तथा वणियेकूं चा-
हिये सो संप तथा स्यारजनोकी सलाहसें
काम करणा चाहीये सब काम साधनके साम
दाम दंम भेद एसे च्यार भेदहे जिसमेंभी सा-
मसें सर्वत्र कार्यसिद्धीहे बाकी उपाय सामके
जोमेके नहीहे करमा ओर कहूर अदमीभी
मीठी जुबानसें वस होजाताहे लेणदेणमें भूलसें
जो कभी झगमा पमजावे तो निकम्मा विवाद
नही करणा तब पांच पंच चतुर लोकीकमें
प्रतिष्ठावंत जो कहे सो मंजूर करणा उन पं-
चोका मानै तो झगमा मिटे नही अं-

बना उपगारका काम होय अथवा कोइ करणे योग्यही इन्साफ होय तो पक्षपाती करणी चाहिये जैसें [illegible] मगरूरी नहि करणा धनप्राप्ति कर्माधीनहै इसवास्ते निकम्मा अभिमान करणेसे क्या फायदा दोनानवमें [illegible] धन [illegible] इसका- [illegible] गोगकी [illegible] विचार न करे काज [illegible] किसी- में [illegible] जिनमें [illegible] होगा [illegible] दृढ [illegible] नसा पना [illegible] दृढ [illegible] विजाकर [illegible] गांवके कजरमें दया [illegible] कजाइ कुछ नहि करणा [illegible] तो अनमन [illegible] पुण्य [illegible]

कीया एसा द्रव्य जो निरवद्य उसकी मिठाइ
तुजीये सीधा ले आवेगा सो वेठके खावेंगे
साधोंके उपदेशसें बमे लान होगा स्नान करणे-
का मंदिर करवाणेका मूर्त्तिपूजामें एकांत पापहे
इसवास्ते इस वातका जावज्जीव त्याग साध
कराय देगा अपणेको धर्मी जांणके बमे आदमी
जो ढूंढक धर्मीहे सो धनकी मदत देंगे खेर वो
वणिक् तो वेस्याके गया उर ढूंढक पंथी ऋषि-
जीके थानक गया समयसार नाटक ग्रंथमे
लिखाहे दया दान उर पूजादिक विषय कषा-
यादिक इन दोनोंका एक खेतहे इन दोनोंके
मन परणाम आश्री दोनोंकी करणी अंतमे ए-
कसीहे कारण ज्ञानीको जोग सोतो निर्जराका
हेतुहे अज्ञानीको नोग सोतो वंध फल देतुहे
ये अचरिजकी वात हिये नहि आवे पूछे कोइ-
यक शिष्य गुरु समजावे १ अब वो वेस्याके
गया उसनें मनमें विचारा धिक् मेरी बुद्धि सो
में सव जन्म इनही कुकर्मोंके करणेमें खोया
धन्यहे वो सो धर्म करणीके वास्ते गयाहे ए-
सा विरक्त नावना नावता हुवा वेस्याके संग
रातनर रहकर प्रनातसमें निकला रस्तेमें संवे-
गधर्मी स्वेतांवरी साघू मिले जिनके मुखसें

ताहे निरख तोल्कर वे सुमार मोल वधायकर अयोग्यरीते व्याज वधायकर रुसपत देकर अथवा लेकर जूठा मासूल कर्पणोसें धोखा-बाजी करके खोटा नाकल घसाहुवा रुपया पेसा देकर कोइ खरीदता होय अथवा वेचता होय उसका नंग करके पराया ग्राहककूं जरमाय कर नमूना एक बतावे माल दुसरा देणा नही जहां लेणेवालेकूं बराबर दीखे नही एसी जगे कपमा वेचे नही लिखणे पढणेमें फेरफार करणा नही इत्यादिक ठगाइ धोखाबाजी कभी करणा नही इस नवमें सरकारसे दंम परजवमें स्वर्ग मोक्षके सुखमें हानी पहुंचतीहे कोइयक मूर्ख एसा कहतेहे कूम कपटविना कमाइ होती नही आजिविका तो कर्मके आधीनहे लेकिन व्यव-हार शुरू रक्खे तो उलटे ग्राहक ज्यादे आवे मुनाफा ज्यादा होय इसपर एक दृष्टांतहे एक सुंदरपुर नगरमें देलानामका सेठ रहताथा उसके चार लम्का हुवा जरजी उसके परिवार ज्यादाथा तब वो सेठ ग्राहक जब आता तब लम्कोकूं समझा रखाथा उसवास्ते गाली देणेके वहाणेसें त्रिपुष्कर पंचपुष्कर एसा शब्द कहकर खोटी तराजु वट वापरकर लोकोकूं ठगताथा

उसके छोटे लड़केकी बहू बहोत समझदारथी उसनें सुसरेकूं छाने समझाया तब सेठ बोला एसा नही करें तो पेट भराइ केसे होय बहू शास्त्रोंमे लिखाहै दूसरा आदमी कोणसा पाप नही करे तब बहू बोली हे पूज्य एकमें धरम हे धर्ममें चालणेवाले आदमीके सब काम सिद्ध होनाहे इस बातकी परीक्षा करणी होय तो छ महीनेतक शुद्ध व्यापार करके देखो इस- मेंभी परतीत आ जावे तो आगेभी एसा करते रहणा अब सेठ इस बातकी परिक्षा करणेकूं तयारहो [illegible] अनुक्रम ग्राहक बहोत आणे लगा [illegible] नही [illegible] बहोत [illegible] और [illegible] सोना [illegible] जाके [illegible] सेठकी बहू [illegible] बोली हे [illegible] आणे- [illegible] बोली [illegible] आभाहे [illegible] सोना [illegible] [illegible] छ महीने [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

सेठकूं लायकर कांठला दीया एसा देखकर सेठकूं दृढ कमाणेपर आस्ता आई शुद्ध व्यापार करता हुवा सेठ बमा धनवांन होगया श्रावक धर्ममें अगवाणी जया उसका नांम लेणेसें सब विघ्न टलगया तब जिहाजोके चलावणेवालोकूं आदि ले सब मनुष्य हेलाहेलो नाम पुकारणे लगा विचारवानोंकूं सब पापोके काम छोमणा उसमेंजी अपणा मालक दोस्त अपणेपर विश्वास रखणेवाला देव गुरु वृद्ध तथा बालक इनोके संग वेर विरोध करणा नही इनोकी धरवट खाणी नही जमाखाणा उनोकी हत्या करणे जेसीहे झूठी गवा देणेवाला वहोत दिनोतक गुस्सा रखणेवाला विश्वासघाती उर कीये उपगारीका उपगार लोपणेवाला कृतघ्न ए च्यारोही कर्मचंमाल उर पांचमा जातिचंमाल जाणना विश्वासघातपर विसेमिराका दृष्टांत हे विसाला नगरीमें नंदराजा जानुमती राणी उनोका पुत्र विजयपाल उर बहुश्रुतनामे मंत्रीथा नंदराजा जानुमती राणीपर आसक्त होणेसें सनामेंजी राणीकूं पासही रखताथा शास्त्रोमें लिखाहे राजाका वैद्य उर गुरु तथा मंत्री ये लोक राजाकूं प्रसन्न रखणेकूं मीठी २

राजाके सामने हमेसां वांचे जो वाक्य यथार्थ आवे उनका विस्तार करे वाकी अवशेशकूं कविताका दखल मांनता हुवा वांचके सुणावे एकदिन कथामें मांस खाणेका निषेध अधिकार सात्वकी आया व्यास बोला यःपुमान् तिलतुष प्रमाणं पललंमुंक्ते साधो अवन्यां कुंनीपाके पचति अर्थात् जो तिल तुसजर मांस खाताहे वो मनुष्य कुंनीपाक नर्के नीचेकी पृथ्वीमें पकताहे ये वात सुणके राजा चमक उठा एसी व्याख्या राजाने कनी वमे व्याससें नहीं सुणीथी राजा बोला अहो व्यासजीके पुत्र एसा अर्थ आपने सुणाया ये अर्थ जूठाहे क्या व्यासजीसें आप ज्यादे पंम्तिहो अगर आपका कहा अर्थ सचाहे तब तो वेदमे जो यज्ञोमें नानातरेके पशुउंकों होमके मांस खाणेकी विधी लिखीहे उस मुजब असंक्षा जीवोका पुरोमासा अर्थात् यज्ञ कीये बाद बचा जो मांस सो तुमारा वम्रेरा तथा अनेक राजाउंनें खाया उर खातेहें क्या वो सब नरक गये होंयगे वेदके वचन कनी जूठे होसकतेहे जोकी नगवान ब्रह्माजीने प्रकास कराहे जिस यज्ञोकी तारीफ वेद व्यासजीने पुराणोमें गा-

दांन करे उर एक आदमी एक जीवकों मरतेकूं वचावे तो कृष्ण कहतेहे हे अर्जुन अहिंसा बरावर कोइ धर्म नही राजा स्वार्थीये सच्च मार्ग कभी नही वतासक्तेहे एसा कह व्यास घरकूं आया राजाने पेटीये उर रुपये बंधकर लिये चंददिनमें व्यास घरकूं आये तब व्यासण रोणेलगी व्यासने पूछा क्या भया व्यासणीने सव हकीगत कह सुणाइ व्यासका समझका वोला आप केसी कथा हमेसां वांचतेहे सो राजा सचे अर्थकूं जूठा कहणेलगा व्यास बोला कलसुवे राज महलमे आजाणा देख केसाक राजाकूं समझातांहूं खेर फजर होतेही व्यासजी राजापास जाके आसीर्वाद दिया राजा नमस्कार कर सत्कार कर पूछा कुशल क्षेमहे व्यासने कहा अन्नदाता कुशल क्षेमतो हजूरकी सु निजरसेंही रहसक्तीहे राजा वोला महाराज कथा इतनेतक तो आपके पुत्रसें सुणी लेकिन् लोकोमें मेने एसा सुणाथाके व्यासजीका पुत्र बमा पंम्तिहे सोतो कुछ नही व्यास बोला गरीवपर पंम्ताईका घर दूरहे कलियुगके पंम्तहे आप तो कल्पवृक्ष कामधेनु साक्षात ईश्वररूपहो एसा सुणकर राजा प्रसन्न

व्यासजीसें पूछा आपके पुत्र क्या कहतेहे व्यासजी बोले हजूर अलंकार देकर आपकी ओर मेरी चतुराइकी तारीफ करताहे एसा कहकर झट व्यासजी अपणे लमकेका हाथ पकमके अपणे घर ले आये बेटा बोला बाबा तुमने बमा अन्याय कीया क्या राजा नर्क नही जायगा मांसाहारी निश्चे नर्क जाताहे आपने स्वर्ग जाणा केसे बतलाया तब व्यासजी बोले अरे भाइ अपणे हिसाबसें नर्क जावे तो क्या ओर बेटा संसारमें जन्ममरण करे तो क्या अपणे तो आजीविका तयार करणी कथा सुणनेवाला जेसें राजी रहे वेसें करणा तबही कुछ देताहे इस दृष्टांत मुजब जो धर्मगुरु होकर सच्ची बात नही कहे तो राजाका धर्म बिगम जाताहे इसीतरे जो राजाका वैद्य खुसामदीसें राजाकूं कुपथ्यसे मना करे नही उनके मन मुजब हांहां करे उसपर दृष्टांत एक ब्राह्मण वैद्यका हे एक राजाके पास एक ब्राह्मण वैद्य नोकरथा वो राजाकी इच्छा मुजबही हमेसां पथ्य बताया करता राजा एकदिन नीतिशास्त्र वांचता हुवा उसमें एसा लिखा हुवा वांचा के जो वैद्य रोगीके मन मुजब खाणेपीणेकी आज्ञा देदेवे -

चूम्रे जेसा वग्ग विद्रूप दीखताहे म्लेच्छ अ-नार्योंका खाणापीनाहे इस वेंगणकूं वहुत वीज होणेसें जैनधर्मवाले अजक्ष कहतेहे ओर पुराणोमें व्यासजीनें लिखाहे जो प्राणी वेंगण खायाहे ओर ७ महीनेमें आदमी मरजावे अगर एक वीजजी जो पेटमें रहजावे तो प्राणी नर्क जाताहे तव राजा वोला वैद्यजी हमने जव वेंगणकूं अच्छा कहा तव तो आपनेजी अच्छा कहा ओर मेने वुरा कहा तव वुरा कहा ये क्या हालहे तव वैद्य वोला गरीवपरवर नोकर आपके क्या वेंगण चंदजीके वापके आप राजी रहो हमकूं तो वेसाही कहणा जरूरहे ॥

दुहा—जाटकहेसुणजाटनी इसीगांवमेंरहणा ॥
ऊंठविलाइलेगया हांजी २ कहणा ॥१॥

सो हमकूं तो वेसा कहणा जरूरहे एसा खुसामदीया वैद्य राजाके रोगका वढाणेवाला होताहे एसा विचार मंत्री राजाकूं कहणेलगा महाराज सजामें राणीसाहिवकूं पास रखणा वाजिवनही क्योंके नीतिमें लिखाहे अति निकट विनाशाय अतिदूरेतिनिष्फलः सेव्यतांमध्य जागेन राजावन्हिगुरौस्त्रियः ॥ १ ॥ अर्थ ॥ राजा अग्नि गुरु ओर स्त्री ए च्यार वहोत न-

ऐकर आदमीका दिल पिघलाकर दगावाजीसें मनुष्योंका प्राण लेताहे इसवास्ते पेस्तर तूं मेरी गोदमें सोजा पीछली रात्रिकों में सोउंगा तव राजकुमार उस वंदरकी गोदमें सो रहा वाघने अनेक खलवल कीये लेकिन् वंदरने राजकुमार-कूं नीचे नाला नही जव पिछली रात्री आइ तव राजपुत्रकी गोदमे वंदर सूता बहोत स-मझाया हे कुमार देख एसा नही होजाय जो वाघकी दया लाके मुझे तूं नीचे पटकदे में तेरे सरणागतहूं मेरे प्रांण तेरे हाथहे एसा समझकर कुमरके गोदमें वानर सोरहा इतनेमें वाघ आकर वहोत आजीजी करणेलगा हे कुमर में वहोत भूखाहूं तुझें वमा पुन्य होगा ये वंदर तेरे क्या लगताहे उर इसकूं तुं मुझे देदेगा तो तेरेभी प्राण वचजायगें तव कुमर अपनी ज्यांनकी रक्षावास्ते वंदरकूं नीचे नाल-दिया तव वंदर वाघके मूंमे गिराये स्वरूप देख के वाघ हसणे लगा तव वंदर वाघके मूंमेसें निकलकर रोणे लगा तव वाघ वंदरकूं रोणेका कारण पूछा तव वंदर बोला जो कोइ आदमी अपनी जाती छोमकर पराइ जातिपर आसक्त होतेहे उण मूर्खोकी क्या गती हो-

गम स्नानके पापसें वूटता नही एसा सुणकर दुसरा अक्षर से ठोमदीया मित्रकूं मारणेवाला कृतघ्नी इच्छा करणेवाला कृतघ्नी ठर विश्वासघाती चोर ये च्यारोंही जहांतक सूर्य चंद्रमाहे वहांतक नर्कमें रहेगें तब कुमर तीसरा अक्षर मि कहणा ठोम दीया राजन् तूं अपणे लम्केका कल्याण चाहताहे तो सुपात्रोंकों दांन दे कारण गृहस्थ दांन देणेसें शुद्ध होताहे एसा वचन सुण कुंवर चोथा अक्षर रा ठोमदिया तब अछा होकर कुंवर वाघ ठर बंदरका सर्व वृतांत सुणाया तब राजा परदेमें रहा शारदानंदनकूं पूछणेलगा हे वाला वनमे जो बीती बात सो तुझे क्या खबर सो तेने सब हकीगत श्लोकोमे बनाकर कहकर मेरे पुत्रकूं अच्छा करदिया तब पंमित बोला हे राजन् जिनेश्वर देव सद्गुरूके प्रतापसें मेरे जीजाग्रपर सरस्वतीहे जिस्सें जेसें मेने जानुमती राणीके जांघका तिल जाण्या तेसेंइ यह बातजी जाणताहूं तब पीछे दोनोंकी मुलाखांत जइ दोनोंके आनंद जया इसवास्ते विश्वासघात करणा नही इस लोकमे पाप दो प्रकारकाहे एक तो गुप्त ठर दुसरा जाहिर वो दानेका पापजी दो

समाधान एसाहै जो अन्याइ अधर्मी सुखी दिखतेहै ओर धर्मी दुखी दिखतेहै ये सब पूर्वकृत पुन्यपापका फलहै इस नवका ओनोंके नहि जांणना श्रीधर्म घोपसूरजीने कहाहै पुण्यानु वंधिपुन्य १ पापानु वंधिपुन्य २ पुण्यानु वंधिपाप ३ पापानु वंधिपाप ४ इसतरेसें पूर्वकृत कर्मके सुखदुखके च्यार भेदहै जो जीव जैन धर्मकी विराधना नही करतेहै वो जीव भरतचक्रवर्त्तिकी तरह निरुपम सुख पातेहै वो जीव पुण्यानुवंधवाले कहातेहै जो जीव पूर्वजन्ममें अज्ञानसें कष्ट करे वो जीव कोणिक राजाकी तरे वहोत ऋद्धि निरोग शरीरवाला होताहै पापकर केभी धर्म करे नही ओर पापकर्ममें रक्त होय वो पापानुवंधिपुन्य जांणना जो जीव पापके उदयसें दलद्री ओर दुखीहो करकेभी लेसमात्र दयाधर्म होणेसें द्रमक मुनिकी तरे जैनधर्म पाताहै वो पुण्यानुवंधिपाप जाणना ३ ओर जो जीव काल शोकरिकश्रंकाल कसाईकी तरे क्रूरकर्म करणेवाला अधर्मी निर्दइ करे हुये पापका पछतावा नही करणेवाला ज्यों ज्यों दुखी होता जाय त्यों त्यों ज्यादा २ पापकर्म करताजाय वो पापानुवंधि पाप कहलाताहै पुन्यानुवंधिपुन्यसें

तरेकाहे एक छोटा ऊर एक बना खोटी तराजु वट माप वगेरह रखणा ये छोटा गुप्त पाप ऊर विश्वासघात करणा यह गुप्त महापापहे प्रगट पापका दो प्रकारहे एक तो कुलाचारसें करणा सो दुसरा लोकीक लाज छोमके करणा सो गृहस्थलोक कुलाचारसें आरंभ समारंभ कर-तेहें तेसें म्लेच्छ लोक कुलाचारसें हिंसा कर-तेहें वो जाहिरा छोटा पाप जांणना तेसेंही साधूका वेष पहरकर निर्लज्जपणेसें हिंसा प्र-मुख करतेहे वो प्रगट महापाप जांणना ल-ज्या छोमके महापाप करणेसें अनंत संसारी-पणा होताहे क्योंके प्रगट महापाप करणेसें जैन शासनका उन्माद होणेसें महापापहे कुलाचारसें प्रगट लघु पाप करे तो थोमा कर्मबंध होताहे ऊर जो गुप्त छोटा पाप करे तो तीव्र कर्मबंध होताहे जो कोइ आदमी पराये अवगुण छिद्र ऊर मर्म उघामकर स्वार्थ साधनकी उन्नती क-रतेहें वो कभी होती नही जेसे अरटकी घम-नांल खाली ऊर भरी होजातीहे कोइ एसी शंका करतेहे की न्यायवान ऊर सदाधर्ममें चलणेवाले दुखी देखणेमें आतेहे ऊर अन्याइ अधर्मी लोक सुखी देखणेमें आतेहे जिसका

समाधान एसाहे जो अन्याइ अधर्मी सुखी दिखतेहे ंर धर्मी दुखी दिखतेहे ये सब पूर्वकृत पुन्यपापका फलहे इस नवका उनोंके नहि जांणना श्रीधर्म घोपसूरजीने कहाहे पुण्यानुवंधिपुन्य १ पापानु वंधिपुन्य २ पुण्यानु वंधिपाप ३ पापानु वंधिपाप ४ इसतरेसें पूर्वकृत कर्मके सुखदुखके च्यार भेदहे जो जीव जैन धर्मकी विराधना नहीं करतेहे वो जीव भरतचक्रवर्त्तिकी तरह निरुपम सुख पातेहे वो जीव पुण्यानुवंधवाले कहातेहे जो जीव पूर्वजन्ममें अज्ञानसें कष्टकरे वो जीव कोणिक राजाकी तरे वहोत ऋद्धि निरोग शरीरवाला होताहे पापकर केभी धर्म करे नहीं ंर पापकर्ममें रक्त होय वो पापानुवंधिपुन्य जांणना जो जीव पापके उदयसें दलद्री ंर दुखीहो करकेभी लेसमात्र दयाधर्म होणेसें द्रमक मुनिकी तरे जैनधर्म पाताहे वो पुण्यानुवंधिपाप जाणना ३ ंर जो जीव काल शोकरिकध्वंगाल कसाईकी तरे क्रूरकर्म करणेवाला अधर्मी निर्दइ करे हुये पापका पछतावा नहीं करणेवाला ज्यों ज्यों दुखी होता जाय त्यों त्यों ज्यादा २ पापकर्म करताजाय वो पापानुबंधि पाप कहलाताहे पुन्यानुबंधिपुन्यसें

बाहरकी शुद्धि उर अंतरंग शुद्धिनी पातेहे दोनोंमेंसें एकनी शुद्धि जिसने नहि पाइ उस मनुष्यजन्मकों धिकारहे जो जीव पहली अछे परिणामसे धर्मकाम सुरू करे उर पीछेसें शुभ परिणाम उतर जाणेसें पुरा धर्म करे नही वो जीव परभवमें आपदा संयुक्त संपदा पावे इसतरें कोइ जीवकुं पापानुबंधी पुन्यके उदयसें इस लोकमें दुखकष्ट जनावे नही तोभी उसकुं अगले भवमें परिणामसें निश्चें पापकर्मका फल मिलेगा इसमें शंका नही कहाहे के द्रव्य पैदा करणेकी बहोत इच्छामें अंधा हुवा मनुष्य पापकर्मकरके जो धन पावेहे वो धन मांसमें पोये हुये लोहके कांटेकी तरे उस आदमीका नास करे बिगर पचता नही इसवास्ते जिसमें स्वामीद्रोह होय ऐसा मामलतकी चोरी वगेरे सर्वथा छोडणा उसमें इसलोकमें उर परलोकमें अनर्थ उत्पन्न होताहे जिसथानमें किसीकों थोडीनी तकलीफ पैदा होवे ऐसा व्यवहार तथा घर दुकान करावने तथा लेणेमें तथा रहणेमें जो कुछ होय सो वर्जणा क्योंके किसीकों तकलीफ देणेसें अपणे सुखकी उर धनकी बढोतरी नहि होती कहाहे के जो कोइ

आदमी मूर्खताइसें मित्रकूं कपटसें धर्मकूं सुखसे विद्याकूं क्रूर ठर कठोरताइसें स्त्रीकूं वस करणा चाहे तेसेंइ दुसरेकूं तकलीप देकर आप सुखकी चाह करे उसकूं मूर्ख जांणना विवेकी लोकोंको चाहीये सो ज्यों अपणेपर लोक प्रीति करे तेसें चलणा क्योंके इंद्रीयां जीतनेसें विनयगुण पैदा होताहे ठर विनयसें अठे २ गुण पैदा होतेहे तव सव लोक उस गुणोके पिछाडी प्रीति रखतेहे ठर लोकोके अनुरागसें सर्व संपत्ति पैदा होतीहे चतुर पुरषकों चाहिये अपणे घरके धनका नफा नुकसांन कीया हुवा संग्रह वगेरह वात कोइके आगे नही कहणी क्योंके चतुर आदमी स्त्री आहार पुण्य धन गुण दुराचार मर्म ठर मंत्र ये आठ चीज अपणी ढीपाके रखणी कोइ अजाण आदमी ऊपर लिखी आठ वातोंमेसें पूछे तो झूठ तो नही वोलणा लेकिन् एसा कहणा तुमारे इस वातसें क्या मतलव हे एसा उत्तर जापासुमतिसें देणा राजा गुरु वगेरे वडे आदमी इनमेंकी वात पूछे तो सच २ जेसा होय वेसा कहदेणा क्योंके मित्रोके साथ सच वोलणा ठरतके साथ मीठा वोलणा दुस्मन साथ झूठ

लेकिन् मीठा बोलणा ओर अपणे मालकके
साथ उनोकों अच्छा लगे एसा सच बोलणा
सच बोलणा ये मनुष्यकूं बडा आधारहे कार-
णके सच बोलणेसें विश्वास पेदा होताहे इस-
पर एक दृष्टांतहे दिल्ली शहरमें एक मोहन-
सिंहनामका पारख रहताथा वो बडा सत्य-
वादीथा तथी उमर भीनिं फेल रहीथी बाद-
शाह एकदिन उसकी परिक्षा करणेकूं उस
मोहनसिंहकूं पुछा तुमारे पास कितनाएक ध-
नहे मोहनसिंह बोला में अपणा वहीखाता
संभालके कहुंगा उसनें अपणा वहीखाता सं-
भालकर अरज करी ग़रीबपर मेरेपास आसरे
चोरासी लाख रुपया होगा बादशाह बोला
में थोडा सुणाथा लेकिन इसने तो बहुत कहा
बादशाह प्रसन्न होकर उसकूं पारितोषक देकर
अपणा निज खजाना सोंप दीया सिवाय पुर-
षकूं चाहीये सो कष्ट आपदामें [illegible] करे
इसवास्ते एक मित्र करणा वो संपत तथा
धनमें विपत्तिमें तथा दुःखमें [illegible] सुणाता अ-
पणी बराबरीका बुद्धिमान ओर निर्लोभी होय
[illegible] सिवाय राजाका मित्र बिलकुल
[illegible] होय ना राजाके [illegible] [illegible]

पमणेसें राजापर उपगार नहि करसके ओर राजाका दोस्त राजासें ज्यादा शक्तिवांन होय तो वो राजासें इर्षासे वैर विरोधकर बेठताहे इसवास्ते राजाका दोस्त मध्यम शक्तिवाला होणा चाहीये मित्र एसा होताहे सो आपदा-कू दूर कर विषमवखतपर सहाय करताहे जिस वखतमें सगा भाइ ओर बाप ओर कोइभी स्वजन कांम नही देसकताहे रामचंद्रजी कहतेहे हे लक्ष्मण अपणेसें बमा ओर समर्थकी साथ प्रीति रखणी मुझे रुच तीनही कारण उसके घर जब आप जावे तब तो अपणा कुछ आदरसत्कार होता नही अगर वो जब अपणे मकानपर आवे तब उसकी सब तरेसें हाजरी भरणी पमे ओर धन खरच करणा पमे एसाहे तथापि जब कोइ बमा कांम आय पमे तो बमे अदमी विगर सुधरतानी नही ओरभी हरतरेके फायदेहे क्योंके यातो आप समर्थावान होणा या समर्थकू हाथमें रखणा नही तो कार्य साधनका दुसरा रस्ता नहीहे बमे आदम्योकों चाहीये सो हलके आदमीके संगभी दोस्ती करणा कोइ काम एसा आय गिरताहे सो हलका आदमीसेही निकलणेका होताहे पंचा-

ख्यानमें लिखाहे जंगलमें बंधनमे पडे हुये कबुतरोके बंधन ऊंदरने तुडाये सुईका काम तलवारसें बणे नही मित्रोकूं शुद्ध मनसें जाइ- बंधवोंको सन्मानसें स्त्रीकों प्रेमसें नोकर चाकरकूं दांनसें दुसरे लोकोकूं चतुराईसें वस करणा कोइ वखतपर दुष्ट आदमीकोंनी आग- वाणी करणा पडताहे अपणां मतलब सिद्ध करणेकूं रसकूं चाखणेवाली जीन लगाइ कर- णेकी वखत एसी चतुरहे सो दांतोकों आगे कर- के अपणा काम साधतीहे कांटाहे सो प्रायें दु- खदाइहे लेकिन उस विगर निर्वाह होता नही देखो खेत गाम घर बगीचोकी रक्षावास्ते प्रायें कांटोंकी वाड लगाइ जातीहे जहां प्रीती मोह- बत होय वहां लेणदेणा करणा नही जिस आ- दमीमें मैत्री नही करणी होय उहांही लेणदेणा करणा ढर जहां अपणी इज्जत जाणेका डर होय उहां खडा नही रहणा सोमनीतिमें लि- ख्याहे जहां लेणदेणा ढर सामल रहणा होय वहां लगाड हुये बिगर रहे नही अपणे दोस्त- कोंनी कोइ चीज सोंपणी होय तो गवाही रखे बिगर नही सोंपणी तैसें कोइ चीजवस्त किसीकों देणी होय तो लिखके साथ देणी

नही अगर विश्वास रक्खे तो धनकी हानी नही रक्खे तो अनर्थ होय विश्वासवाला या अविश्वासवालाहो लेकिन् एसा मित्र विरला होगा सो अपणी छुपाकर सोंपी चीजपर लोभ नही करे बमे २ सेठ साहूकारोंकी बुद्धि अस्त-विस्त होजातीहे पराइ जमा जब अपणे घरमें आपमे तो मनमें कहतेहें हे इष्टदेव ये घरवट धरणेवाला मरजावे तो तुझे प्रसाद चढाउंगा जरूरसें धन अनर्थकी जमहे लेकिन् जेसें अग्नि विगर तेसें धन विगर गृहस्थका काम चलता नही इसवास्ते चतुर पुरषोंकों चाहीये सो अग्निकी तरे धनका जावता करे एक धनेश्वर सेठ अपणा सब धन माल वेचकर आठ रत्न एक क्रोममें खरीद कीया किसीकूं खवर नही पमे इसतरेसें अपणे मित्रकूं सोंप दीया पीछे आप धन कमाणेकूं परदेश गया वहां बहोत दिन रहा अंतमे बेमारीके वस मरणे लगा तव लो-कोनें पूछा कुछ समाचार अपणे वेटोसें कहणा होय तो कहदो तव सेठ बोला इहां जो मेनें बहोत धन कमाया सो तो लोकोमें उधार लेणाहे सो तो पुत्रोंकों मिलणा मुसकिलहे ले-किन् एक क्रोमके आठ रत्न मेरे मित्रके पासहे

पासमें होगा जब चोर माल लेकर चले गये सेठ अपणी वस्तीमें आया एकदिन वे सब चोर वहोतसा मालताल लेकर आये तब सेठ उन चोरोकूं वोला हमारे रुपये लाओ चोर वोले हमने कब रुपे लीयेथे आखिरकों लग्ते २ सरकारमें गये हाकम पूछणे लगा कोइ गवा साक्षीहे सेठ वोला एक मीन्नीहे चोर बोले सरकार वणीया सरासर झूठाहे जंगलकी लोंकरीकों मीन्नी वतलाताहे इतना सुणतेही हाकिम समझगया के वणिया सचाहे लेकिन वमा धूर्तहे उसी वखत सेठके सब रुपे दिलवा दिये गवाही एसा काम देताहे किसीमें जमा बिगर गवा धरदी गइहो उर वो बदलगया होय तो धरवट निकालणेकी चतुराइ वेश्या जेसी करणी वो दृष्टांत एसाहे एक पारीक ब्राम्हनके पास दस हजार मोहरेंथी वो किसीका विश्वास करे नही उस गांवके बाहिर एक जोगीकी झूंपमीथी वो बाबा बमानेक उर पेसा नही रखताथा किसीने रोटी लायदी तो खायली नही तो किसीके घर जाता नहीथा अलख २ जपताथा न किसीके पाससें कुछ मांगता कोइ रुपया देता तो लेता नहीथा एक

में क्या करुं इसके लालचसें कोइ मुझें मार जायगा इस बखेरेको दूर रख ज्यों ज्यों ब्राह्मण वहोतही नम्रतासे पांव पकडके आजीजी करणेलगा दुनियामें आगे हाथही धी गिरताहे तब जोगी बोला उस आलेमें इस थेलीकों रखके तालावंध करके कूंची तेरेपास लेजा किसीसें कहणा मत तब वो ब्राह्मण खुस होकर इसी तरेसें धरके चलधरा थोडे दिनवाद योगीने थेली निकालकर विचारणे लगा एक २ मोहरके अगर पचीस २ रुपे वटेगे तो अढाइ लाख होगा होते धन तकलीप पाणा ये वे अक्कलीहे इसवातका कोइ गवा साक्षी तो हेनही यह धन तो मेरा हो चूका एसा विचारकर जोगी अब गृहस्थोसें कहणेलगा वावा एक जोगी यानी लटका हासिल कीयाहे पतवाके तो देखें उन लोकोकें पाससें एक झामसाही पेसा मंगाके वावाजी कुछ जंगलकी पत्तीमें धरके अंगीठीमें पहले मोंहर धर दीया करे ठंभा हुये वाद वो मोहर निकालकर उन गृहस्थोके हाथ विकवाणा सरू करा वावा वोले लो बचा एक मठ तो बनवा डाले नांम रहजायगा अब तो वावेकूं रसाणी किमीयागर जांण-

लंगोटी उर तूंबा चिमटा रखताथा उस ब्राह्म-
णकों तीर्थ जाणेकी जरूरी जइ मनमें विचारणे
लगा वणियोकूं सों पूगा तो खाजायगें कारण
व्याजके लालचसें पहली तो धरणेवाला मांगे
नही देवाला निकाले वाद वणिया देता नही
इय वात दुनियांमे मसहूरहे ॥

दुहा—केंताकवहुनकीजिये वणिकपुत्रविसवास ॥
धीरजादेकेधनहरे रहेदासकोदास ॥ १ ॥

दुसरे भेषधारी षट्दर्शनवालेकी जमातो
बहोतही राजीपेकेसाथ हजम करताहे निहूंता
देदेके चंगेमाल खिलाताहे उस लालचमें ब्राह्म-
ण उर भेषधारीकी जमा जाते रहतीहे एसा
विचार करते बडे त्यागी वेरागी जोगी फक्कड़
याद आया मनमें विचारा ये वावा कोडीभी
नही छीपताहे एसा विचार वावेजीके पास
एकांतमे जाके वोला वावा साहिव वडी मह-
रवानी होगी में आपकी कृपासे च्यारों धाम
फिर आउं अगर ये आपके पास धरलो तो ये
वडा आसान होगा आप तो परमार्थ साधते
हो दुसरे लोभी साहूकारोका मुझे भरोसा
नही आता आप निस्पृही इस सोनेको धूल
मट्टी समझतेहो तव योगी वोला चल २ इहांसे

में क्या करुं इसके लालचसें कोइ मुझें मार जायगा इस वखेमेको दूर रख ज्यों ज्यों ब्राह्मण बहोतही नम्रतासे पांव पकमके आजीजी करणेलगा दुनियामें आमे हाथही घी गिरताहे तब जोगी बोला उस आलेमें इस थेलीको रखके तालाबंध करके कूंची तेरेपास लेजा किसीसें कहणा मत तब वो ब्राह्मण खुस होकर इसी तरेसें धरके चलधरा थोमे दिनबाद योगीने थेली निकालकर विचारणे लगा एक २ मोहरके अगर पचीस २ रुपे बटेगे तो अढाइ लाख होगा होते धन तकलीप पाणा ये बे अक्कलीहे इसवातका कोइ गवा साक्षी तो हेनही यह धन तो मेरा हो चूका एसा विचारकर जोगी अब गृहस्थोंसें कहणेलगा बाबा एक जोगी यानी लटका हासिल कीयाहे पतवाके तो देखें उन लोकोंके पाससें एक ऊामसाही पेसा मंगाके बाबाजी कुछ जंगलकी पत्तीमें घरके अंगीठीमें पहले मोहर धर दीया करे ठंमा हुये बाद वो मोहर निकालकर उन गृहस्थोके हाथ विकवाणा सरू करा बाबा बोले लो बचा एक मठ तो बनवा माले नांम रहजायगा अब तो बावेकूं रसाणी किमीयागर जांण-

लिया लोकोसें पूछा जोगीबावा कहा लोकोनें इसारेसें बतलाया तब नजीक जाकर धीरेसें बोला महाराज अच्छे हो जोगी बोला तुम कोणहो कहांसे आये क्यां नांमहे ओर क्या कामहे तब ब्राह्मन बोला महाराज में वो ब्राह्मनहूं जोकी दश हजार मोहरे धरगयाथा ये बात सुणतेही बावेजी बोले अरे इस भूखे ब्राह्मनकों सेर आटा देकर बाहर निकालो एसे भिक्षुकोकों मेरेतक अंदर केसें आणे देतेहो एसा कहता उठके अंदर चलागया इतनेमें नोकर आके ब्राह्मनकूं बोला लेजा सेर आटा हुकमहे बावेजीका ब्राह्मन तो मूर्च्छा खाके जमीनपर गिरगया नोकरोनें उठाकर बाहिर चोकीपर धरदिया जब जाग्रत हुआ तब हाय मोहरें २ करता फिरणेलगा मनमें विचारणेलगा गवा साक्षी विगर सिरकारभी तो सुणेगी नही दुसरे सब लोक मुझें झूठा कहेगें मेरी कोण सुणेगा क्या करूं कहां जाउं हा विधाता मेरी वे अक्कलीका फल मुझकों मिला एसा वो ब्राह्मन निरास दिवानेकी तरे बोलणेलगा एसे फिरतेकूं एक वेस्याने देखा तब उस ब्राह्मनकूं बुलाके वहोत धीरज ओर दिलासा देकर पूछा

विधाताका कोप होताहे तब रसायण जूवा फाटका अंजनसिद्धि ओर यक्षणीकी गुफामें प्रवेश करणेकी बुद्धि होतीहे जो आदमी मंदिरकी धर्मकी सची या झूठी सोगन खातेहे उसका बोधबीज जाते रहताहे ओर अनंत शंशार रुलताहे किसीकी जमानत नही देणी कारण जमानतभी एक आपदाहे ये पांच चीज आपदाका कारणहे घरमें दलद्री होकर दो ओरत रस्तेपर खेत जमानत देणी गवाही भरणी ओर दो तरेकी खेती विवेक पुरषोंको चाहीये सो वणे जहांतक जहां रहता होय वहांही व्यापार करणा जिस्सें स्वजनोसें विछोहा नही होवे धर्मभी अछी तरेसें वण आताहे जो आजीविका नही होती दीखे तब तो परदेस जाणेकी तकवीप उठावे कृष्ण कहतेहे हे अर्जुन दलद्री रोगी मूर्ख मुसाफर ओर हमेसां पराइ नोकरी करणेवाला ये जीतेभी मरे जेसेहें एसा समझणा जो परदेस जांणेकी जरूरी होय तो आप अथवा अपणे लडकोंसें परदेसमें व्यापार नही करवाणा अपणे परीक्षावंत खातरीदार मूनीमसें व्यापार चलाणा कोइ कारण योगसें परदेस जाणा पडे तो अच्छे

विधाताका कोप होताहे तब रसायण जूवा फाटका अंजनसिद्धि ओर यक्षणीकी गुफामें प्रवेश करणेकी बुद्धि होतीहे जो आदमी मंदिरकी धर्मकी सच्ची या झूठी सोगन खातेहे उसका बोधबीज जाते रहताहे ओर अनंत शंशार रुलताहे किसीकी जमानत नही देणी कारण जमानतभी एक आपदाहे ये पांच चीज आपदाका कारणहे घरमें दखडी होकर दो ओरत रस्तेपर खेत जमानत देणी गवाही भरणी ओर दो तरेकी खेती विवेक पुरषोंकों चाहीये सो वणे जहांतक जहां रहता होय वहांही व्यापार करणा जिस्सें स्वजनोसें विजोहा नही होवे धर्मनी अछी तरेसें वण आनाहे जो आजीविका नही होती दीखे तब तो परदेस जाणेकी तकलीप उठावे कृष्ण कहतेहे हे अर्जुन दखडी रोगी मूर्ख मुसाफर ओर हमेसां पराइ नोकरी करणेवाला ये जीतेजी मरे जेसेहें एसा समझणा जो परदेस जाणेकी जरूरी होय तो आप अथवा अपणे लडकोंसें परदेसमें व्यापार नही करवाणा अपणे परीक्षावंत खातरीदार मूनीमसें व्यापार चलाणा कोइ कारण योगसें परदेस जाणा पडे तो अच्छे

नकी सफलता होनीहे धर्मके सात क्षेत्रोमें धन लगानेका मनोरथ करणा जोकी धन पेदा करते आरंभ करणा पडे उसकी निवृत्तिके वास्ते विवेकी आदमीकों चाहिये सो नित्त बडे २ मनोरथ करता रहे कारण मनुष्यकी बुद्धि जेसी अपणी तकदीर होय उसही तरेकी काम करणेका यत्न करताहे धन काम ओर यश ये तीनोका कीया हुवा यत्न वाजेवखत निष्फल होताहे लेकिन् धर्म कांम करणेके मनोरथ खाली नही जातेहे जीर्ण सेठकी तरे जब धनकी वृद्धि होय तब धर्मकामकेवास्ते पहली कीया हुवा मनोरथ सफल करणा चाहीये क्योंके उद्यमका फल धन धनका फल सुपात्रोकों दान देणा जो अगर सु[illegible] दांन नही करे तो लक्ष्मी ओर उद्यम दो[illegible] का-रण होनाहे सुपात्रोके [illegible] ताहे धर्ममें लगाइ जा[illegible] लगाइ जाय सो भोग [illegible] [illegible]के काममें नही लगे [illegible] [illegible] कहलातीहे पूर्व [illegible] [illegible] आगृ [illegible] [illegible] इस

ब्राह्मण एक रजपूत एक वणिया एक सुनार ए च्यारजणे आपसमे दोस्तथे वो च्यारोंही धन कमाणे परदेस चले रातकूं एक उद्यानमें रहे उस जगे रातकूं दरखतके सोनेका पोरसा लटकता देखा च्यारोंमेंसें एक बोला धनहे तब स्वर्ण पोरसा बोला धन अनर्थका मूलहे तब तीनोनें तो उसका लालच छोड दिया लेकिन् सुनार बोला नीचे गिर तब स्वर्णपुरष नीचे गिरा तव सुनार उसकी अंगली काटली वाकीके स्वर्णपोरसेंको खड्डेमें नाखदिया पीछे उन च्यारजणोंमेंसें दो अदमी खानपान लाणेकों गांममें गये अंर दोजणे वाहिर रहे तव गांममें गये सो जहर मिलाके खांनपांन लाये मनमें विचारा वो दोनों इसके खाणेसें मरजायगें तव पोरसा अपणे दोनोंके रहजायगा उधर उन दोनोने विचार कीया वो जव सहरमेंसें आवेगें तव उनोकों तलवारसें मारनाखेगें तव ये पोरसा अपणे दोनोंके रहजायगा आखिरकों उन दोनोंकों उनोनें शस्त्रसें मारदिया अंर वो दोजणोनें उनोकों मारके मिठाइ खाइ सो वोनी दोनुं मरगये ये पापऋद्धि कहलातीहे इसवास्ते हमेसां देव अरिहंतका पूजन अन्नदान वगेरह



तेजी आइ सो देवसेठके मालमें चोगुणा लान होगया अन्यायके धनका एसा हाल देखकर श्रावक व्रत यशनेनी अंगीकार करा इस तरेसें न्यायसें कमाया धनका अगर दांनजी लीया जाय तो लेणेवालेके वहोत वढोतरी होतीहे इसपर दृष्टांतहे चंपा नगरीमें सोमनामे राजा था उसनें अच्छे पर्वपर दांन करणेकूं वहोत धन जमा कीया तद पीछे अपणे प्रधानकों पूछा अहो मंत्री दांन लेणेवाला सुपात्र चाहीये तब मंत्री बोला इस नगरीमें एक ब्राह्मणहे लेकिन हे स्वामी न्यायोपार्जित धन मिलणा मुसकिलहे तेसेंइ सुझमनवाला उर योग्य उर गुणवान एसा पात्र ये दोनोका योग मिलना तो वहोतही कठणहे तब सोमराजा न्यायसें धन कमाणेकी इच्छासें भेप बदलकर कोइ नही पहचाणे इस मुजब वणियेकी दुकानपर जाके मजूरी करके आठ मोहरे कमाइ पर्व आणेसें सब विप्रोकों निहुंता दीया उस सुपात्रकों नहुंता देणे मंत्रीकूं नेजा तब वो ब्राह्मण बोला हे मंत्रवी जो ब्राह्मन लोनके वश राजासें दांन ले वो तमिस्रा घोर नर्कमें पड़के दुखी होय राजाका दांन सहृतमें जहर मिला जेसा हे वख-

तपर चाहे पुत्रका मांस खावे सो श्रेष्ठ लेकिन् राजापास दांन नहि लेणा चक्रवर्तपास दांन लेणा दस हिंसा समान ध्वजकेपास दांन लेणा हजार हिंसा समान राजापास दांन लेणा सो दश हजार हिंसा समान एसा स्मृतियोंका तथा पुराणोका वचनहे इसवास्ते में राजदांन नही लेउंगा तव मंत्री बोला हे साक्षात् ब्रह्ममूर्ति आपकूं निजन्यायसें पेदा किया धनका दांन देगा इसवास्ते उसमें कुछ दोप नही इत्यादिक वचनोसें समजायकर मंत्री राजाकेपास लाया राजा उसकूं निजासन दीया पगधोकर विनयसें पूजा करी वो आठ मोहर दक्षिणा तरीके कोइ नही देखे इस मुजब मूठीमें दांन दिया दुसरे ब्राह्मण इस स्वरूपकूं देख मनमें गुस्से हुये राजाने इसकूं कोड सार पदार्थ देदीया पीछेसे राजा वहोतसा धन दुसरे ब्राह्मनोकों देदेकर खुस कीया राजका दीया धन उस विप्रोके थोरे दिनोमें खूट गया सव ब्राह्मनोके लेकिन् वो आठ मोंहरे तो खाते खरचते जन्मभर उस ब्राह्मणके अखूट होगया जेसें खेतमें बीजवृद्धि होय तेसें न्यायसें पेदा कीया धन उर सुपात्र दांन इसके

सें खरीदकर क्रोमो सोनइये लगाकर मंदिर बनवाया जिस मंदिरकों तोमणेंको उरंगजेब मुसलमीन बादशाह चढा जबके मंदिरकी कोरणीकी रमनक देखी तब हाथमें जो गुरजथा सो तूटगया उर कहणेलगा श्रय परवर दिगार में इस श्रइमारतको हरगिज नही तोमसकता करवाणेवाले उर कारीगरोकों कहांतक खूबी दीजाय बमे २ अंगरेज उस मंदिरकी छिब देखकर यह कहतेहे अगर सब मुल्कका धन इनाममें दीया जाय तोजी इस जिन मंदिरकी नकल नही कोइ वणासकता तो अनेक पापारंजसे अनुचित काम करके जमा कीया धन धर्मखाते नही लगावे तो इस जवमें श्रपयश उर परजवमें नरक पमणा होताहे जिसपर मम्मणसेठका दृष्टांत जाणणा ४ अन्यायसें पेदा कीया धन उर कुपात्र दांन यह चोथा जंगहे जिसकरके मनुष्य धिकारणे लायक होतेहें विवेकीयोकूं जरूर छोमणा चाहीये जेसें गायकूं मारके कऊवेकूं पोषणा जेसें श्रन्यायके कमाये धनसें श्राद्ध करतेहे उस कर्मसे चंमाल निल्ल एसी हलकी जातमें जन्म लेणा होताहे जेसें विद्यमानकालमें तेरा पंथीमतके ढूंढक गुरु



२ भाईसंबंधी ३ स्त्रीसंबंधी ४ पुत्रपुत्रीसंबंधी ५ सगेस्वजनसंबंधी ६ वर्मे लोक संबंधी ७ सहरके रहणेवाले लोक संबंधी ८ जैमेड अन्य दर्शनीसंबंधी ९ ये नव उचिताचरणा सब मनुष्योंकोंकरणा वा जिन है पिताकी नक्ति मनवचन कायासें करणी चाहिये वापकी शरीर शेवा चाकरकी तरे आप [illegible] पग धोणा दाबणा वृद्ध अवस्थामें उगाणा वेगाणा देश उर कालके माफिक उनोंकों नोजन कराणा बिछावणा वस्त्र गहणा वगेरे वस्तु देणा कोइके कहणेसें तिरस्कार अपमांन नहीं करणा पुत्र आपणे बापके सामने वेगा जेसा शोनापाताहे वेसी शोनाका सो माहिस्सा उंचे सिंहासण वेगणेसें कनी मिलणेका नहीं बापके वचन मुंसेंसे निकला तेही उग लेणा चाहिये जेसें राजा [illegible] लोके वचन रामचंद्रजीनें पिताका वचन पालणेकूं वनवास पधार गये वेसें सपूनोंकों करणा चाहीये जी हजूर जो हुकम अनी करताहूं एसी मुजवही कबूल करणा लेकिन् आनाकानी सिर धूणना अथवा बहोत देर लगायकरके काम करणा अथवा अधूरा काम छोडदेणा इत्या- [illegible] नहि करणी इनोंसें परंद पडे

मनोरथ नर्ही करणा इसमेंसी देवपूजा गुरुवन्द
धर्म सुणना व्रत पच्चक्खान करणा व आवश्य
कर्म करना ... ... धन लगाणा तीर्थ
यात्रा करणी ओर दीन दुखी अनाथोंकूं परवरि-
स करणा ये धर्म मनोरथ पिताके अच्छे धर्म-
गमें पुरा करवाणा कोइनी नरे मातापिताके
उपगारका ... ... सकता लेकिन
अपने बमेरे गुरु लोकोंकों केवलीका कहा स-
म्यक्के विषे जोमे विगर ओर उपाय उनके
बदला उतारणेका नहीं ... ... फरमाहे
तीन अदमीका उपगार उतर ... ... फरमाहे
माबापका १ धणीका २ ओर धर्माचार्यका ३
कोइ अदमी जावजीवतक प्रभातसमें अपने
माबापकूं शतपाक सहस्रपाक तेलसेती मालिस
करे सुगंध पीठीमसले गंधोदक गरम पाणी ...
पाणीसें स्नान करावे गहणे पहरावे सुशोभित
करे भोजन शास्त्र मुजब रांधकर ... जाणिके
शागयुत मन माफक अन्नादि ... ओर
यावज्जीव खंधे उठाये फिरे ...
उपगारका बदला पूरा नहि ...
... वो पुरष केवली भाषि ...
... उतरायकर ...

हजार गुण अधिक माताहै जांनवर जहांतक दूध पीणा होय उहांतकही मां मांनतेहै अधम पुरष जहांतक स्त्री नहि मिले उहांतकही मा मानतेहै मध्यम पुरष घरका कामकाज उस माताके हाथसें चलता होय उहांतकही माकूं मांनतेहै ओर उत्तम पुरष तो यावज्जीव मांनतेहै जांनवरोकी माता पूत्रकूं जीता देखके संतोष पातीहै मध्यम पुरषोंकी माता पूत्रकी कमाईसें सुखी होतीहै उत्तम पुरषोंकी माता पूत्रका सूरवीरपणाका काम देखके खुस होतीहै ओर धर्मात्मा पुरषोंकी माता पूत्रका उत्तम आचरणसें खुस होतीहै २ अब भाइ संबंधी उचिताचरण कहतेहै अपणे सगेभाईकूं अपणी मांफक जाणना छोटे भाईकूं वडे भाईमाफक गिणना क्योंके वडा भाइ बाप बराबर होताहै जैसें श्रीरामचंद्रजीकूं लक्ष्मण खुस रखताथा तैसेंइ शोक माका अथवा सगीमाके भायांके संग वर्तावा रखणा भायोकी मरजीमाफक चलाणा भायोंकी स्त्री पूत्र वगेरे लोकोंनेभी उचित आचरण ध्यांनमें रखणा जुदा भाव नही दिखावे मनका अभिप्राय कहे पूछे उनोकूं व्यापारमें लगावे भायोंसें थोमाभी धन व्यापारमें

ज़ार गुण अधिक माताहे जांनवर जहांतक ूध पीणा होय उहांतकही मां मांनतेहे अधम ुरप जहांतक स्त्री नहि मिले उहांतकही मा ानतेहे मध्यम पुरप घरका कामकाज उस ाताके हाथसें चलता होय उहांतकही माकूं ांनतेहे उर उत्तम पुरप तो यावज्जीव मांनतेहे जांनवरोकी माता पूत्रकूं जीता देखके संतोप ातीहे मध्यम पुरपोकी माता पूत्रकी कमाईसें सुखी होतीहे उत्तम पुरपोंकी माता पूत्रका सूरवीरपणाका काम देखके खुस होतीहे उर .मोत्मा पुरपोंकी माता पूत्रका उत्तम आच- रणसें खुस होतीहे २ अब जाइ संबंधी उचि- ताचरण कहतेहे अपणे सगेनाईकूं अपणी मां- फक जाणना छोटे जाईकूं बमे जाईमाफक गिणना क्योंके बमा जाइ बाप बराबर होताहे जेसें श्रीरामचंद्रजीकूं लक्ष्मण खुस रखताथा तेसेंइ शोक माका अथवा सगीमाके जायोंके संग वर्त्तावा रखणा जायोंकी मरजीमाफक च- लाणा जायोंकी स्त्री पूत्र वगेरे लोकोंनेजी उचित आचरण ध्यांनमें रखणा जुदा जाव नही दि- खावे मनका अजिप्राय कहे पूछे उनोकूं व्यापा- रमें लगावे जायोंसें थोमाजी धन व्यापारमें

न लोकोंके थोमीसी बातमें दिलमें फरक
पाताहे ओर लोकोंमें अपकीर्ति होतीहे इसीतरे
ओर लोकोंसेंजी उचिताचरण जिसके जेसा
योग्य होय वेसा ध्यानमें रखणा जेसेंके पेदा
करणेवाला १ पालणेवाला २ विद्याका सिखा-
णेवाला ३ अन्न वस्त्र देणेवाला ४ ओर अपणे
जीवकूं बचाणेवाला ५ ये पांच पिता कहला-
तेहे राजाकी स्त्री १ गुरुकी स्त्री २ सासू ३ ओर
जन्मदेणेवाली ४ ओर धाय माता ५ ये पांच
माता कहलातीहे सगा जाई १ संगमे पढणे-
वाला २ मित्र ३ मांदगीमें बंदगी करणेवाला ४
ओर रस्तेमें बातचीत करणेसें हुवा सो मित्र ५
ये पांच जाइ कहलातेहे जाइयोकों चाहीयें सो
एक एककूं अच्छी तरेसें धर्म करणी याद कराणा
चाहीये जो पुरप प्रमादरूप अग्निसें सिलगे
हुये शंशाररूप घरमें मोहरूप नींदमेंसें सूतेंकूं
जगावे वो उसका परम बंधु कहाताहे जायोंकी
आपसमें प्रीतिपर जरतका दूत आणेसें ऋषज
देवके अठाणवे पूत्र जगवानकूं पूछणेगये उनोका
दृष्टांत जाणना इसतरे जाईका उचिताचरण
जाणना ३ अब जार्याके संग उचिताचरण लि-
खतेहे मनुष्यकूं चहीये सो स्त्रीका अच्छीतरे

करणा चुगना फटकाणा कूटणा पीसणा वस्त्र सीणा कसीदा निकालणा कलाबतू कनारी गोटे वगेरेके गोखरू अलमास चंपा लमी नाका कसणा बणाणा गहणा पोणा गाय दूहणी दही जमाणा विलोणा करणा नोजन पाक वगेरे सब तरेकी तयारी बणाणी जिसकूं जेसा लायक एसा पुरुसारा करणा नाग्यवानकी स्त्रीयां अगर आप नही करे तो नोकरणी दासी अथवा सूपकारादिकसें निगें दासीसें करवाणा अपणे लायक होय सो आप करणा सासू सुसरा नर्त्तार नणद जेठ देवर वगेरेका विनय साचवणा इस वजेसें अनेक किसम कुलबहूउंका कृत्य जांणना जो घरका पति इनकामोमें स्त्रीयोकों नहि लगावे तो उरतें हमेसां उदास रहतीहे उर स्त्रीके उदास रहणेसें घरका काम विगमताहे डुसरे उरतका स्वनाव चपल होताहे सो निकम्मी रहणेसें विगमतीहे स्त्रीकूं देखणेसें वातचीत करणेसें उसके गुणकी तारीफ करणेसें उसके [illegible] चीजोके देणेसें उर मनमुजब चलणेसें [illegible] ऊपर [illegible] प्रेम जमताहे [illegible]

करणा चुगना फटकाणा कूटणा पीसणा वस्त्र सीणा कसीदा निकालणा कलाबतू कनारी गोटे वगेरेके गोखरू अलमास चंपा लमी नाम्ना कसणा वणाणा गह्वाणा पोणा गाय दूहणी दही जमाणा विलोणा करणा भोजन पाक वगेरे सब तरेकी तयारी बणाणी जिसकूं जेसा लायक एसा पुरसारा करणा भाग्यवानकी स्त्रीयां अगर आप नही करे तो नोकरणी दासी अथवा सूर्पकारादिकसें निगें दास्तीसें करवाणा अपणे लायक होय सो आप करणा सासू सुसरा नणद जेठ देवर वगेरेका विनय साचवणा इस तरेसें अनेक किसम कुलवहूर्ओका कृत्य जांणना जो घरका पति इनकामोमें स्त्रीयोकों नहि लगावे तो उनतें हमेसां उदास रहनीहै उस स्त्रीके उदास रहणेसें घरका काम बिगमताहै दुसरे उनतका स्वनाव चपल होताहै सो निकम्मी रहणेसें विगमतीहै स्त्रीकूं देखणेमें वातचीत करणेसें उसके गुणकी तारीफ करणेसें उसके मनमानी चीजोके देणेसें उर मनमुजब चलणेसें पुरषके ऊपर मजबुत प्रेम जमताहै एसा श्री उमास्वातिवाचक प्रशमरति ग्रंथमे लिखतेहै पुरषोंकूं चाहीये सो पिसाचका

कोई कारण योगसें दो स्त्री परणे तो दोनोंके पुत्रोंपर सम दृष्टि रखे उनोंमेंसें किसीका वारा खंडित नहीं करणा जो स्त्री अपणी सोकका वारा खंडित करके मैथुन सेवे उसके चोथे व्रतमें अतीचार लगे उत्तरोमें हमेसां नरमायस रखणा कारण बहोत गुस्सेमें आणेसे प्राण घाततक कर देवती है उस विना नरमायस ... करती है जो कती घरकी स्त्री निर्लज्जी ... तो बहोतही सम-झदारीके ... देहमें जीवके ... समझणा गृहणीहि ... स्त्री ... हाथोंमें धन ... देहमें वान ... में कहकर आवक ... उर्के कहणेमें राजदेवती ... एसा दृष्टांतहै रूमके बादशाहने दिल्ल ... दशाहमें च्यार चीजें मगवाइ गादीरा ... सराइ दूना अमल ... अमल ... तिसकी अगम्य वह दृष्टांत ... अर्थी ... ठ मूलमहीं नहीं

कोइ कारण योगमें दो स्त्री परणे तो दोनों
पुत्रोंपर सम दृष्टि रखे उनोंमेंसें किसीका वार
खंडित नहीं करणा जो स्त्री अपणी सोकका
वारा खंडित करके मैथुन सेवे उसके चौ
थाव्रतमें अतीचार लगे उत्तमोंमें हमेसा नरमाय
प रखणा कारण बहोत गुम्समें आणेसे प्राण
[illegible] नरमाय
[illegible] करनी है जो करनी धर्मकी
[illegible] नो बहोतही सम
[illegible] देखा
[illegible] समकरण
[illegible] स्त्री मुखसें
[illegible] स्त्री पेटके
[illegible] वगेरे
[illegible] औ-
[illegible] वा-
[illegible] जिसपर
[illegible] वा-
[illegible] गया
[illegible] समअमलदारी
[illegible] सब होते
[illegible] अच्छे

उसकी उरत पढी हुइ चतुर उर रूपवंत पद्मनी या चित्रनी वह उत्तम स्त्री कहलातीहै समझ-वार उरत तो घरमें मुकत्यारी करे तो फेरनी केइ वातोसें खुबसुरतनीहै लेकिन् जिस घरमें प्रायें उरतोका चलण होताहै वो घर मट्टी मिलजाताहै सरकारी दुश्मनी होताहै इसवास्ते चतुरोंकों चाहीये सो विगर विचारे घरमें उर-तोकों मुख्य नही करे जिसपर एसा दृष्टांतहै एक जुलाहे कपडे बूणनेवालेके घरमें स्त्री मु-कत्यारथी वो जुलाहा एकदिन वस्त्र बुणनेके उजारकेवास्ते लकडी लाणेकूं जंगलमे गया एक सीसमके दरख्तकूं काटणेलगा उसका अधि-ष्टायक कोइ व्यंतर बोला मतकाट तोभी जुला-हा माना नही साहसकर काटणेलगा तब इस-का सत्व देखके व्यंतर प्रसन्न होकर बोला वरमां-ग जो मांगेगा सो दूंगा वह जुलाहा स्त्री लंपट-था बोला मेरी उरतसें पूछके वर मांगूगा फेर स्त्रीकूं जाके पूछा तब वो उरत तुच्छ स्वभावकी-थी इसवास्ते उसके यादमें एसी बात आइ ॥ श्लोक ॥ प्रवर्द्धमानपुरुष स्त्रयाणामुपघातकृत् पूर्वोपार्जितमित्राणां दाराणामथवेश्मनाम् ॥ १ ॥

अर्थ–जब पुरषकूं लक्ष्मी बढेतब मिलजानी

हे तब पुरुष पुराणे [illegible] उनके और पुराणे [illegible] विचार करके [illegible]में [illegible] लेकर क्या करोगे [illegible] वर मांगो सो दो हाथोंके च्यार सो हाथ हो जावे और दो सिर होजावे पेट [illegible] जब च्यार हाथ होयगा तब [illegible] [illegible] स्त्रीकी स्वार्थता [illegible] तुमने वे- [illegible] बनादिया [illegible] देव- [illegible] मारको- [illegible] [illegible] [illegible] आ- ताहे बुद्धमान स्त्री होय तो [illegible] न- [illegible] देखी [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

एसी स्त्रीके संग अपणी स्त्रीके प्रीति करावणी
ऊरत वेमार पमे तो उसकी दवा दारु पथ्य
गेरे करे लेकिन् उसकूं सूगाके वे वजे छोमणा
नहीं तपस्या ऊजमणा दांन देवपूजा तीर्थ
यात्रा वगेरे धर्मकृत्यमें उमंग वधाकर धनकी
मदत देकर सहाय करणा लेकिन् अंतराय
नहि करणा कारण स्त्रीके पुन्यमें पुरपका हिस्सा
प्रतक्ष प्रमांणसेहे धर्मकृत्य कराणा यही परम
पगारहे ऊर जब उपगारहे तब तो पुन्यमें
जाग निश्चेहे ४ अब पूत्रके संबंधमे पिता सं-
बंधी उचिताचरण कहतेहे पिताकूं चाहीये सो
पुष्टिकारक अन्नादिक ऋतुपथ्य मुजब खिलावे
वालकके मनमाफक फिरावे धिरावे तरे २ के
खिलोणे देकर कलाकुशल करे वालकपणेमें जो
शंका करके दूवला सरीर रहे तो वोजवानीमें-
भी कमजोर होताहे चाणक्य कहताहे पुत्र
पांचवर्षका होय जहांतक लाम लगाणा तदपीछे
धमकीसें पढाणा खाणे पहरणेका लाम रखणा
एवं दसवर्ष बाद मारपीटके साथभी हितशिक्षा
ऊर विद्याभ्यास कुलाचार सिखाणा सोले वर्ष
बाद मित्रकी तरे पिताकूं वर्त्ताव पुत्रसें करणा
देव गुरु धर्म सुखी स्वजन इनोके संग हमेसा

खातमाली आगे दोनुं जोमोका संयोग दुरस्त नही एसा समझ उन चोरोने वो रूपवांन स्त्री रूपवान पास सुलायदी कुरूप कुरूपके पास धरदी रूपवंत दोनों दिलमें उदासथे उन दोनोंके तो मनकांमना पूरी नई लेकिन् विदरूप वणिया प्रजातसमें एसा हाल देखकर राजा जोजसें फरियादकी तब राजा सहरमें ढंढोरा पिटवाया ये काम किसने कीया ओर क्यों कीया करणेमें क्या फायदा देखा मेरे सांमने जाहर होवे तब चोरोने आकर कहा गरीब परवर आग हंसका जोमा जो विधाताने नूलके करदीयाथा सो नूल हम चोरलोकोने सुधारदी रत्नसें रत्न मिलादीया यह बात राजा सुणके हुकम दीया यह इनसाफ ठीकहे पुत्रकं हमेसां पेदास खरच करणेका घरकांममें लगाणा जो लायक होय तो घरकी मुकत्यारी सोंप देणी क्योंके हमेसां घरके फिकरमें रहणेसें इच्छा चारी तथा मदोन्मत्त नही होताहे वली तफलीफसें धन कमाणा पमताहे इस वातका जाणकार होजाय तब धन नही ऊमाताहे छोटी उमरमें इसमेही प्रतिष्टित इज्जतदार कहलाताहे जेसें राजगृही नगरीका प्रसेनजित राजा अपणे

[illegible] श्रेणिक
[illegible] नें
[illegible] वगैरे, व
[illegible] जाणता जैसें यत्नासेत त्या
गें बेटेकी वहुकी परिक्षा करणेकूं पहली उज्झि
ताकें [illegible] चावलके दाणे दिये उसनें
फेंकदिये दुसरेकी वहु भोगवती नें उस दा
[illegible] खाई रक्षिता यतनसें रख छोड
चौथेकी व[illegible] उसनें उनसें खेतमें बोवाके क
वोंका ढेर [illegible] उसमें तीसरे बड
[illegible] सुस-
रेकूं [illegible] झाडू बु
हारू करणेका काम सोंपा दुसरेकू रांधणेका
काम सोंपा तीसरीकूं खजाना सोंपा वगेरे वग
[illegible] काम सोंपा [illegible] ख्वा-
हिर करीया मोहूर वगेरे माप। ऐसे त्यारो-
हीमें जो जो गुणथा वेसाही उनोनें ग्रहस्था-
श्रममें उन्नतीकर दिखलाइ बापकूं चाहीये पु-
त्रकेरूबरू तारीफ नहीं करे कारण फेर उसकी
लायकी ओर गुण वढने नहीं अभिमानमें आ-
जाताहे कदास लरका जूआ या चोरी या
रंडीबाजी नसाबाजी पेटीपणा वगेरे कुलक्षण

तीखजावे तो उस कामोसें धनका नास बेइ-
ज्जती राजदंड होताहे इत्यादिक दुर्दसाकी
वातोके दृष्टांत सुणावे जो लडका अक्कलवाला
उर तकदीरवाला होय तो जरूर विसनोंसें वच
जाताहे रोकडकी कूंची लडकेकूं सोंपे तो आवंद
खरच उर हिसाब हमेसां संभाल लेवे उसकरके
मनोमती नहि होसके गुरूकी तारीफ सामनें
करणी भाईकी उर दोस्तकी तारीफ पिछाडी
करणी चाकरकी दासकी गुमास्तेकी तारीफ
अच्छा कांम करचूके तब करणी स्त्रीकी तारीफ
मरे वाद करणी पुत्रकी तारीफ तो बिलकुल
करणीही नहीं जो करणी तो पीछाडी करणी
जबकी विना तारीफ कीये सरे नही तब लड-
केकूं राजसभा दिखलाणी क्योंके कोइ कर्म-
योगसें अणचिंता संकट आपडे तो कायर होके
घबराता नहीहे बडे २ राजमान्य पुरषोंके संग
मोहबत करणेसें बहोत फायदाहे जेसेंके धन-
वानके दुस्मन बहोत होतेहे दूरतरेसें जालसा
पटकतेहें इसवास्तें राजवर्गीयोसें धनका फाय-
दा नही होवे तो अनर्थ तो जरूरही मिटा
सकतेहे परदेसकी रीतभांतसें लडकेकूं जरूर
वाकिफ करदेणा चाहीये क्योंके जब परदेशके

जातेहे उनोके संगभी उचिताचरण रखणा अपणे घरमें पुत्रजन्म तेसें विवाह सगाइ वगेरे मंगलीक कामोंमें उनोका हमेसां सत्कार करणा तेसेंही उनोंके नुकशांन वगेरे पमजावे तो उनोंकों अपणेपास रखणा स्वजनोंमे संकट आपमे तव अथवा उनोके घर उच्छव होवे तव उनोके इहां आप जाणा रोगाग्रस्त अथवा धनहीन होजाय तो उनोका उद्धार करणा मित्र उर स्वजन वोही कहलाताहे जो रोगमें आपदामें डुकालमें संकट आपमे तव राजद्वारमें उर स्मशानमें जो संग रहे उर छेहनही दिखावे सो वंधव कहताहे स्वजनोका उद्धार करणा वो अपणाही उद्धार समजणा कारण लक्ष्मी चंचलहे अरटकी घमनालकी तरे भरी उर खाली होजातीहे तेसेंही पैसेवाला दलद्री उर दलद्री तालेवर होजाताहे इसवास्ते जिसकूं सहाय आपने कीया होय वखत पमणेपर जरूर वो अपणी सहाय करताहे स्वजनोकी परपूठ निंदा नही करणी उनोके संग मस्करी वगेरेमेंभी विगर कारण सूका वाद नही करणा कारणके वाद-विवादमें वहोत दिनोंकी प्रीती तूटजातीहे स्वजनोके शत्रुके साथ दोस्ती नही करणी स्वज-

नके मित्रोंके साथ मित्राइ करणी स्वजन घरमें नहीं होय तुर उनकी इकेली स्त्री घरमे होय तो एकेला नहि जाणा स्वजनोंके संग उधार-का धंदा देस काल नाव सोचके करणा देवका या गुरुकाया धर्मका काम होय तो उनोंमें सजनोंके संग एक दिल होणा दोस्तीकी जगे तीनकाम नहि करणा वादविवाद उधारपार उनके नहीं रहणेमें उनकी स्त्रीके संग बात [illegible] करणी सगाइके काममेंती जब [illegible] एक दिल होताहै तब [illegible] चित्त सं-[illegible] निश्चेही एक दिल करणेस [illegible] धर्म-काम तो [illegible] सज-नोंके [illegible] हटानहै पहली अगुली पासकी अगुली तर्जनी सो लिखणेमें चित्राम करणेस और नीजकं दिखाणेमें चीजोंकी नासिका करणेमें चिमटी ब-जाणेमें अगवाणीहै इसवास्ते अहंकारस आकर मध्यमा जो विचली अंगुलीहै उसकु पूछणे लगी तेरेमें क्या गुणहै तब मध्यमा बोली मै सब अ-गुलीयोंमें मुख्यहुं बडीहु बीचमे रहतीहु तथी

गीत ताल वगेरे कलामें कुशलहूं कामकी जल दीपणा बताणेकूं अथवा दोप ठल वगेरोका नास करणेकूं चिमठी वजातीहूं टचकारासें शिक्षा करतीहूं एसेंइ तीसरी अंगली अनामिकाकूं पूछा तब वो बोली देव गुरु स्थापनाचार्य साधर्मीयोकी नवांग पूजा मंगलीक साथिया नंद्यावर्त्त वगेरे करणा जल चंदन वासक्षेप चूर्ण वगेरोका मंत्रणा ये काममे करसकतीहूं तब तर्जनी चोथी अंगुलीसें पूछा तब वो बोली में पतलीहूं इसवास्ते कांन वगेरेकी खाज खुणनी शरीरमें कष्ट आवे तब तकलीप पातीहूं भूत शाकनीके उपद्रवमें कष्टसहके दूर करतीहूं जापकी गिणती करणेमें अगवाणीहूं एसा सुणाके च्यारोंही आंगलीयोनें आपसमें दोस्ती करी ठर अंगूठेकूं पूछा तुमारेमें क्या गुणहे तब अंगूठा बोला में तुमारा मालकहूं देखो लिखणा चित्रांम कला ग्रास लेणा चिमठी भरणी चिमठी वजाणी टचकारा करणा मूठी भरणी गांठ देणी हथियार वापरणा दाढी मूंछ समारणा कतरणा कातणा उखेमणा लोच करणा पीजणा वूणन धोणा कूटणा दलणा पुरसणा कांटा निकालणा गाय दूहणी जापकी गिणती करणी बाल अ

अपणी शक्ति होय वहांतक दूर करणा इस वातपर कोइ संका करताहे के प्रमादसें रहित एसें गुरुवंके वज मिङ होताही नही तो फेर देखेही क्या वर मित्रकी तरे वनोसें केसें व-र्त्तावा रखणा इस बातका एसा उत्तरहे हुमारा कहणा सचहे धर्माचार्यतो निश्चे अप्रमादी होतेहे लेकिन् पंचम कालमे शरीरके संघयणनी वेसा नही न एसा मनोवलहे इस कारणोसें अपवादके रस्तेकी आचरणा देशक्षेत्रादि कारणो करके करते होय तब श्रावक जो तुच्छ बुद्धीहे वनोंकी न्यारी २ प्रकृतीके अनुसार नाव प्रगट होताहे वाणांग सूत्रमें लिखाहे हे गोतम च्यार प्रकारका श्रावक होताहे एक मातापितासमान दूसरा नाइ समान तीसरा मित्रसमान चोथा शोकसमांन साधूवंका जो कुछ कांम होय सो मनमे विचारे किसीवखत साधुवंका प्रमाद दे-खणेमे आवे तोनी साधुवंके ऊपरसें प्रेमनाव कम नही करे जेसें मातापिता अपणे बालकपर अंतरंगसे हेत स्नेह रखताहे तेसें साधूपर दयाका परिणाम रखके वो श्रावक मातापिता जेसा समजणा १ जो श्रावक साधूवपर मनमें तो बहोत नाव रखके लेकिन् बहारसें विनय

सानवगोमें मंद आदर दिखावे लेकिन् साधूकों कोइ दुसरा अनादर करे तो तुरत वहां जाय करके सहाय करे वो श्रावक माइ जेसा जांणना २ जो श्रावक साधूंकों स्वजनसेभी ज्यादे गिणे ओर कोइ कामकाजमें साधू सला नही पूछे तो अहंकारसें क्रोध करे वह श्रावक मित्र जेसा जांणना ३ जो गृहस्थ अहंकारी साधूंका वल छिद्र हमेसां देखा करे ओर उनोका जो कसूर प्रमादसें होजावे वो हमेसां जाहिर कीया करे ओर उन जती साधूंको तिणखे जेसा गिणा करे वो श्रावक शोक जेसा जांणना निंदक लोकोंहे सो जो कुछ जिन मंदिर जैन शाशनकी हीलना निंदा करते होय तो यथा. शक्ति मिटाणा चाहीये जेसें कुंमारके भवमें साठ हजार आदमीका कीया हुवा उपद्रव दूर कीया यात्रा जाते हुये संघकी रक्षा करी वो मरके सगर चक्रवर्त्तिका पोता जन्हुकुमार हुवा वह दृष्टांत जाणना धर्माचार्य शिक्षा दे तो तहत्त कहणा धर्माचार्य कोइ तरेका प्रमाद सेवते होय तो एकांतमें समझाणा माहाराज आ जेसें चारित्रवंतोंकों यह वात योग्य नही इत्य दिक हित शिक्षा देणी शिप्योंकों चाहीये साम

ने आणा ऊठणा आसण देणा पग चंपी करणी शूरू वस्त्र पात्र अन्न उंपधी ज्ञानके उपगरण वगेरे समयके उचितविनय उपचारजक्तिसे करणा हृदयमें प्रीति रखणी आप परदेशमें होय तो गुरुका सम्यक्त दांनके उपगारकूं हमेसां याद करे अब सहर वस्तीके लोकोंसें उचिताचरण लिखतेहैं सहरके लोकोंमें कोइ संकट आय पमे तो मनमें समझणा की मेंनी संकटमें पमाहुं एसा विचारणा उच्छवमें होय तो आपभी उच्छव मांणना क्योंके एक वस्तीमें रहके द्विधा नाव नही रखणा एक धंदेके रुजगार करणेवालो आपसमें कुसंप होय तो निश्चे वो लोक संकटमें जा गिरतेहे यमा कोइ काम करणा होय तो बमाइ बधाणेकेवास्ते सब नागरिक लोकोंके संग जाणा जिस्सें किसीका दिल नही डुखे इक्केले नही जाणा कोइ कांमकी गुप्त मसलत करी होय तो बाहिर प्रकाश नही करणी किसीकी चुगली नहि करणी सब बराबरीके होय तोभी मुसलमीनोकी तरे एकुं अगवाणी करके आप उनोके पिछामी रहणा लेकिन् राजाके हुक्म मुजब मंत्री परीक्षा करणेकूं एकसेज सबोंकों सोनेकूं दी तब पांचसे

मूर्ख कुसंपसें आपसमे लगणे लगे एसें कुस
वाले लोकोकूं संग ले राजाकी मुलाखात व
णेकूं नही जाणा ओर एसोंकी अरजभी न
करणी प्रतक्ष प्रमांणहे कितनीही नाकात तु
चीज होय लेकिन् जब वोही चीज वहो
एकठी होजाय तब बडी ताकतपर होजाती
देखीये कच्चे घास या सूतके तागे जब सांम
होके रस्सा वनाया जाताहे तब हाथी जे
ताकतवरकूं बांध लेताहे जो अदमी आपस
एक २ का मर्म उघाडे वो वंबीमे रहे ओर पेट
रहे सापकी तरे मरणांत कष्ट पाते हे ॥ श्लोक ।
परस्परस्यमर्माणि नापंतेअधमानराः ते नरावि
लयंयाति वल्मीकोदरसर्पवत् ॥ १ ॥ किसी दोनो
अदम्योके आपसमें झगडा होय तो तराजूके
पालणे मुजब बराबर रहणा लेकिन् अपणे
स्वजन संबंधीयोकी खेंच अथवा किसीसें रुस-
वताके न्यायसें वेमुख कनि नही होणा उप-
गा‍ ... सच्चे इनसाफसें करणा आप समर्थ
होके गरीब लोकोंपर मासूल कर तथा राज-
दंडमें मनाणा नही तथा थोडा कसूर किसीने
... कीया होय तो एकदम दंड नहि करणा
... तथा राजदंडमें तरक्कीर जब लोक

पातेहे तव आपसमें संप उर प्रीति ओर देतेहे जव वस्तीवालोमें संप नही होय तो कितनाही ताक्तवर क्यों न होय वगममेंसे निकले हुये सिंघकी तरे जहांतहा अनादर पाताहे इस-वास्ते आपसमें संप रखणा कल्याणकारीहे उ-समेंनी अपणे पक्षमें न्यातीगोतीयोमें तो ज-रूरही चाहिये क्योंके छिलके दूर करदीये जाय तो चावल ऊगते नहीहे इत्यादिक जांणना अपणा नला चाहो तो राजाके देवस्थानके अ-थवा धर्मखातेके अधिकारी देरासरी तथा उ-नोंके नीचेके लोकोके संग लेणदेणका विवहार नही करणा क्योंके ये लोक पहले तो मीठी बात वणाकर आसन उर पान वीमी देकर न-लाइ दिखातेहे लेकिन् वखत पमणेपर रुपे मां-गणेसें एसा कहतेहे हमने तुमारा वो कांम कीया वो कांम कीया तिलके फोतरे जितने उ-पकारकूं उस वखत पहाम जितना गिणातेहे पहली वातकूं नूलजातेहे ब्राह्मणमें क्षमा १ मातामें द्वेष २ कसवणमे प्रेम ३ उर सरकारीय हुदेदारोमें इमानदारी ४ ये वातें प्रायें होणी मुसकिलहे देणा तो दूर रहा लेकिन् ज्यादा मांगणेसें कोइ ज्यादे मूमत लापटवनेहे क्योंके

मूर्ख कुसंपसें आपसमे झगडणे लगे एसें कुसंप-
वाले लोकोकूं संग ले राजाकी मुलाखात कर-
णेकूं नही जाणा उर एसोंकी अरजनी नहि
करणी प्रतक्ष प्रमांणहे कितनीही नाकात तुच्छ
चीज होय लेकिन् जब वोही चीज बहोत
एकठी होजाय तब बडी ताकतपर होजातीहे
देखीये कचे घास या सूतके तागे जब सांमल
होके रस्सा बनाया जाताहे तब हाथी जेसें
ताकतवरकूं बांध लेनाहे जो अदमी आपसमें
एक २ का मर्म उघाडे वो बंबीमे रहे उर पेटमे
रहे सापकी तरे मरणांत कष्ट पाते हे ॥ श्लोक ॥
परस्पराणिमर्माणि ग्रापंतेअधमानरा: ते नराबि-
लयंयाति बल्मीकोदरसर्पवत् ॥ १ ॥ किसी दोनो
अदम्योके आपसमें झगडा होय तो तराजूके
पालणे मुजब बराबर रहणा लेकिन् अपणे
स्वजन संबंधीयोकी खेंच अथवा किसीसें रुस-
पतखाके न्यायमें वेमुख कनि नही होणा छप-
गाः घ/ सचे इनसाफसें करणा आप समर्थ
होयके गरीब लोकोंपर मासूल कर तथा राज-
दंडमें सताणा नही तथा थोडा कसूर किसीने
कर लीया होय तो एकदम दंड नहि करणा
दिरगुजर तथा राजदंडमें तखफीफ जब लोक

पातेहे तव आपसमें संप ओर प्रीति होन देतेहे जब वस्तीवालोमें संप नही होय तो कितनाही ताकतवर क्यों न होय वगममेंसे निकले हुये सिंघकी तरे जहांतहा अनादर पाताहे इस-ास्ते आपसमें संप रखणा कल्याणकारीहे उ-समेंनी अपणे पक्षमें न्यातीगोतीयोमें तो ज-रही चाहिये क्योंके छिलके दूर करदीये जाय तो चावल ऊगते नहीहे इत्यादिक जांणना अपणा नला चाहो तो राजाके देवस्थानके अ-थवा धर्मखातेके अधिकारी देरासरी तथा उ-मोके नीचेके लोकोके संग लेणदेणका विवहार नही करणा क्योंके ये लोक पहले तो मीठी बात बणाकर आसन ओर पान बीमी देकर न-लाइ दिखातेहे लेकिन् वखत पमणेपर रुपे मां-गणेसें एसा कहतेहे हमने तुमारा वो कांम कीया वो कांम कीया तिलके फोतरे जितने उ-पकारकूं उस वखत पहाम जितना गिणातेहे पहली बातकूं नूलजातेहे ब्राह्मणमें क्षमा १ मातामें द्वेष २ कसवणमे प्रेम ३ ओर सरकारीय हुदेदारोमें इमानदारी ४ ये बातें प्रायें होणी मुसकिलहे देणा तो दूर रहा लेकिन् ज्यादा मांगणेसें कोइ ज्यादे मूमन खापटनेहे क्योंके

मंत्रीकूं बोला क्यों नें मेरेसेंजी ज्यादे दांन देणे लगा तव आंवरू मंत्री बोला हे राजन् आपके पिताजी इस गामकोके मालकथे ओर आजदिन आपके तावेमें अगारे देस होगयेहे ओर आप अहमिंद्र बणरहेहो तो क्या इस वातसें आ-पकी तरफसें आपके पिताकी बेअदवी मानी जावे एसा उचित वचन सुणके राजा प्रसन्न होकर दुसरी किताव राजपूत्रकी वगसी ओर आगे जो दीथीथी उमसें दूणी ऋद्धी इनायतकी इसवास्ने शास्त्रोंमे लिखाहे के दांन देतें रस्ते चलते सूते बेठते खाते पीते बोलते सब जगे योग्यहै। बोलणा वखतपर बडाई मिलतीहे समयकूं जाणा उसने सब कुछ जाणा बोही उचिताचरण जाणनाहे कहाहे एकतरफ क्रोड गुण ओर एकतरफ उचिताचरणहे अगर उचिताचरण नहीं जाणताहे तो सब गुण जहर बराबरहे इसवास्ते अनुचित कांम छोड देणा जिसकरके अदमी मूर्खोंमें गिणे जाताहे वो सब काम अनुचित अयोग्य नहीं करणे चाहीये वो सब लोकीकशास्त्रों मुजब उपगारका कारण समझके इहां लिखताहूं हे राजेंद्र सो मूर्ख होतेतेहैं तें इन बातोंकों छोड जिसकरके तूं जगतमें

र्मगणके वचन क्रोध करे २० वमे कायदेकी आसासें धन विखेरे २१ साधारण बोलणेमें कनन सम्कन वगेरके शब्द बोले २२ बेटेके हाथमें सब धन सोंपके आप दीन दुखी होवे २३ नगनके पक्षके लोकोंसें उधार वगेरे मांगणी करे २४ नगनके संग लमाइ होणेसें दूसरी सादी करे २५ कामी पुरुषोके संग हरीफाइसें धन उमावे २६ लरकेपर गुस्सा करके उसका नुकसान करे २७ मंगन लोकोंकी करी हुई स्तुति सुणके मनमें अहंकार लावे २८ अपणी अहंकार बुद्धिसे दुसरेका हितकारी वचन नहीं सुणे २९ हमारा वर्म जानिहे एसे अहंकारसें किसीकी नोकरी नहि करे ३० दुखसें कमाया जावे एसा जो धन सो देकरके कांम नोग सेवे ३१ मोल किराया देकर रमाव रमने जावे ३२ जो राजा अनीती होय उर उसके पाससें धन लेणेकी आसा रक्खे ३३ हाकम दुष्ट अन्याइ होय उसके पाससें धनकी आसा रखे ३४ कायस्थ लोकोंमें दोस्ती मोहबतकी आसा रक्खे ३५ मंत्रवीजादिक कुर कठोर होय उसका डर नहीं रक्खे ३६ कृतघ्नीसें उपगारके बदलेकी आसा रक्खे ३७ जो मूर्ख रसकूं नहि

समझे उसके आगे अपणा गुण प्रगट करे ३८ शरीर निरोगी रहते हुये वे हुमसें दवा खावे ३९ रोगी होकर पथ्यपरे जनहि करे ४० लोभके वस स्वजनोकूं ठोगदे ४१ जिस वातोसें दोस्तका दिल खट्टा होजाय एसी वात कहे ४२ फायदेका वखत आवे उस वखत आलस करे ४३ बमा धनवान होकर लमाइ दंगा करे ४४ जोतषीकी जुवानपर नरोसा रखके राज्य मिलणेकी इच्छा करे ४५ मूर्खके संग सल्लाह करणेका आदर रखके ४६ गरीब अनाथ लोकोकूं तकलीफ देणेमें सूरवीरता जाहिर करे ४७ जिसकी एवजा हिरा देखणेमे आवे एसी उरत परप्रीति राखे ४८ गुणके सीखणेमें क्षणमात्र प्रीति राखे ४९ डुसरोंका जमा कीया हुवा धन उमावे ५० अहंकार रखकर राजा जेसा वणाव करे ५१ लोकोके सामने राजा वगेरोकी जाहिर निंदा करे ५२ दुख आणेसें दीनपणा प्रगट करे ५३ सुख होणेसें आगे होणेवाली खोटी गतिकूं भूल जावे ५४ थोमे बचावकेवास्ते ज्यादे खर्च करे ५५ परिक्षा करणेकूं जहर खावे ५६ किमियागरीनें धन होने ५७ खयरोग होगयेवाद फेर रसायण खावे५८

आप अपणे बडाईका अभिमांन रक्खे ५८ गुरूमेंं आकर आत्मध्यान करणेकुं तयार होय ६० निज [illegible] इधर उधर भटकता रहे ६१ शस्त्रोंके प्रहार लगेबाद फेरती गुरु देखे ६२ वर्मोके साथ विरोध करके नुकसानीमें जा [illegible] ६३ थोडा तो धन होय तर आडंबर बडा [illegible] समझके बहोत [illegible] ६४ अपणी मरजीस्ता समझ [illegible] ६६ बहोत व्याख्यान [illegible] ६७ हामी [illegible] ७० दलद्रीके [illegible] पदास तो होय [illegible] खर्च [illegible] गोमें [illegible] हो- [illegible] गमनरी [illegible] ७४ [illegible] बहोत मा- [illegible]

होय एसे अदमीकी तारीफ करे ७९ सजाका काम पूरा हुवे नहीं ओर पहली ऊनजावे सो ८० दूतयाने हलकारेका काम करे ओर संदेसो नूल जावे ८१ खासीका रोग होय ओर चोरी करणेकूं जावे ८२ डुनियामें नामवरी ओर यशकी इच्छाके चाहसे नोजनका खरच बहोत रख्के ८३ लोक मेरी तारीफ करेगा इस नरोसे आहार थोमा करे ८४ जो चीज थोमी होय वो चीज बहोत खाणेकी इच्छा करे ८५ कपटी ओर मीठे वचनोके बोलणेवालेके जालमें जाफसे ८६ कसवणके जारके संग लमाइ करे ८७ दोजणे कोइ गुप्त सल्ला करते होय उसके बीचमें तीसरा आप जावे ८८ राजाकी महरवानी हमेसां बणी रहेगी एसा दिलमें नरोसा रख्के ८९ अन्यायके रस्ते पले ओर आपणी बढोतरीकी आसां रख्के ९० धन तो पासमे होय नहीं ओर धनसें होणेवाले कांम करे ९१ छानेकी बात लोकोमें जाहिर करे ९२ परदेशवास्ते अजाण अदमीका जाम न होय ९३ हितवचन कहणेवालेके संग वैर करे ९४ सब जगे नरोसा रख्के ९५ लोक व्यवहार नहीं जाणे ९६ यायक नीख मंगा होकर गरम नोजन करने-

की हेम रखके ९७ मुनिराज होकर किया पा-
लणेमें शिथलताना रखके ९८ कुकर्म करता हुवा
सरमावे नहीं। ९९ ज़र बोलता हुवा बहोत हसे
१०० इसतरेसें सो मूर्ख जांणना जिस था-
नोमें अपयश होय उसे सब काम छोडणा इस
तरेसे [illegible] विलासमें जिन दत्त सूरजीने
[illegible] हासी
[illegible] मग्न होकर करणा स ना-
[illegible] हाथ मरोडणा नहीं
[illegible] नहीं। करणा
[illegible] नहीं। करणी
[illegible] मात्र
[illegible] नहि
[illegible] हाथसें
[illegible] रानीका
[illegible] शा-
[illegible] गुणके
[illegible] शा-
[illegible] समझणाहीं।
[illegible] नहीं
[illegible] शा-
[illegible] अपनांई

हलकी जुबान कहे तो पीछा उत्तर हलकी जु-
वानसें नहि देणा जो वात वीतगइ या आगे
होणेवाली या वर्त्तमानकालमें नरोसा रखणे
योग्य नही होय एसी वातमें एसा नही क-
हणा की ये तो सच हे डर एसेंहीहे एसा
प्रगट अपणा अभिप्राय नही जाहिर करणा
कोइ काम किसीके पाससें कराणा विचारया
होय तो उसके सांमने किसी दृष्टांतसें अथवा
विशेष वचनोसें पहली जताणा चाहीये
अपणा विचारया हुवा कामके अनुकूल कोइ
वचन कहे तो जरूर मांन लेणा चाहीये
जिसका कांम अपणेसें नही बणसके उसकूं पह-
लेहीसे नहिं कहदेणा झूठी दिलासा देकर
धक्का नही खिलाणा चतुर पुरषोकूं चाहीये सो
अपने दुस्मनकोंभी कभी जुबान नही कहे
अगर किसी मोकेपर सुणाणा पडे तो नि-
सालकरके दुसरेके बहानेसें सुणाणा जो आ-
दमी माता पिता रोगी आचार्य ब्राह्मण नाइ
तपस्वी बुद्धा बालक दुर्बल गरीब आदमी वैद्य
अपणी उलाद नायोंके कुटंब चाकर बहेन इ-
णोंके संग लडाइ नही करें वो आदमी तीन ज-
गतकूं बस करे एक टकी लगाकर सुर्यके सा-

मान्य पुरषोका मांनखंम्न ऊर अपयश होताहे अपणी जातिकों छोम पराइ जातिमें जो आसक्त होताहे उसकी कुकर्दम राजाकी तरे दुर्दसा होतीहे जातिमें क्लह करणेसें अदमी भ्रष्ट मिलजाताहे ऊर संपमे रहे तो कमलमें कमलणीकी तरे वढताहे अपणा दोस्त साधर्मी ऊर जातिमें आगेवान वमा पुत्र जिसके नही होय एसी वहिन इतनोका जरूर पोपण करणा जो पुरप मनमें वमपन रख्वा चाहे वो सारथीका कांम पराइ चीज खरीदणी ऊर वेचणी अपने कुलके अनुचित कांम नही करणा महाज्ञारत ग्रंथमे लिखाहे मनुष्यकूं ब्रह्म मुहुर्त्तमें उठणा धर्म अर्थका विचार करणा सूर्यकूं उदय होते अस्त होते ऊर किसी वखतज्ञी देखणा नही दिनकूं उत्तरकी तरफ रातकूं दक्षिणकी तरफ मूं करके दिसा जंगल जाणा अगर कुछ हरकत होय तो चाहे जिधर मुखकरके जंगल जाणा आचमनादि करके देवपूजा कर गुरुकूं वंदना करके साधू सुपात्रोकों दान देकर ज्ञोजन करणा जो ज्ञोजन घरमें होय वो पहली देव जिन राजके सांमने धरणा फेर ज्रूख लगणेसें ज्ञोजन करणा कारण ज्ञोजनका कोइ वखत शास्त्रकारोनें

नहि लिखाहे इतना तो जरूरहे एकवार जी-
मकर पहरभरमें दुसरा खाणा नही और दोपहर
लांघणा नहीं अर्थात पांच घंटा आगले भोज-
नकुं हो चुके तब दुसरा खाणा ये मर्यादा दि-
नकीहे रातकुं भोजन सर्वथा मनाहे इसवास्ते
दिनके पहले पहरमें भोजन करणा नहीं दोपहर
लांघणा नहीं। सुपात्रोंकों दान देणेकी विधि
[illegible] सुपात्रकुं निमंत्रकर भोजनकी व-
[illegible] अथवा आते मुनिराजकुं देख
[illegible] देना करणा फेर क्षेम
[illegible] काल सुभिक्ष
[illegible] दान देणा। वस्त्र सूझताहे या
[illegible] आचार्यहे या उपाध्याय
[illegible] समर्थहे या
[illegible] करणा और दु-
[illegible] अनुराग
[illegible] । ये-
[illegible] बदला उ-
[illegible] अनादर करणा भो-
[illegible] दानके दोषणहे
[illegible] दोष-
रहित अन्नपान वस्त्र [illegible] अर्थात

हाथसें अथवा आप खमा रहके स्त्री वगेरोके पाससें दिलावे जैनमुनिके आहार संबंधी व-यालीस दोषण टालणेके पिंम विशुद्धि वगेरे ग्रंथोसें जांणना दांन दीयां पीछे मुनिराजकूं वंदन करके उनोंकों दरवाजेतक पोहचाणे जा-णा मुनिराजका योग नहि होय तो वहल वि-गर वृष्टिमारूक साधूउंके आणेकी राह देखणी शुद्ध श्रावक साधूकुं दांन दिये विगर कोइनी चीज नहि खातेहे मुनिराजका निर्वाह दुसरी रीतसें होता होय तो अशुद्ध आहार लेणे उर देणेवालेकूं हितकारी नही उर कुसमयमें जो निर्वाह नही होवे तो आतुरके दृष्टांतसें अशुद्ध आहार दोनोंकों हितकारीहे नगवती सूत्रके लिखे मुजब रस्ते चलणेसें थके हुये रोगी लोच करे हुये एसे आगम शुद्ध वस्तुका लेणेवाला साधूकूं उत्तर पारणेके विषे दांन दीया होय तो उस दांनसें वहोत फल मिलताहे सुपात्र दांनसें देवके तथा मनुष्यादिकोका सुख तथा समृद्धि होतीहे चक्रवर्त्ति आदि पद मि-लताहे अंतमें थोमे समयमें निर्वाण सुख मि-लताहे अजय दांन १ उर सुपात्र दांन २ अ-नुकंपादान ३ उचितदांन ४ कीर्त्तिदांन ५ पह-

लीके दो दानोसें मुक्ति ओर सुखसंपदा मिल
तीहे ओर तीन दानोसें फकत सुखसंपदा मि
लतीहे सुपात्रका लक्षण इस तरेसेहें उत्त
पात्र साधू जोकी सर्व संगका त्यागी शुद्ध उप
देशक मध्यम पात्र श्रावक साधर्मी ओर जघ
न्यपात्र अविरति सम्यक्दृष्टी सास्त्रांतरोमें लि
खाहे हजारो मिथ्या दृष्टीसें एक थोमी श्रद्धा
वाला सम्यक् दृष्टी अच्छाहे ओर हजारो संक्षे
प श्रद्धावंतसें एकवारे व्रतधारी श्रावक श्रेष्ठहे
हजारवारे व्रतधारीसें एक मुनिराज श्रेष्ठहे ओ
हजार मुनिराजोसें एक तत्वज्ञानी श्रेष्ठहे त
त्वज्ञानी जेसा पात्र हुया न होगा सत्पात्र बर्ति
श्रद्धा योग्य काल उचित एसी देणेकी वस्तु
एसें धर्म साधनकी सामग्री बमे पुन्यसें प्राप्ति
होतीहे नोंचदाणी १ नजर करमी करणी २
अंतर्वृत्ति रखणी ३ मूं फेर लेणा ४ मोन क-
रणा ५ देणेमें देरी करणी ६ ये बाते नाकारा
करणेका चिन्हहे आंखमें आनंदके आंसू १ कं
खमे होणा २ बहुमांन ३ प्रियवचन ४ अनुमो-
दन ५ ए पांच दानका भूषण कहलाताहे इत्या-
दिक संक्षेपसें दानविधी कही तेरोंह भोजनकी
बखत साधर्मी आवे तो उसकूंनी यथाशक्ति

जीमाणा साधर्मीनी पात्र कहलाताहे साधर्मी वात्सल्यका वना लाज शास्त्रोमें तीर्थकर महाराजने वयान कीयाहे तेसें दुसरे जिक्षारी लोकोकूं दांन देणा निरासकर पीछा निकालणा नही कर्मबंध तेसें धर्मकी हीलणा नहि कराणी अपणा मन निर्दय नहि करणा जीमणके वखत दरवाजा वंध करणा ये गृहस्थ सत्पुरुषोका लक्षण नही धनवानकूं तो निश्चेही अनंगद्वार होणा क्योंके अपणा पेट कोण नही नरताहे लेकिन् वहोत जीवोंकी प्रतिपाल करे पुरुष वोही गिणे जाताहे इसतरे दीन दुखियोंकों अनुकंपा दांन देकर पीछे जीमणा जिनेश्वरदेव श्रावककूं अनुकंपा दांन मना कीया नहीं नगवतीमे श्रावकके वर्णनमें अवंगु अदुवारा लिखाहे नवसमुद्रमे डूबते हुये जीवोके समुदायकूं दुखसें हेरान हुयेकूं न्यातकी जातकी तथा धर्मकी तफावत दिलमें नहि रखकर द्रव्यसें तो अन्नादिक नावसें सद्धर्मके रस्ते लगाकर यथाशक्ति अनुकंपा करणी तीर्थकर महाराज संशारसे विरक्त नावना लाये वाद दीन दुखीयोके उद्धार करणेकूं संवत्सरी दांन देतेहें एक वर्षतक फेर संजम लेतेहे प्रदेसी

करणा आहार पाणी वगेरे वस्तु स्वभावसेंही दुष्ट ओर खराब होय तोभी किसी २ कूं माफगत आताहे उसकूं साम्य कहतेहे जन्मसें लेकर जहर खाणेकी टेंम पटकी होय तो उस अदमीकूं जहरभी अमृत होजाताहे ओर अमृतभी अगर कभी नहि खाया होय तो वो जहर माफक होताहे इसवास्ते पथ्य चीज नही सदे तोभी खाणा चहीये कुपथ्य चीज सदे तोभी नही खाणा ताकतवर अदमीकूं सब चीज हितकारी होतीहे एसा समझके कालकूट जहर नहि खाणा जहर शास्त्रका जांणकारभी कोइ वखत जहर खाणेसें मरजाताहे जेसें के तेरूकी रांम होतीहे गलेके नीचे उतरे सो सब असन कहजाताहे इसवास्ते क्षणभरके सुखकेवास्ते जीभका लालची नहि होणा इसवास्ते अभक्ष्य अनंतकाय ओर बहुत पापकारी बहु बीजवस्तुका खाणा छोमणा क्योंके रोगका मूल रसहे भावप्रकाशमें लिखाहे बहुत सागपात रोगकारीहे अभक्ष अनंत कायका विचार जैन तत्वादर्श भाषाग्रंथसे जांण लेणा पापका मूल लोभहे दुखका मूल स्नेहहे रोगका मूल रसहे इन तीनोका छोमणेवाला सुखी होताहे

अपणी अग्नि बलमाफक प्रमांणसर भोजन करणा बहोत भोजन करणेसें उलटी दस्त हेजा वगेरे रोग होताहे जीमकर सो कदम टहलणा अध कच्चा अन्न नहि खाणा जीमकर अन्न पचणेकूं मावी करवट पावघंटा सोणा अध घंटा चित्ता सोणा ताकत वधणेकूं निद्रा लेणा नही दिनकूं कभी हमेस फिरणे धिरणेकी मेहनत करणेवाला देरी नहि रखत्तां मलमूत्रका त्याग करणेवाला डंरतोसें वचके रहणेवाला एसे पुरषोके रोग नहि होताहे बिलकुल प्रभातसमें तदन त्रिकाल संध्याकी वखत अथवा रातकूं तथा रस्ता चलते भोजन नही करणा भोजन करती वखत अन्नकी निंदा नहि करणी भावे पगपर हाथ नहि रखणा एक हाथमे खाणेकी चीज लेकर दुसरे हाथसें नही खाणा उघाभी जगेमें धूपमें अंधारेमे दरखतके नीचे भोजन नहीकरणा भोजन करती वखत तर्जनी अंगूठेके पास वाली टालनी नहि वस्त्र डंर पग धोया विना नंगा होकर मेला वस्त्र पहरकर एक धोती पहरकर भीगा वस्त्र लपेटकर अपवित्र शरीरसें अतिशय जीभकी लोलपता इत्यादिक प्रकारसें भोजन नही करणा पगोमें जूता पहरा

हुवा चित्त ठिकाणे रखे विगर केवल जमीनपर अथवा पिलंगपर बेठकर खूणेमे बेठके दक्षिण दिसामे मूं करके तेसें पतले आसनपर बेठके इत्यादिक प्रकारसें भोजन नहि करणा आसनपर पग रखकर कुत्तेकी चंमालकी ढर नीच अदमीकी जहां नजर पमती होय एसी जगे भोजन नही करणा फूटे वरतणमें मलीन पात्रमें अपवित्र वस्तुसें उत्पन्न गर्भहत्या करणेवालाका स्पर्शा हुवा गाय कुत्ता पक्षीयोका सूंघा हुवा जिस चीजकी खबर नही के ये कहांसें आई हे जिस चीजकूं आप पहचाणे नही एक वेर रांधे हुवेकुं डुवारा गरम कीया होय ए इत्यादिक वस्तुका भोजन नहि करणा जीमते वखत वच २ शब्द वांकातिरछा मूं नही करता अपणे इष्टदेवका नांम लेणा उत्तम हाथोसें जीव जयणासें वणाया गया जीमणा स्वर वहते हुये मौन करके भोजन करणा शरीर वांका तिरछा नहि रखणा खाणेकी सब चीज सूंघके फेर खाणी जिस्सें नजर दोष टलताहे बहोत खारा बहोत खट्टा बहोत गरमागरम बहोत ठंमा अन्न नही खाणा शाक बहोत नही खाणा बहोत मीठी चीजभी नहि खाणी अत्यंत स-

चिकासीनी चीज नहि खाणी ज्यादा गरम रस
नाकनका नास करेहे वहोत खट्टा इंद्रियोकी
शक्ति तथा वीर्यकूं हीन करताहे अतिमय खारा
आंखोंको विकार करेहे वहोत चिकणा गृहणी
और रुची कला हाजमा विगाडेहे कफकूं कडवा
और तीखे रससें जीतणा पित्तकूं मीठे खट्टा
मंदरसमे जीतणा वायुकूं चिकणा और गरम
रससें जीतणा अजीर्णादि सन्निपातादि वाकी
रोगोंकूं उनवासरसें जीतणा घीके संग करमी
वस्तु पहली खावे मीठा रस वगेरे दूध वगेरे
कठिन वस्तु पिछे खावे हलकारी वस्तु नही
खावे बहोत जल नही पीवे खाया हुवा पचे
बाद भोजन करे पहली मीठा बीचमे तीखा
अंतमे कडवा रस खावे जलदी नहि करता
हुवा मीठा और चीकणा रस खावे बीचमे पतला
खट्टा और खारा खावे अंतमे कडवा तीखा रस
खावे भोजनकी सरूआतमे जल पीवे तो अग्नि
मंद होवे बीचमे पीवे तो रसायण मुजब अंतमे
पीवे तो विष माफक नुकशांन करे जीमे बाद
एक कुरला मूं साफ करणेकूं जरूर पीणा हटके
जीमणा नही भोजन करके भीजा हाथ नेत्र
रोगी हालके आप गालके वाये हाथके नही

लगाणा कल्याणकेवास्ते दोनों गोमोके स्पर्श करणा जोजन करके दो घंटेतक स्त्री संग नहि करणा दोमणा वगेरे खेचल नहि करणा शरीर मर्दन पगचंपी करवाणा नही जार ठगाणा वेसणा अथवा स्नान जोजन करके नहि करणा जोजनकर बेठणा नहि बेठे तो मेदवृद्धिसें पेट चूतमनारी होजाताहे सुश्रावक निर्वद्य निर्जीव ठंर परित्त मिश्र इससें अपणा निर्वाह करतेहे जीमते वूंद या अनाजका दाणा नही गिरावे मन वचन कायाकी गुप्ती रखके जोजन करे विवेकी देव गुरु नगरका मालक तथा स्वजनमे शंकट पमे तो ठती शक्ति जोजन नहि करे सूर्यचंद्रका गृहण लगे तब जोजन करणा नही अजीर्ण नेत्ररोगमें जोजन नहि करणा तावकी सरूआतमे लंघन शक्ति माफक करणा वायूसें थकेलेसें क्रोधसें शोकसें कामसें जो ज्वर चढे अथवा चोटसे ठसमे लंघण नहि करणा तीर्थ वंदनमें आठम चोदसकूं वमे पर्वके दिन जोजन नही करणा तपस्यासें अनेक कार्य सिद्ध होताहे चक्रवर्त्ति नारायणजी तपस्यासें देव आराधतेहे जोजनकर दांत साफ कर नवकारस मरणकर ठठे तथा गुरुकूं तथा देवकूं चैत्य वं-

हुवा इसकूं तूं क्या अच्छा समजताहे अरे जीव विष्टा वगेरे गलीच चीजकूं देखके, जेसें तूं थू-थू करताहे ओर नाक चढाताहे तो फिर हे मूर्ख एसे स्त्रीकी सरीरकी क्या इच्छा करताहे विष्टाकी थेली कीनोकी जरी कपटण चपलाइ ओर जूठसें जो पुरषोकूं ठगतीहे एसी स्त्रीका हावभाव ओर वहारकी सफाइ देख जो मनुष्य मोहके वस ओरतकूं भोगतेहें उसकरके नरकप्राप्ती होतीहे जरूर काम देव जगत लोककूं जीतणेवालाहे तथापि मनकूं संकल्पसें वर्जे तो सहजमें काम जीतणेमें आताहे जो जीव जगतमें पूज्य होगये वेभी अपणे जेसेही आदमी थे लेकिन् क्रोध मांन माया लोभकूं त्यागणेका उद्यम कीया तब थोमेही कालमे ईश्वर सिद्ध होगये बाकी सत्पुरष पैदा होणेका कोइ अलायदा क्षेत्र नहीहे इंद्रियां वगेरे वस्तु तो मनुष्यके स्वभाव करके प्राप्तहे तेसें साधूपणा मिलणा सहजसें नही लेकिन् गुणोकों धारण करणेवाला साधू कहवाताहे उद्यम करणेसें गुणोकी प्राप्ति होतीहे कोरा उत्तम जातिवाला हुवा तो क्या हुवा रोहीमेंके पुष्पकी तरे देखणे मात्र होताहे वनमें पेदा हुये खसबोदार पुष्पकों लोक

गर्भमे पहुननेह उग अंगमे पेदा हुये मैलकों दूर मालनेह गुणवानकी नकि दया क्षमा शील शंतोष निष्कपटता धारण करता हुवा गृहस्थधर्म आराधना करे अवसर आणेमें साधू व्रत गृहणकर निर्ममत्नी होकर सर्वसंग त्यागकर परमानंदरूप सिद्धपद जयकमलाकुं नोगे यह गृहस्थ व्यवहारालंकार ग्रंथ मेंने अर्हद्वचनानुसार संक्षेप ग्रथांतरोंमे जो कुछ लिखाहे कुछ परंपरागत श्रुती कुछ एक अनुनवी बातें लिखीहे इसमें प्रमादके वसया अल्पज्ञताके सबबसें [illegible] सर्वज्ञ वचनसे विरूद्ध लिखने [illegible] तो पंचपरमेष्ठिकी साक्षीसे [illegible] विद्वज्जन सुधार लेंगें

[illegible]

[illegible] ॥
[illegible] ॥ १ ॥
[illegible] ॥
[illegible] ॥ २ ॥
[illegible] ॥
[illegible] ॥ ३ ॥
[illegible] ॥
सुरसरिता जसअनिरुचिर ॥ प्रजपावनकेकाज ॥४॥

वृद्दत्गच्छखरतरविटप मुनिश्रावकपतफूल ॥
भट्टारकयुगवरप्रवर ॥ कीर्तिसूरिजिनमूल ॥ ५ ॥
शाखाकीर्तिक्षेमकी अतिपसरीजरपूर ॥
अगणितउपमफलगुणी प्रगटेपुन्यपमूर ॥ ६ ॥
धर्मशीलगुरुमिष्टरस पल्लवकुशलनिधान ॥
रसनातारसकरप्रगट कितलगकरेवखान ॥ ७ ॥
गुरुगुणसरससुधानिधी ॥ पानकरणललचाय ॥
शुरसममोमनपीनअति जयोविचक्षणराय ॥ ८ ॥
परउपगारविचारकर निजआतमअविकार ॥
पानकपदधारकरुचिर विरचतगणिःऋद्धिसार॥९॥

इति श्रीश्रावगव्यवहारालंकारग्रंथउपाध्याय
श्रीरामलालजीयुक्तिवारिधिःकृतसंपूर्ण ॥

॥ अथ जावश्रावगके लक्षण लिख्यते ॥

सतरे लक्षणवाला जावश्रावक होताहे सो संक्षेपसें लिखताहूं १ अनर्थकूं पेदा करणेवाली चंचल चित्तवाली ऊंगुणगारी नरक जाणेके रस्ते जेसी स्त्रीकूं जाणके अपणे जीवका जला चाहता हुवा उसके वशमें नही रहे २ इंद्रीयांरूप चंचल घोमे हमेसां कुर्गतिके रस्ते दोमतेहे इसवास्ते शंसारका यथार्थ स्वरूप जांणणेवाला श्रावक सम्यक् ज्ञानकी लगामसें इंद्रियोकूं खोटे रस्ते नही जाणे देणा ३ सब अनर्थका तथा प्रयासका कलेसका कारण ठर असार एसा धनकूं जाणकर बुद्धिमांन पुरप थोमाही धनका लोज नहि करे ४ संसार आप कुखरूप कुखका फल देणेवाला परिणाम याने आगेजी कुखदाई विटंबनारूप एसा जांण उसमें प्रीति रखके मुरझाणा नही ५ जहर जेसा विपय क्षणमात्र सुख देणेवाला एसा विचार हमेसां करणेवाला संसार प्रपंचसे मरणेवाला सर्वज्ञ कथित तत्वका जांणकार ठन विपयोकी इच्छा नहि करे ६ तीव्र आरंज लोमे निर्वाह नहि होता दीखे तोजी सर्व जीवपर दया रखता हुवा गुजरान माफक थोमा आरंज करे ठर

बिलकुल आरंजसे रहित एसें मुनिजनोकी स्तवना करता रहे ७ गृहस्थावासकूं वेमी उंर फास समान गिणता दिलके ऊपर कर डुरक करके रहे उंर चारित्र मोहनी कर्म खपाणेके उद्यममें रहे ० बुद्धिमांन पुरष मनमें गुरुजक्ति उंर धर्मकी श्रद्धा रखकर धर्मकी प्रजावणा प्रशंसा इत्यादिक करता हुवा निर्मल सम्यक्त पाले ए विवेकसें चलणेवाला धीर पुरप साधारण मनुप्योंकूं अण समजपणेकर गाम्री प्रवाह चलणेवाला समजे ज्ञानशुन्य किसी नाग्यवानकूं कोइ धर्मादि कर्त्तव्य करता देखे उस मुजब तत्वज्ञानरहित हीया शून्यपणे करतेहे एसा समज बुद्धिवंत लोक संज्ञाका त्याग करे १० एक जिनागम स्यादवाद् न्याय टाल डुसरा यथार्थ नहीं उंर डुसरे शास्त्र मोक्षका रास्ता नहीं एसा जांणकर सर्वक्रिया अनुष्ठांन जिनागमके अनुसार करे ११ अपणे जीवकी शक्तिकूं नहीं छिपाता हुवा जेसें संसारके वहोतसे कामकाज करताहे तेसेंइ अपणी हिम्मत नहि हारता हुवा दानशील तपजावना प्रमुख च्यार प्रकारके धर्मकूं जेसें आत्माकूं पीमा नहीं होय एसी तरे आदरे १२ चिंतामणी रत्नकी तरे डुर्लज एसी

हितकारी उर निरवद्य धर्मक्रिया पायकर अच्छी तरे आचरणा करता हुवा एसा आपणेकूं करते हुवेकूं देखके अज्ञानी लोक अपणेकूं हसे तोभी उनोके हसणेसें मनमें लज्या लाणी नही १३ देह स्थिति रक्षाका मूलकारण धन स्वजन आहार उर घर इत्यादिक शंशारगत चीजोके ऊपर रागद्वेष नहि रखता हुवा संसारमें रहे १४ अपणाँ हित चाहता हुवा मध्यस्थपणेमें रहकर नित्य मनमें समताका विचार रखता हुवा रागद्वेषके वस नहि होणा कदा ग्रहकूं सर्वथा छोमदे १५ हमेसां दिलमें सब चीजोकी क्षणभंगुरताका विचारकर धनवान होकरकेभी धर्मकृत्यमें हरकत होय एसा उनोका संबंध नहि रखवे १६ संसारसें विरक्त हुवा श्रावक भोग उपभोगकी चीजोसें तृप्ति होती नही एसा विचार करता हुवा उरतके आग्रहसें कांम भोगसेवें जेसें ज्वरके पीमामें कुटकी चिरायता आदि खारा द्रव्य दिलमें नहि रुचे तथापि रोग मिटाणेकूं प्राणी खाताहे तेसें काम रोगकी शांति करे १७ वेस्या जो कसबण उसकी तरे आशंसा रहित श्रावक आज अथवा कल छोम-दूंगा एसा विचार करता पराई चीजके माफक

लूखे परणामोसें घरवास पावे एसे ये सतरे गुणोकरके जो युक्त सो जिनागममें भाव श्रावक कहताहे एसा परिणामोवाला भाव श्रावक शुभकर्मके योगसें जलदी भाव साधूपणा पाताहे इसतरे धर्म रत्नशास्त्रमें लिखाहे ॥

इति श्री श्रावकव्यवहारालंकारग्रंथे भावश्रावकलक्षणसंपूर्ण ॥ जैनधर्ममें मूं वंधोके पंथवाले कहतेहे दो हजार वर्षका भस्मग्रह वीरप्रभूके जन्मराशिपर वेठाथा सो दो हजार वर्षतक जैन धर्मका उदय पूजा सत्कार नही भया वह ग्रह उतरा ओर हम प्रगटे सो जैनका उद्योत भया उत्तर भस्मग्रह भगवानके रासिपर आयाथा सो उनोके शंतानोका उदय पूजा सत्कार कम पमा था जव वह उतरा तव भगवानके शंतान जती साधूउंकी पूजा सत्कार ओर धर्मोद्योत भया खरतर गच्छी श्री जिन चंद्रसूरिः तपाहीरविजयसूरिः ज्ञानविमलसूरिः विजयदांनसूरि सं १६ से विक्रमके क्रिया उद्धार करा जिनोने अकव्वरसें उपदेस कर जैन तीर्थकी रक्षा करी अमारि उदघोषणा हिंन्दमे फिरवाइ इसवास्ते जिसकूं रोग होताहे रोगकी मुदत पोहचणेसें वोही आराम होताहे सो भया

नीचे लीखे हुवे पुस्तक हमारे याहां मिलते हैं.

हिंदुस्थानी भाषाके ग्रंथ.

नाम.	किंमत.
१ करुणा बत्तिसी, दादासाहेबपूजा	०–४
२ सोळे चाणक्य, शकुनावली स्वरोदय	१–०
३ मूर्तिमंडनका सिद्धमूर्ति विवेकविलास	०–८
४ पूजामहोदधि–गायनरूप ३७ पूजा	४–०
५ श्रावक व्यवहारालंकार	१–८

ग्रंथ छपते हैं.

१ श्रीपालचरित्र	१–८
२ धर्म्मरत्नसमुच्चय—जिसमें पंचप्रति क्रमणसूत्र विधि समेत, थुई चैत्य वंदन, बडे स्तवन, सिज्झाय, छोटे स्तवन, पूजा सर्व तपस्या विधि, श्रावकके नित्य कर्तव्य इत्यादिक अनेक संग्रहों समेत फेर जीव विचार, नवतत्व, दंडक अर्थ समेत छपताहै	५–०